'जायसवाल जागृति'

संरक्षक

स्व० हरिश्चन्द्र जायसवाल, दिल्ली
श्री जवाहर लाल जायसवाल, पूर्व सांसद
श्री अजय कुमार जायसवाल, नयी दिल्ली
श्री पी. जायसवाल, नई दिल्ली
श्री रामप्यारे गुप्त, नई दिल्ली
श्री दयाशंकर जायसवाल, नई दिल्ली
श्री लोटन प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री हरिश्चन्द जायसवाल, बाली नगर, दिल्ली
श्री ओम प्रकाश आर्य, नई दिल्ली
स्व. एस.पी गुप्त, नई दिल्ली
श्री त्रियुगी नारायण गुप्त, नोएडा
श्री जगराम जायसवाल, दिल्ली
श्री रामेश्वर दयाल कर्णवाल, नजीबाबाद
श्री भोला प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री पन्नालाल जायसवाल, अहमदाबाद
श्री सुधीर कुमार 'मनहर' जायसवाल, दिल्ली
श्री जयनारायण चौकसे, श्यामला हिल्स, भोपाल
स्व. बी.डी. दखने, उद्योगपति, नागपुर
श्री आनन्द कुमार भमोरे, अमरावती (महाराष्ट्र)
श्री सत्यनारायण जायसवाल (सरपंच), नवाबगंज
श्री छोटेलाल गुप्त जायसवाल, दिल्ली
श्री शंकरलाल जायसवाल, दिल्ली
डा. सत्यप्रकाश जायसवाल, दिल्ली
श्री विजय वालिया, फरीदाबाद
स्व. कुंदनलाल जायसवाल, गोरखपुर
श्री ललित जायसवाल, गाजियाबाद
श्री प्रकाश चौधरी, बड़ी सादड़ी, (चित्तोड़गढ़)
श्री राधेश्याम जायसवाल, गाजियाबाद
स्व. गोवर्धनलाल जायसवाल, शामगढ़ (म.प्र.)
श्री रमेश जायसवाल, दिल्ली
श्री मेघराज प्रसाद, दिल्ली
श्री माखन चौधरी, (नोएडा)
श्री सुरेन्द्र कुमार किशनलाल जायसवाल (नांदेड़)
श्री संजीव कुमार चौधरी, दिल्ली
श्री स्वामीनाथ जायसवाल (छत्तीसगढ़)
श्री राजीव कुमार जायसवाल (कटिहार, बिहार)
श्री बद्रीप्रसाद जायसवाल, (गोरखपुर)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (गुड़गांव)
श्री प्रदीप कुमार जायसवाल (द्वारिका, दिल्ली)
श्री मुकेश रंजन जायसवाल (साहिबाबाद)
श्री किशोर जायसवाल (दिल्ली)

(शेष पृष्ठ 4 पर)

मूल्य 5 रु० प्रति

'जायसवाल जागृति'

(अखिल भारतीय संस्था के रूप में पंजीकृत सामाजिक संस्था 'जायसवाल जागृति', का सर्वाधिक लोकप्रिय त्रैमासिक मुख-पत्र)

वर्ष : 28 जुलाई-दिसम्बर, 2021 **अंक: 3-4**

अनुक्रमणिका

1. प्रार्थना मनुष्य को ईश्वरीय आनंद का अहसास कराती है -पन्नालाल जायसवाल 4-5
2. जन्मदिन की शुभकामना 5
3. श्री वाल्मीकि चौधरी 6
4. नेताओं में आस्था, साधक का जीवन-कृष्ण दास चौधरी 9
5. सबसे बड़ा सवाल संत हरिहर दास 10
6. नकारात्मक परिस्थिति में सकारात्मक अभिवृत्ति बीना जायसवाल 11-12
7. गौरक्षक भगवान श्री कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन पं. राधेश्याम जायसवाल वैध जी 13-14
8. बलभद्र जन्मोत्सव कमलेश के कलवार 14-16
9. श्री कार्तवीर्यार्जुन का चालीसा पाठ, पूजन-विधान 17-20
10. हिन्दी भक्तः रायबहादुर डॉ. हीरालाल इंस्पेक्टर की भविष्यवाणी ओम् मालवीय 21-22
11. समय का महत्व संतोष कुमार जायसवाल 23-24
12. स्वजातीय समाचार जायसवाल जागृति की बैठक सम्पन्न मीनू गुप्ता जायसवाल 25
13. देश की गौरवशाली बेटियाँ आदित्य वर्धनम 25-26
14. अर्चना जायसवाल बनी दूसरी बार प्रदेशाध्यक्ष किशोर राय 26-27
15. समाज शिरोमणी श्री राजारामजी कलचुरी समाज का शत् शत् नमन ''श्रद्धांजलि'' अर्चना जायसवाल 27
16. My Grandppa Soumya Jaiswal 28
17. दक्षिण भारत की यात्रा सत्यदेव 29-30
18. मणिकर्णिका का क्रांतिपथ प्रकाश मालवीय 31-33
19. श्री सहस्त्रबाहु कलचुरि महासभा (कलार समाज) भोपाल प्रकाश मालवीय 33
20. हिंदुओं जानो अपने धर्म और संस्कृति के बारे में 34-35
21. जुकाम और खांसी, रोग नहीं रोग का लक्षण आचार्य कृष्ण देव 37
22. चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा 38-40
23. कुर्यात् सदा मंगलम् (वैवाहिकी) 41-49
24. (1) व्यवस्था मंडल (2) महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ 50

टाइपसेटिंग : शुभम् ग्राफिक्स : 9811021617
Email : shubhamprabhas@gmail.com

सम्पादक-मंडल

मार्गदर्शन : पन्नालाल जायसवाल (M 8882828808)
सम्पादक : कैलाश नाथ गुप्त (M 8882019312)
कार्यकारी संपादकः मीनू गुप्ता जायसवाल (M 9891232016)
सम्पादक मण्डलः नर्वदेश्वर जायसवाल, डा. राधेश्याम बन्धु, आदित्य वर्धनम

रजिस्टर्ड कार्यालय
19-C, MIG, DDA FLATS, GULABI BAGH
NEW DELHI-110009 (M 9891232016)

पत्रिका में प्रकाशित किसी लेख/रचना का उत्तरदायित्व स्वयं लेखक/रचनाकार का है, सम्पादक-मंडल अथवा प्रकाशक का नहीं।

डॉ. अरुण कुमार गुप्ता (बंगलौर)
NRI श्रीमती आभा गुप्ता एवं श्री नितिन जी (अमेरिका)
श्री अशोक चौधरी, संचालक, जनकल्याण एवं President, INTUC
श्री विश्वमोहन प्रसाद (GM, NTPC, नोएडा)
श्री मदन भाई जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री संजय जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री कमल नारायण - सरलादेवी जायसवाल (इंदौर)
Dr. A.K. Jaiswal (AIIMS, Delhi)
श्री दीपक जायसवाल (नागपुर-महाराष्ट्र)
श्री हुकुमचंद गिरधारीलाल जायसवाल (इंदौर)
श्री ब्रजेश कुमार (एडवोकेट, दिल्ली)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (वरिष्ठ एडवोकेट, पटना)
श्री राजीव रंजन राजेश (एडवोकेट, दिल्ली)
श्रीमती सरला गुप्ता अ.भा.जा. सर्व. महिला अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता (अध्यक्ष, नेपाल कलवार कल्याण महासंघ)
श्री सुरेश प्रसाद चौधरी (गाजियाबाद)
श्रीमती सुनीता अखिलेश सुवालका (उदयपुर)
श्री नवीन प्रकाश जायसवाल (अलवर)
श्री सुनील कुमार जायसवाल (सांवेर रोड, इन्दौर)
श्री राकेश रमन जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजय कुमार जायसवाल (इलाहाबाद)
डा. एन. शिवासुबहनण्यन (तमिलनाडु)
श्रीमती रीता जायसवाल (वाराणसी)
न्यायाधीश डॉ. संतोष कुमार जायसवाल (मुंबई)
डॉ. अनिल कुमार जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजयपाल सिंह भहलूवालिया (सफीदों-हरियाणा)
श्री राजकुमार गुप्त (लखनऊ)
श्री मोहन सिंह अहलूवालिया (ग्वाला गद्दी, खेड़ी, रायपुररानी, पंचकुला)
श्री रमेश कुमार अहलूवालिया (रिवजराबाद, यमुनानगर, हरियाणा)
श्री अमृत गुप्ता पुत्र श्रीमती मंजू गुप्ता (दिल्ली)
श्री सत्य देव गुप्त,(जायसवाल) पटना

अधिष्ठाता

श्री मोतीलाल जायसवाल, नई दिल्ली
श्री विक्रमजीत सिंह, अहलूवालिया, नई दिल्ली
सरदार अजीत सिंह, अहलूवालिया
स्व. रमाकांत जायसवाल, मुम्बई
स्व.हंसराज जायसवाल, दिल्ली
श्रीमती कविता जायसवाल, नोएडा
श्री गुलाब सिंह एवं श्री अरुण कुमार जायसवाल, दिल्ली
श्री शिवनाथ गुप्ता, दिल्ली
श्री दीपनारायण जायसवाल, लखनऊ
स्व. जवाहर लाल जायसवाल, नई दिल्ली
(स्वामी हरिहरानंद) **श्री हरिश्चंद्र धनेटवाल**

संपादकीय

प्रार्थना मनुष्य को ईश्वरीय आनंद का अहसास कराती है

पिछले दिनों अंतरराष्ट्रीय पत्रिका 'साइंस एडवांसेज' की एक रिसर्च रिपोर्ट में यह निष्कर्ष निकल कर आया कि जो लोग आस्तिक होते हैं, प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं, वे अपनी तकलीफों से बेहतर ढंग से निपटने में समर्थ होते हैं। कोविड महामारी के दौरान अमेरिका व इंग्लैंड के अस्पतालों में बड़े पैमाने पर हुए सर्वेक्षण से पता चला कि आस्तिक मुसीबतों का धैर्यपूर्वक सामना करते हैं और जल्दी उससे उबर भी जाते हैं। आस्था उनकी इच्छाशक्ति को मजबूती देती है। निष्ठापूर्वक की गई प्रार्थना से आत्मविश्वास जागता है। इससे मन में छाई निराशा दूर होती है। जीवन में आए व्यवधान हटने लगते हैं। मशहूर मनोविश्लेषक नॉर्मन विंसेंट पील कहते हैं, 'रचनात्मक प्रार्थना हमें ऐसी अंतर्दृष्टि देती है, जिसके सकारात्मक परिणाम न सिर्फ हमारी बैलेंस शीट पर दिखते हैं बल्कि हम में आत्मविश्वास और आत्मबल की नई भावना भी जगाते हैं।'

सच पूछिए तो प्रार्थना की नहीं जाती। जब व्यक्ति सत्वबुद्धि में स्थितप्रज्ञ होते हुए सांसारिक इच्छाओं के प्रति अनासक्त होकर और परमपुरुष का निमित्त मात्र बनकर कर्म करता है, तब प्रार्थना अपने आप घटित होती है। जब व्यक्ति मन, बुद्धि और कर्ता भाव से ऊपर उठकर अपने आप को बिल्कुल निढाल छोड़ देता है और समग्रतापूर्वक अपने को देखने लगता है तो उसका संपूर्ण अस्तित्व शांत होकर सत्य की अनुभूति में उतरने लगता है। इस स्थिति में उसका द्वैत भाव विलीन हो जाता है और शेष रह जाता है केवल ईश्वरीय आनंद।

प्रार्थना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तथा आरोग्य हासिल करने की सर्वोच्च प्रक्रिया है। जीवन को प्रखर

व ऊर्जावान बनाने के लिए नियमित प्रार्थना जरूरी है। मनोविश्लेषक नॉर्मन विंसेंट पील कहते हैं कि **प्रार्थना न केवल अवसाद और उससे जुड़ी अन्य बीमारियों से छुटकारा दिलाती है बल्कि असाध्य समझी जाने वाली शारीरिक बीमारियों का निदान भी इसकी शक्ति से संभव है।** कोविड के दौरान अमेरिका में किए गए वैज्ञानिक परीक्षण बताते हैं कि प्रसन्नता और प्रार्थना का नजदीकी रिश्ता है। नास्तिकता का बुद्धिमत्ता से नजदीक का रिश्ता बताया जाता है। लेकिन कहते हैं कि नास्तिक लोगों के खुश रहने और रोगों से जूझने की क्षमता कमजोर होती है, क्योंकि उनका नजरिया केवल तर्क-वितर्क तक सीमित रहता है।

दरअसल, शब्द जब सेवा, समर्पण, श्रद्धा और आस्था से लबरेज होकर विराट परमेश्वर से सहायता के प्रयोजन से ब्रह्मांड में गुजायमान हो उठता हे, तो वह प्रार्थना बन जाता है। प्रार्थना आत्मा का परिधान है, प्रार्थना विश्वास का विधान है। प्रार्थना प्रेम का प्रवाह है, प्रार्थना अध्यात्म का निर्वाह है। प्रार्थना ऐसी भावयुक्त प्रेरक शक्ति है, जो व्यक्ति को जिंदगी की तकलीफों से जूझने का साहस और संबल देती है। प्रार्थना अनन्य भावना से युक्त होकर भावपूर्ण हृदय से निकली ऐसी करुण पुकार है, जिसका याचक के अवचेतन मस्तिष्क पर उपचारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रार्थना वह ईश्वरीय शक्ति है जो समस्त मानसिक संतापों और काया-क्लेशों से सुरक्षा कवच प्रदान करती है। दैनिक प्रार्थना से व्यक्ति का दृष्टिकोण रचनात्मक तो रहता ही है, उसका मन शांत और अंत:करण भी निर्मल रहता है। तन-मन में स्फूर्ति, उमंग और उत्साह की अनुभूति होती है। जिसका प्रार्थना की शक्ति में विश्वास नहीं है वह अनजाने ही शक्ति को एक सुलभ स्रोत से वंचित हो जाता है। प्रार्थना से सतत अभ्यास से व्यक्ति की चेतना का हर दिशा में विस्तार होता है। प्रार्थना व्यक्तित्व को रूपांतरित करने की औषधि है।

जन्मदिन की शुभकामना

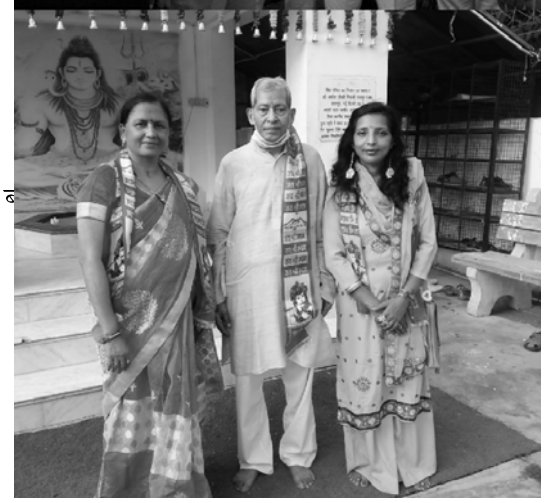

स्वजातियों की आन-बान-शान, विरादरी के सिरमौर, सामाजिक चिंतक, मृदुभाषी, मिलनसार एवं आदर्श व्यक्तित्व, हर दिल अजीज, संस्थापक, संरक्षक- महामना मालवीय मिशन, दिल्ली एवं मार्गदर्शक, संरक्षक - जायसवाल जागृति, दिल्ली परम आदरणीय श्री पन्नालाल जायसवाल जी के 97वी. जन्मदिन पर ढेरों बधाइयाँ और अनंत शुभकामानाएँ!!

हम ईश्वर से आप जैसे तपरूपूत मनीषी एवं समर्पित समाजसेवी के सुदीर्घ स्वस्थ जीवन और कामयाबी की कामना करते है।

हमें उम्मीद है कि आपका जीवन खुशियों के साए में बीते और आप उन्नति के रास्तों में आगे बढ़ते चले जाएँ!!

श्री वाल्मीकि चौधरी

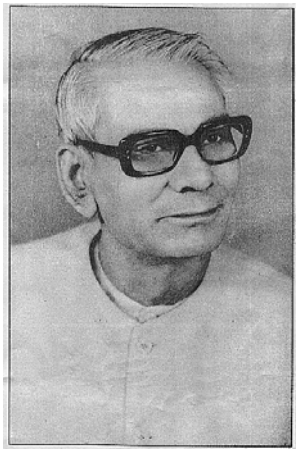

श्री चौधरी का जन्म 26 जुलाई, 1921 को गोगड़ी, जमालपुर (बिहार) में हुआ। आपका प्रारम्भिक जीवन राष्ट्र के स्वतंत्रता संग्राम में बीता। अपनी अल्प आयु में ही आप भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से अत्यधिक प्रभावित हुए। आपने बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन के केन्द्र बिहार विद्यापीठ, सदाकल आश्रम, पटना में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की और बाद में उच्चतर अध्ययन के लिए काशी विद्यापीठ, वाराणसी में प्रवेश लिया। आप डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के सम्पर्क में आए और उनसे प्रभावित होकर राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हुए तथा 1942 के ''भारत छोड़ो'' आंदोलन के दौरान अपने परामर्शदाता के साथ जेल गए।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के स्टाफ के सदस्य तथा बाद में उनके निजी सचिव के रूप में श्री चौधरी उन दिनों होने वाली विक्षुब्ध राजनैतिक घटनाओं के बदलते दृश्य के साक्षी हैं। श्री चौधरी ने अपनी कई पुस्तकों में उन सभी घटनाओं और क्रियाकलापों का एक जीता जागता चित्र राष्ट्र को प्रस्तुत किया है। आपने अपनी लेखनी से देश के लोगों को उस महत्वपूर्ण जमाने से संबंधित डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के पत्राचार को उपलब्ध कराया है। श्री चौधरी को एक दर्जन पुस्तकें लिखने का श्रेय प्राप्त है जिनमें ''डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, कारेसपान्डेन्स एण्ड सिलेक्ट डाक्यूमेन्ट्स'' (11 जिल्दों में) और ''प्रेजीडेन्ट एण्ड इंडियन कॉन्स्ट्रटयूशन'' सम्मिलित हैं। आपकी पुस्तकों से पता चलता है कि आपको साविधानिक मामलों की कितनी शानदार पकड़ व समझ है और राजनीति का कितना ज्ञान है।

1967-70 के दौरान संसद सदस्य के रूप में श्री चौधरी कई सलाहकार निकायों और परामर्शदात्री समितियों से संबद्ध रहे हैं। खादी और ग्राम उद्योग आयोग के सदस्य के रूप में आपने खादी और ग्राम उद्योगों के उन्नयन तथा विकास के लिए काफी योगदान दिया है। आप बहुत से स्वैच्छिक सामाजिक संगठनों से भी संबद्ध रहे हैं। आप बालकनजी-बाड़ी, पटना के प्रधान, ''राजेन्द्र ग्रन्थावली'' ट्रस्ट के सचिव और आदिमजाति सेवा मंडल आदि के सदस्य रहे हैं।

श्री वाल्मीकि चौधरी एक मंजे हुए लेखक और प्रसिद्ध विद्वान हैं। आपने अपनी लेखनी के जरिए भारतीय इतिहास में मूल्यवान योगदान दिया है।

श्री वाल्मीकि चौधरी ने पिछड़े वर्गो के उत्थान के साथ ही स्वजाति कार्यो में रूचि ली। वह अखिल भारतीय हैह्य क्षत्रिय महासभा तथा अ.भा. जायसवाल समाज में भी उच्च पदों पर रहे। जायसवाल जागृति के तो वह कर्णधार थे- संस्थापक, अध्यक्ष, मार्गदर्शक सभी कुछ। संस्था का नाम 'जागृति' भी उन्होंने ही दिया था। उन्होंने उसके अखिल भारतीय स्वरूप का स्वप्न देखा था। वह चाहते थे 'जागृति' संस्था न बनकर कांग्रेस के समान ही स्वजाति के जागरण के लिए आंदोलन का काम करे। जाति को जागाये। उसके सभी वर्गो को एक करें। विभिन्न स्वजातिय संगठन को मिलाये। उनमें तालमेल बैठाये-समन्वय स्थापित करें, उन्हें रचनात्मक कार्यो में प्रवृत्त करें। इस आशय के कई आलेख भी उन्होंने 'जागृति' में लिखें।

सन् 1988 में उन्हें राष्ट्रपति भवन में पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 29 मार्च 1996 को वह इस संसार से विदा हो गये।

श्री वाल्मीकि चौधरी

डॉ. शंकर दयाल शर्मा

तत्कालीन महामंत्री, अ.भा. कांग्रेस समेटी एवं
तत्कालीन राष्ट्रपति, भारत

विख्यात लेखक पत्रकार संत निहाल सिंह ने श्री वाल्मीकि चौधरी के सम्बन्ध में लिखा था।

"यह वही व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपना सर्वस्व निछावर कर देश एवं राजेन्द्र बाबू की सेवा की है। यह वही व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपना अध्ययन आचार्य बद्रीनाथ वर्मा की छत्र-छाया में रहकर पूरा किया। रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा अनुग्रह नारायण सिंह से प्राप्त की और वहीं से राजेन्द्र बाबू के प्रियपात्र बने, उनके प्रेम पर विजय प्राप्त कर, उनके विश्वास-भाजन बन गये। नतीजा यह हुआ कि राजेन्द्र बाबू जहाँ-जहाँ गये, जिस-जिस काम में लगे, यह सब जगह गये और सब कामों में उनका हाथ बटाते रहे। राजेन्द्र बाबू के देशव्यापी दौरों में भी यह साथ रहे और उनके कामों को गहराई से देखते हुए, सब काम में योगदान देते रहे। राजेन्द्र बाबू के साथ उनका ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, कि जब वह जेल गये, तो जेल-जीवन में भी उनके साथ रहे, जिस तरह देह के साथ छाया।"

अपनी बाल्यवस्था में, ग्यारह वर्ष के बालक के रूप में, पुलिस के कब्जे से सदाकत आश्रम को मुक्त कराने के लिए संघर्षरत स्व्यंसेवकों के जत्थे में जब बालक वाल्मीकि आया था, तो किसी ने कल्पना भी नहीं की थी, कि एक दिन यही बालक, सदाकत आश्रम के प्राण, देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद का सहायक और विश्वासपात्र बनकर अपनी कार्यकुशलता और उत्सर्ग भावना से देश का एक प्रमुख व्यक्ति होगा।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति के निजी सचिव और सहायक के रूप में राष्ट्रपति भवन के निवास-काल में संसार के महापुरुषों के सम्पर्क में ये आये और अपनी व्यवहार-पटुता से इन्होंने किसका मन नहीं जीता?

जिस रूप में वाल्मीकि चौधरी का संबंध राजेन्द्र बाबू के साथ रहा उसके सम्बन्ध में श्री जयप्रकाश नारायण ने एक जगह लिखा है कि "श्री वाल्मीकि चौधरी बाबूजी के साथ वर्षों रह चुके हैं। राष्ट्रपति भवन और उसके बाहर भी। राजेन्द्र बाबू के व्यक्तित्व को निकट से देखने का जैसा सुअवसर इन्हें प्राप्त हुआ है, वैसा हजार या लाख में ही नहीं, करोड़ों में किसी एक को मिल सकता है। यह सौभाग्य की बात है कि वाल्मीकि जी ने इस स्वर्ण अवसर का समुचित सदुपयोग किया है। वाल्मीकि जी ने निःसन्देह देश की बड़ी सेवा की है।"

एक ऐसे महापुरुष की सेवा और सत्संग में इनके जीवन के बीस साल गुजर चुके हैं कि इनमें सम्पूर्ण स्वभाव में उस महापुरुष की छाया देखने को मिल जाती है। पू. राजेन्द्र बाबू के साथ बीस बरसों तक ऐसे समय के साथ रहे, जब इन्हें भारत की राजनीतिक करवटों और उनकी अन्तर्धाराओं को अत्यन्त निकट से देखने का मौका मिला।

जिन्होंने राजेन्द्र बाबू को खूब निकट से देखा है, उनका अनुकरण किया है, उनकी वाणी एवं उनके कार्यकलाप को समझा है, परखा है और अपने जीवन में उस आदर्श को ढालने की कोशिश की है, उसमें वाल्मीकि चौधरी का स्थान प्रमुख है। इनके जीवन की सफलताओं का यही कारण है।

बाल सत्याग्रही

बाल-काल में श्री वाल्मीकि चौधरी राष्ट्रीय आन्दोलन और जन-क्रान्ति में बराबर भाग लेते रहे। वे प्राइमरी स्कूल में ही पढ़ रहे थे, जब देश की पुकार उनको कानों में पड़ी और वे भावी बाधाओं और विपत्तियों का ध्यान न कर सत्याग्रह-आन्दोलन में सम्मिलित हो गये। ११ साल के बालक वाल्मीकि चौधरी राष्ट्रीय मुंगेर सत्याग्रहियों के जत्थे के साथ सदाकत आश्रम पर झंडा फहराने आये और गिरफ्तार कर लिये गये। पुलिस ने कितनी ही ताड़ना क्यों न दी, वे अपने व्रत से विचलित न हुए बालक होते हुए भी।

मेरे प्रिय छात्र

श्री वाल्मीकि चौधरी काशी विद्यापीठ में मेरे बहुत ही प्रिय विद्यार्थी थे। इनमें उसी समय मुझे प्रतिभा के अंकुर दिखाई दिए थे और मैं समझता था कि एक दिन ये विद्यापीठ की उत्कृष्ट प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाले विद्यार्थियों की पंक्ति में स्थान पायेंगे।

मेरी यह धारणा तब और पक्की हो गयी जब डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने वाल्मीकि जी को अपने साथ काम करने के लिए बुलाया और श्री प्रकाश जी को पटना से फोन किया कि वे वाल्मीकि चौधरी को वर्धा जाने के लिए कल सवेरे बनारस स्टेशन पर ५ बजे अपर इंडिया एक्सप्रेस से मिलें। इलाहाबाद का टिकट ले लें- राजेन्द्र बाबू उसी गाड़ी से पटना से रवाना हो रहे हैं। यह बता सन् १९४२ की है।

वाल्मीकि जी बिहार विद्यापीठ सदाकत आश्रम से पढ़कर काशी विद्यापीठ आये थे। वहीं राजेन्द्र बाबू के सम्पर्क में आ चुके थे और वे इनकी योग्यता से इतने प्रभावित हो गये थे कि उन्होंने इनको अपने महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए सहायक के रूप में प्राप्त करना आवश्यक समझा।

वाल्मीकि जी का आजादी की लड़ाई में योगदान सराहनीय है। सन् १९४२ की अगस्त क्रान्ति में जब गिरफ्तार हुए तब इनको भी राजेन्द्र बाबू के साथ बांकीपुर जेल में रखा गया और बराबर उनके साथ जेल में रहे। जले से छुटने के बाद राजेन्द्र बाबू के साथ ही दिल्ली आए और उनके विभिन्न पदों पर रहते उनके निजी सचिव के रूप में काम किया। इस तरह वाल्मीकि का सदाकत आश्रम से लेकर राष्ट्रपति भवन तक रहना उनके लिए गौरव की बात तो है ही- काशी विद्यापीठ का एक विद्यार्थी होने के नाते हम सभी को भी गौरव का अनुभव हुआ है।

आगे चलकर वाल्मीकि जी संसद में आये और इस क्षेत्र में भी सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त की। बिहार से लोकसभा में आये सांसदों में से ये अधिक लोकप्रिय कार्यरत रहे। थोड़े ही दिनों में सारे देश के सांसदों से इनकी घनिष्ठता स्थापित हो गयी।

अपने विद्यार्थियों में मुझे कई ऐसे देशसेवियों को पढ़ाने का गौरव प्राप्त है जिन्होंने स्वातंत्र्य संग्राम में तथा स्वतंत्र भारत के पुनर्निमाण में उच्चतम स्थान प्राप्त किया और कई आज देश का राजनीतिक तथा रचनात्मक नेतृत्व कर रहे हैं। साहित्य रचना एवं पत्रकारिता में भी कई अग्रणी हैं। इनमें वाल्मीकि

जी का स्थान सर्वोपरि है। इन्होंने पिछले दस वर्षों में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के पत्राचार एवं प्रकाशन किया है वह एक अद्भुत कार्य है।

इस तरह कार्य करने वालों में मुझे केवल प्यारेलाल जी का स्मरण होता है, जिन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सम्बन्ध में ऐसे ही कार्य का सम्पादन किया है।

हाल में ही भारत सरकार ने वाल्मीकि जी को "पद्मश्री" अलंकरण से विभूषित किया है, जो कि इनके कृतित्व को देखते हुए एक मूल्यवान सांकेतिक सम्मान की माना जाएगा। वास्तव में भारत सरकार, प्रादेशिक सरकारों एवं साहित्यिक संस्थाओं से इन्हें उच्चतम सम्मान प्राप्त होना चाहिए।

प्रो. राजाराम शास्त्री
पूर्व कुलपति, काशी विद्यापीठ

श्री वाल्मीकि चौधरी के निधन पर दिल्ली में शोक-सभा आयोजित

देशभक्त स्वजाति रत्न श्री वाल्मीकि चौधरी के निधन पर जायसवाल जागृति की ओर से सांसद थी अनन्त राम जायसवाल के ३८ अशोक मार्ग, नयी दिल्ली स्थित निवास पर १४ अप्रैल ९६ को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभी की अध्यक्षता वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री पन्ना लाल जायसवाल ने की।

तत्कालीन महासचिव श्री राजाराम जायसवाल ने उपास्थित सदस्यों को भरे मन से यह हृदय-विदारक समाचार सुनाया कि "जायसवाल जागृति" के संस्थापक अध्यक्ष, श्री वाल्मीकि चौधरी हमारे बीच नहीं रहें। दि. २९ मार्च १९९६ (रामनवमी) के दिन लम्बी बीमारी के बाद दिल्ली के राममनोहर लोहिया अस्पताल में उनका निधन हो गया। उन्होंने बैठक में उपस्थित उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री कृष्ण दास चौधरी से अपने पूज्य पिता के संबंध में दो शब्द कहने का अनुरोध किया।

श्री कृष्ण दास चौधरी ने अपने पिता के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर उनके बताये हुए मार्ग पर चलने तथा बाबू जी को प्रिय लगने वाले कार्यों को जारी रखने का संकल्प लिया। तत्पश्चात श्री पन्ना लाल जायसवाल जी ने विगत ३ वर्षों से उनके अत्यधिक निकट आने और उनका विश्वास पात्र होने के अनुभव को अपने जीवन की अविस्मरणीय घटना बताया। उन्हें लगा जैसे इन ३ वर्षों में वे ३० वर्षों का अनुभव दे गए। उन्होंने देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के पत्रों एवं संस्मरणों को २१ ग्रन्थों में प्रकाशित किया जो हमारी ऐतिहासिक निधी है, उन्होंने इस बात पर दु:ख प्रकट किया कि इतना बड़ा व्यक्तित्व हमारे पास था और हम लोग उसका पूरा लाभ नहीं उठा सके।

आजादी की लड़ाई में कूद पड़ने वाले वह ऐतिहासिक कोटि की विभूति थे। जायसवाल जागृति के आदर्श संविधान का निर्माण उन्हीं चिंतक व दूरदर्शी व्यक्ति के बूते की बात थी। हम उनके चिर-ऋणी रहेंगे।

तदुपरांत श्री राजाराम जायसवाल ने देश के वर्तमान राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा कुछ वर्ष पहले श्री वाल्मीकि चौधरी जी के बारे में लिखे गए लेख को उपस्थित बंधुओं को पढ़कर सुनाया, जिससे बाबू जी का व्यक्तित्व और कृतित्व मानों सबके समक्ष साकार सा हो उठा। (वह लेख इस पत्रिका में अन्यत्र उद्धृत है)।

महासचिव ने इसे संस्था की व्यक्तित्व क्षति बताते हुए कहा कि घुप्प अंधेरे में वे प्रकाश की किरण जैसे थे। सही मार्गदर्शन, चुस्त-दुरूस्त एवं अनुशासन-बद्ध संगठन शक्ति उनके स्वाभाविक और सहज गुण थे। उनके प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए उन्होंने निम्नलिखित शोक-प्रस्ताव रखा, जिसे समस्त उपस्थित बन्धुओं द्वारा उनके सम्मान में दो मिनट का मौन धारण करके अपनी स्वीकृति दी।

शोक-प्रस्ताव

"जायसवाल-जागृति के संस्थापक अध्यक्ष, श्री वाल्मीकि चौधरी के दु:खद निधन का समाचार संस्था के लिए बज्रपात जेसा है। उनके देहावसान से जो स्थान रिक्त हुआ है, उस अभाव की पूर्ति करना सम्भव नहीं है। 'जागृति परिवार' इस वयोबद्ध नेता, मार्गदर्शक एवं बहुमुखी प्रतिमा के धनी के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की चिर शांति की प्रार्थना करता है। साथ ही उनकी सहर्धार्मणी, श्रीमती बिन्दारानी चौधरी एवं पुत्र द्वय श्री कृष्ण दास चौधरी व श्री ललित किशोर चौधरी व पुत्री श्रीमती उर्वशी चौधरी एवं पुत्रवधू श्रीमीत राजश्री चौधरी के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए उनको इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की कामना करता है" उपस्थित स्वजाती बंधुओं ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। तत्पश्चात् बैठक को १० मिनट के लिए स्थगित किया गया।

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गरम् नापुनर्भवम्।
कामये दु:ख तप्तानाम् प्राणिनाम् आर्तिनाशम्।।

न तो मैं राज्य चाहता हूँ न स्वर्ग चाहता हूँ, न मुक्ति चाहता हूँ। मैं यही चाहता हूँ कि दुखी प्राणियों क दु:ख दूर करने के लिए बार-बार जन्म लूँ।

नेताओं में आस्था, साधक का जीवन

मेरे दादाजी (स्व. श्री सुन्दर चौधरी) अपने गांव (गोगरी जमालपुर, मुंगेर) के प्रमुख आर्य समाजी थे। आज से सौ साल पहले हमारे समाजवादी विचारों को आत्मसात करना और फिर रूढ़िवादी समाज के अंधविश्वास के खिलाफ तर्क संगत सुधारवादी के रूप में खड़े होना, उसके प्रसार में निर्भीक कदम बढ़ाना अपने में एक दृढ़ व्यक्तित्व का परिचायक है।

मेरे पूज्य पिता श्री वाल्मीकि चौधरी में कुछ ऐसी बात दिखी जिसके कारण उन्होंने उनको इलाके में गाँधी आश्रम में शिक्षा के लिए भेजना उचित समझा और वहीं से उनके विद्यार्थी जीवन की शुरुआत हुई। स्वाभाविक है कि गाँध ी जी के ऐलान पर जो इस तरह की शिक्षण संस्थाएं देश भर में स्थापित की गयी थी, उनके माध्यम से ऐसे कार्यकर्त्ताओं को तैयार करना था जो गाँधी जी की आजादी की लड़ाई की बागडोर संभालने में उनकी मदद कर सकें। इसी लिए इन शिक्षण संस्थाओं में चरित्र के निर्माण, आत्म निर्भरता का प्रशिक्षण और आदर्शों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षण के दर्मियान ही इलाके में गाँधी जी के आगमन पर और प्रमुख नेताओं के आने पर जो प्रदर्शन और जुलूस निकाले जाते थे उन्हीं में से एक जुलूस में आगे-आगे भाग लेने के कारण एक दिन ९ साल की उम्र में ही बाबू जी को वहाँ की पुलिस पकड़कर ले गयी और जेल में डाल दिया। तीन दिन जेल में रहने के बाद थानेदार ने उनके रिहायी का आदेश दिया और पता चला कि सत्याग्रहियों में नाबालिग और बहुत कम उम्र के होने के कारण उन्हें रिहा किया गया।

आस्था कि शुरूआत शायद इसी समय से हो गयी थी। प्रेरणाओं में आस्था कि वजह से जब वे एक बार इतनी कम उम्र में ही घर से निकले तो जीवन की धारा ही कुछ और बन गयी। गोगरी आश्रम से सदाकत आश्रम पहुँचे और वहाँ अपनी शिक्षा जारी रखी। यहाँ भी उनको लाने वाले उनके गुरु थे उन्होंने उनकी प्रतिभा को पहचान कर उनके लिए यही तय किया था कि अब ये पटना में ही पढ़े। सदाकत आश्रम का जीवन, स्वावलम्बन चरखा कातने की दिनचर्या, पढ़ाई के अलावा ऐसी गतिविधियां थी जिसमें उनका व्यक्ति तप रहा था और उनके अपने व्यवहार और व्यक्तित्व से प्रभावित थे राजेन्द्र बाबू। यहां से आगे की शिक्षा के लिए वे काशी पिद्यापीठ भेजे गये। अध्ययन और लेखक की प्रवृत्ति यहीं उनके चरित्र में आ गयी थी। तभी यह दिन आया जब राजेन्द्र बाबू का संदेश काशी विद्यापीठ के कुलपति के नाम आया जिसमें राजेन्द्र बाबू ने बाबूजी को अपने साथ वर्धा चलने के लिए राँची स्टेशन पर बुलाया था और ये बात १९४० की थी उसी समय बाबूजी पू. राजेन्द्र बाबू के साथ जो जुड़े तो उनके जीवन के आने वाले पच्चीस वर्षों तक उनका साथ रहा।

बात आस्था की हो रही थी। अपने चरित्र के निर्माण दल में गाँधी जी के आदर्शों के प्रति उनकी आस्था का ही नतीजा था वे राजेन्द्र बाबू की नजरों में आये।

मेरे जीवन की एक प्रमुख घटना है जिसका जिक्र यहां करना जरूरी समझता हूँ। मैं जब दो साल का ही था तो बाबूजी मुझको तीस जनवरी मार्ग गाँधी जी के दर्शनों को ले गये। मुझको अच्छी तरह याद है कि जब मुझको ले जाने के लिए तैयार करने की बात माता जी से कह रहे थे तो यही कह रहे थे कि गाँधी जी अवतारी पुरुष हैं, युग पुरुष तो हैं ही। उनके दर्शन मात्र से भी जो संस्कार उपजेंगे जीवन के लिए प्रेरणा स्रोत रहेंगे। मेरे लिए इस घटना का महत्त्व बाहर घूमने जाने से अधिक कम हो सकता होगा। परन्तु बाबूजी के लिए वे एक आस्था की बात थी। उनके लिए उनके पुत्र में अच्छे संस्कार पड़े यही उनकी इच्छा थी और मैं इसका हमेशा ध्यान रखूँगा।

-कृष्ण दास चौधरी

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे, न दैन्य न पलायनम्।

अर्जुन की दो प्रतिज्ञाएं हैं कि न तो वह किसी के सामने दीनता दिखायेगा और न ही पीठ दिखा कर भागेगा।

सबसे बड़ा सवाल

मेरे हिवड़ा में एक हूक सी उठती है कि किणे सुणाऊँ कुण सुणेलो म्हारा मनड़ा री बात। जब किसी साथी के साथ अमृतसर का स्वर्ण मंदिर देखता हूँ और कड़ा प्रसाद या लंगर देखता हूँ या जैन समाज के जगह जगह भव्य महावीर जी के मंदिर देखता हूँ तो मैं स्तब्ध रह जाता हूँ। हमारा समाज भी सक्षम होगा किन्तु किसी गैर समाज के व्यक्ति के द्वारा चुनौती पूर्ण तीखे जहरीले तीर सम्पूर्ण समाज पर छोड़े जाते हैं तो मेरा हृदय विदीर्ण हो जाता है। जवाब देने का साहस जुटाता हूँ किन्तु जबान लड़खड़ा जाती है। कोई प्रमाणिक जवाब नहीं मिलता है।

सांई बाबा के श्रद्धालुओं की श्रद्धा को सलाम करता हूँ जिन्होंने सांई बाबा को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया जबकि सांई बाबा का किसी भी धार्मिक ग्रन्थ, या पुराणों में जिक्र तक नहीं है। दूसरी तरफ हमारे आराध्य देव की महिमा का भण्डार आदि महाकाव्य वाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवद एवं करीब करीब सभी पुराणों में भरा पड़ा है। यही नहीं दुष्प्रचार की भी पराकाष्टा हुई है। सत्य घटना बताना जरूरी है। हाडल जिला पलवल के एक हमारे सजातीय व्यक्ति ने अपने घर में अपने आराध्य देव सहस्रार्जुन का चित्रपट लगा रखा था तो एक उनके मित्र के मुख से सहसा यह निकल गया कि अरे भाई साहब यह किस राक्षस का चित्र अपने सुन्दर घर में लगा रखा है। आगे क्या हुआ यह मुझे नहीं बताया गया।

विष्णु पुराण सीरियल के बारे में जरूर हमारे समाज ने मुंह तोड़ जवाब देकर उसके प्रसारण को रूकवा दिया। किन्तु अच्छा प्रचार प्रसारण भी तो होना चाहिए।

संत हृदय नवनीत समाना हमारे कोमल हृदय पर कुठारा घात होता रहता है। संत रूप में मैंने यह ठानी है कि जायसवाल जागृति पत्रिका के माध्यम से प्रमाणिक रूप से प्रत्येक ग्रन्थ से हमारे आराध्य देव को धन के देवता के रूप में जन जन के हृदय में बसाऊँगा।

यह बात पक्की है कि इस कलिकाल में धन की आवश्यकता सर्वोपरि है। इस रूप में अन्य समाजों द्वारा भी पूजित होंगे।

आदि शंकराचार्य से कौन बड़ा जगद गुरु होगा। उन्होंने कार्तवीर्य को सूर्य, विष्णु गणेश और दुर्गा के साथ बैठाया है।

आदि शंकराचार्य टीकाकृत मंत्र महोदधि तरंग 17 श्लोक नम्बर 116-117 में कहा गया है।

''दीप प्रियः कार्तवीर्य्या मार्तंडोनाति वल्लभः स्तुति प्रिय महाविष्णुर्गणेशस्तर्पण प्रियः दुर्गार्जन प्रियानूनमभिषेक प्रियः शिवः तस्मोत्तेषां प्रतोषाय विद्ध्यात्तत्तदाहतः'' अर्थात कार्तवीर्यार्जुन को दीपक प्रिय है। सूर्य को नमस्कार प्रिय है, विष्णु को स्तुति प्रिय है। गणेश को तर्पण प्रिय है दुर्गा को पूजा प्रिय है, शिव को अभिषेक प्रिय है। अतः जिसको जो प्रिय है वही कार्य उनको प्रसन्न करने के लिये करना चाहिये।

अब मैं सर्व प्रथम तिलक पुराण श्रीमद्भागवत की महिमा के साथ उसमें हमारे आराध्य देव में वर्णित महिमा प्रस्तुत करता हूँ। हमारा सबसे बड़ा सकल क्या कार्तवीर्य सप्त द्वीपों के सम्राट ही थे या उनमें ईश्वरत्व भी था। राजा महाराजा सम्राट तो बहुत हो गये जैसे श्रीराम के पिताश्री श्री दशरथ जी महाप्रतापी राजा थे किन्तु उनके नाम के कहीं भी मंदिर नहीं है। लेकिन कार्तवीर्य में ईश्वरत्व था इसका जवाब श्रीमद्भागवत देगी जो कि भगवान गोविन्द भक्तों का कार्य पूर्ण कर परमधाम पधारना चाह रहे थे। तो उद्धव जी ने हे गोविन्द ''त्वं तु यास्यसि गोविन्द भक्त कार्य विधाय च'' ''त्वद्वियोगेन ते भक्ताः कथं स्थास्यन्ति भूतले'' आपके वियोग होने पर भक्तजन पृथ्वी पर कैसे रहे सकेंगे। तो भगवान ने सोचा कि ''भक्तावलम्बनार्थाय किं विधेयं मयेति च अर्थात् भक्तों के लिये मुझे क्या व्यवस्था करनी चाहिए। इन्होंने ''स्वकीयं यद्भवेत्तेजस्तच्च भागवतेऽदधात्'' भागवत में अपना सारा तेज समा दिया इसीलिये भागवत को तेनेयं वाङ्मयी मूर्तिः प्रत्यक्षा वर्तते हरेः। यह भगवान की साक्षात् शब्दमयी मूर्ति है। यह वर्णन इसलिये किया है कि जो भागवत भगवान की साक्षात शब्दमयी मूर्ति है वह भी कार्तवीर्य को ईश्वरत्व से पूर्ण मानती है।

श्रीमद्भागवत के नवम स्कन्ध के अध्याय 15 के श्लोक नम्बर 19 को देखते हैं।

योगेश्वरत्वमैश्वर्य गुणा यत्राणिमादयः।
चचाराव्याहतगतिर्त्योकेषु पवनो यथा।
अर्थात

वे यागेश्वर थे। उनमें ऐसा ऐश्वर्य था कि सूक्ष्म से सूक्ष्म, स्थूल से स्थूल रूप धारणा कर लेते थे। अणिमा, गणिमा आदि

अष्ट सिद्धियों उनको प्राप्त थी। वे संसार में बेरोकटोक वायु की तरह विचरा करते थे। जिसके पास अष्ट सिद्धियों हो वही भगवान है उसमें ईश्वरत्व है। शरीर को छोड़ना तो प्रकृति का नियम है जिसे श्रीकृष्ण भगवान ने भी बधिक के बहाने से स्वीकार किया था यानि मृत्यु को बधिक से प्राप्त हुऐ थे।

भागवत में नवम स्कन्ध के अध्याय 15 व 16 में उनके ''श्री तेजोवीर्ययशोबलम्'' का विस्तृत वर्णन है।

अब हम हरिवंश पुराण के 33वें अध्याय में भी हमारे सबसे बड़ा सवाल का उत्तर ढूंढने का प्रयास करते है।

श्लोक नं. 22

''अनष्टद्रव्यता चैव न श्लोको न च विभ्रमः।

प्रभावेण मंहाराज्ञः प्रजा धर्मेण रक्षतः धर्मपूर्वक प्रजा की रक्षा करने वाले महाराज कार्तवीर्य के प्रभाव से किसी का धन नष्ट नहीं होता था। न तो किसी को शोक होता और न कोई भ्रम में पड़ता था।

वे यज्ञों और श्वेतों की रक्षा करते थे और वर्षा काल में मेघ बन जाते थे। देखें श्लोक नं. 24

स एव यसपालोऽभूत क्षेत्रपालः स एव च।

स एव वृस्प्यां पर्जन्यो योगित्वादर्जनोऽ भवत्।।

अपराधी डरते थे क्योंकि जैसा श्लोक नं. 21 में बताया है कि वह सातों द्वीपों में ढाल तलवम् धनुष बाण लिये रथ में बैठे हुए विचरते हुए दिखाई देते थे।

''स हि सप्तसु द्वीपेषु खड्गी चर्मी शरासनी।

रथी द्वीपाननुचरन् योगी संदृश्यते नृमिः।।

हमारे आराध्य देव के प्रति धन के देवता के रूप में जन जन में श्रद्धा एवं विश्वास स्थापित करना तो दूर की बात है पहले तो हमें हमारे समाज के जन साधारण में अटूट श्रद्धा स्थापित करना है। सर्व प्रथम सबसे आसान तरीका यह है कि हमारे समाज के जितने भी सभा भवन, छात्रावास, धर्मशाला, एवं मंदिर हैं उनमें हमारे आराध्य देव कार्तवीर्यार्जुन एवं बलभद्र भगवान की प्रतिमा, विग्रह स्थापित करने चाहिये जैसा कि लखनऊ में हो रहा है।

हमारा सबसे बड़ा सवाल के क्रम में अगले अंक में हम वाल्मीकि रामायण व विष्णु पुराण आदि को देखेंगे।

संत हरिहर दास
श्रीधाम वृदांवन

नकारात्मक परिस्थिति में सकारात्मक अभिवृत्ति

वर्तमान में जब चारों दिशाओं में करोना वायरस अपना कहर बरसा रहा है, एवं लॉकडाऊन से हमारा मन विचलित हो रहा है नकारात्मक विचारो से, तब आइये कुछ सकारात्मक सोचे.....

.....एक अदृश्य वायरस Covid-19 के कारण दुनिया में जिन्दगी बचाने के लिए जंग चल रही है। कभी सोचा न था एक वायरस हमें ऐसा डरायेगा। किन्तु क्या डर से खतरनाक वायरस भी दुनिया में कोई है? तो सर्वप्रथम हमें इस डर से उभरना ही परम आवश्यक है। क्योंकि डरना थकना, हारना, टूटना, बिखरना हमें मंजूर नहीं। हमारा संकल्प इस संकट से भी विराट होगा। हमें अपनी सोच को सकारात्मक रूप देना होगा।

सृष्टि में समय-समय पर परिवर्तन आते ही है, क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत सत्य है। परिवर्तन से डरना और संघर्ष से कतराना मनुष्य की सबसे बड़ी कायरता है। जीवन कभी भी एक सा नहीं रहता, सुख और दुख दोनों ही आते है। जिन्दगी कभी भी किसी की भी आसान नहीं होती। हमारे शास्त्र बताते है कि स्वयं ईश्वर को भी समय-समय पर अनेको कष्टों और संघर्षो का सामना करना पड़ा है। आज ईश्वर ने आपको स्वयं से मिलने का मौका दिया है अतः डर, भय अथवा व्यर्थ की चिन्ताओं को छोड़ इस समय को सुअवसर जान इसका सदुपयोग करें।

जीवन जीने के लिए उसमें उत्साह, उमंग और जोश का समावेश आवश्यक है। हमेशा ऊर्जावान, सकारात्मक सोच व कुछ नया और सार्थक करने की ललक बनी रहनी चाहिए। जीवन में नीरसता न आये इसके लिए आत्म उन्नति करें, आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर हो, और यह आत्मबल, आत्म विश्वास और आत्म निर्भरता से ही संभव है। यह निश्चित भी हो गया है कि 'कोरोना- लम्बे समय तक हमारा हिस्सा बने रहने वाला है, हम हर वक्त तो घरों में कैद नहीं रह सकते, इसके लिए हमें स्वयं को तैयार करना होगा। खुद को मजबूत बनायें, अपने इम्यूनिटी सिस्टम को मजबूत बनायें, हमें अपनी ओर अपने परिवार की जिम्मेदारी स्वयं पर लेनी होगी। कुछ बातें जो शायद आपको सकारात्मकता की ओर अग्रसर कर पायें।

(1) योगमय जीवन- प्राणायाम, मेडीटेशन व योग के माध्यम से इस नकारात्मक स्थिति को सकारात्मक रूप दें। योग से रोग तो मिटेंगे ही, तनाव भी भागेगा व आपको आत्म निर्भर भी बनायेगा मन की स्थिरता, एकाग्रता, दृढ़ता, इच्छा

शक्ति सभी को योग से बल मिलता है। शरीर, मन और आत्मा के बीच तालमेल बैठाता है योग। अत: योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा आवश्यक रूप से बनायें।

(2) अपने शौक जिन्दा रखिये- यह आत्म मंथन का समय है, कुछ समय उन चीजों पर फोकस करें, जिन्हें करने से आपको खुशी मिलती है। नृत्य, गायन, संगीत, चित्रकला, लेखन, फिल्में, T.V., News, कुछ भी। मित्रों से बातचीत, पैराणिक ग्रन्थों का रसा स्वादन, अपने भीतर के chef (शेफ) को जागृत करें अथवा बागवानी कर प्रकृति के नजदीक हों। स्वयं कुछ नया सीखे व बच्चों को भी कुछ नया सीखने को प्रोत्साहित करें।

(3) स्वास्थ्य के प्रति सजगता- स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे। समय-समय पर पौष्टिक आहार, फल, काढ़ा, गरम पानी लेते रहे। मिनिस्टरी ऑफ आयुष द्वारा निर्धारित मानको को दिनचर्या में शामिल कर मानसिक व शारीरिक तौर पर मजबूत बने।

(4) आध्यात्मिक चिंतन- आध्यात्मिक चिंतन में जीवन की दिशा व दशा परिवर्तित करने की अपूर्व क्षमता होती है। इससे परिवार व समाज के चारो ओर एक दिव्य वातावरण का निर्माण होता है। अपने आस-पास शुभ संकल्पों का चक्र बनाये और ईश्वर से रोज सकारात्मक ऊर्जा भरपूर प्रार्थना करें हे ईश्वर मैं, मेरा परिवार, मेरा देश और पूरा विश्व स्वस्थ रहें। हमारी भारतीय संस्कृति सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ और सबसे उन्नत है। और हमें गर्व होना चाहिए कि पूरा विश्व हमारी संस्कृति को सम्मान से देख रहा है।

(5) प्रसन्न रहिये- यदि आप प्रसन्न रहेंगे तो आस-पास का माहौल खुशनुमा हो जायेगा। अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखे, बात-बात पर चिल्लाना, सबके काम में कमियां निकालना बन्द कर पारिवारिक सम्बन्धों को खुशहाल रखने का प्रयास करें, यदि कोई समस्या आती भी है तो उसे सुलझाने का प्रयास करें ना कि एक दूसरे पर दोषारोपण। हो सके तो कोई लक्ष्य निर्धारित करो। यथासंभव दूसरों की मदद करो उन्हें smile कराओ जिसमें आपको अलग ही सुकून मिलेगा। कितनी भी विषय परिस्थितियाँ क्यों ना हो, आपकी एक मधुर मुस्कान से सहज हो सकती है। जिन्दगी आइने की तरह होती है, यह तभी मुस्करायेगी जब आप मुस्कराओगे। अत: जिन्दगी की हर तपिश को मुस्करा कर झेलिये, धूप कितनी भी हो, समुन्द्र सूखा नहीं करते।

(6) लॉक डाउन का सकारात्मक रूप देखिये- अनर्थ में भी कोई ना कोई अर्थ अवश्य होता है। इस लॉक डाउन के समय में आपसी प्रेम, सद्भाव व साहचर्य की भावना का विकास हुआ है। घर में एक साथ प्रेम सौहार्द के वातावरण में सबने साथ रहना सीखा है जिससे रिश्ते मजबूत हो रहे है। बेटा माँ बाप के पास बैठकर बात कर रहा है, बच्चे अपने माँ बाप के साथ खेल रहे है, वे अपना काम स्वयं करना सीख रहे है पति पत्नी मिलजुलकर काम कर रहे है। सादा जीवन, घर का खाना, दो जोड़ी कपड़े, बस इतना ही काफी लग रहा है। सब साथ है उसी से सबके मन में शान्ति व सन्तोष है। भाग दौड़ की जिन्दगी से राहत मिली है, शायद प्रकृति यही सिखाना चाहती थी- 'क्यों भाग रहे है? किसके लिए भाग रहे हो? तुम्हारी जरूरते बहुत सीमित है, उन्हीं में तुम्हारी खुशियां बसती है।'

''जिन्दगी कल तेरी रफ्तार की मिसाले थी,
आज तेरी खामोशी के चर्चे है।''

सड़के खाली हो गई है, पेड़-पौधे हवा में झूम रहे है, नदियों का जल स्वच्छ व निर्मल हो गया है, कोई बीमार नहीं पड़ रहा, लोग नॉनवेज खाना छोड़ रहे है, शराब, पान मसाला, गुटका थूकना आदि सार्वजनिक रूप से बन्द हो गये है, ऐसा लग रहा है कलयुग में सतयुग आ गया है। और मुझे तो व्यक्तिगत तौर पर यह प्रतीत हो रहा है कि इस समय में हमने चारो युग जी लिये है। समस्त युगों की पौराणिक कथाओं का प्रसारण देख मन अभिभूत हो गया। लॉक डाउन में अनजाने में सीखी इन अच्छी आदतों और अनुभवों को जीवन का अंग बना लीजिये फिर ये अवसर मिले न मिले।

लॉकडाउन से परेशानियाँ है, जो अपरिहार्य है। किन्तु ये वक्त भी गुजर जायेगा, क्योंकि वक्त की एक आदत बहुत अच्छी है जैसा भी हो गुजर जाता है। किन्तु-

हम ना बदलेंगे, वक्त की रफ्तार के साथ,
हम जब भी मिलेंगे, अंदाज पुराना होगा।

इस वक्त हमें नई संकल्प शक्ति के साथ आगे बढ़ना है, हम मास्क पहनेंगे, 2 गज की दूरी बनायेंगे, साबुन से बार-बार हाथ धोयेंगे, भीड़-भाड़ वाली जगह पर नहीं जायेंगे, अपनी अपने परिवार की जिम्मेदारी बखूबी निभायेंगे।

अन्त में हम सैल्यूट करते है, उन सभी को जो हमारे लिए अपनी जान जोखिम में डाल तैनात है अपनी-अपनी डयूटी पर- डॉक्टर्स, स्वास्थ्य कर्मी, पुलिस प्रशासन, मीडिया कर्मी, सफाई कर्मचारी इत्यादि।

पुन: इसी अपील के साथ अपनी बात समाप्त करती हूँ सावधानी बरते, सुरक्षित रहे अपना ख्याल रखे, जो भी सावधानियां एवं निर्देश बरतने को कहा जाये उन्हें follow करें।

'जिन्दगी बहुत खूबसूरत है, फिलहाल दूरियों से इसे सजायें।'

बीना जायसवाल
9927088859, 9358426027

गौरक्षक भगवान श्री कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन

!! जय जय श्री सहस्रार्जुन !!

त्रेता युग मे भगवान् श्री सहस्रार्जुन जी ने गौ संवर्धन पर्व की शुरुआत की, जिसे भगवान् श्री कृष्ण जी ने गोवर्धन के रूप पूजा करवाई

बृज क्षेत्र सहित पूरे राष्ट्र मे गोवध ंन की पूजा की जाती है जो कि एक पर्वत है जिसे वृज मण्डल की जनता को इन्द्र के कोप से वचाने के लिए भगवान् श्री कृष्ण जी ने अपनी कनिष्ठा पर उठा लिया उसी के सन्दर्भ मे हम सभी सनातन बन्धु गोवर्धन पूजा करके उस पर्वत का स्मरण करते है और भगवान् श्री कृष्ण जी की कथा कहकर गोवर्धन की परिक्रमा करते है!

भगवान् श्री कृष्ण जी का गोवर्धन पर्वत उठाने का काल तो द्वापर युग मे था परन्तु भगवान् श्री कार्त्तवीर्य सहस्रार्जुन जी ने उससे भी एक युग पूर्व यानि त्रेतायुग मे ही गोवंश की रक्षा तथा संवर्धन करके गोवर्धन पर्व के जनक कहलाये गये हैं ! कालान्तर मे जिसको भुला दिया गया! दीपावली के दूसरे दिन मनाया जाने बाला पर्व गोवर्धन अर्थात् गौ संवर्धन के रूप मे मनाया जाता था! इस दिन **भगवान् श्री कार्त्तवीर्य सहस्रार्जुन जी ने किसानो के हितार्थ गौ माता से आज्ञा लेकर नर बछडे यानि नन्दी को बैल बनाकर खेती मे लगाया! यही से वो बैल के प्रथम अविष्कारक हुए!**

गोवर्धन का पर्व भगबान् श्री सहस्रार्जुन जी के समय से ये पर्व गौ संवर्धन के रूप मे मनाया जाता था! जिसका उद्देश्य गौओ की रक्षा करना तथा गौवंश की वृद्धि करना था ! इस दिन गायो, बैलो को एक सार्वजनिक स्थान पर हैहय हो – हैहय हो.... शब्द चिल्ला ,चिल्ला कर (हांककर) एकत्रित करते थे! एक प्रथा के अनुसार वे भगबान् सहस्रार्जुन जी को गोरक्षा का देवता मानते थे!जो अपभ्रन्श होकर गौरेया देवता हो गया! जिसे बाद मे गौरैया बाबा कहा जाने लगा! मुर्गी के अण्डे की बलि देकर गाय बैलो का गुड, चारा खिलाकर हिंसक पशुओ से उनकी रक्षा के लिये लोग लाठी लेकर मन्त्र पढते हुए परिक्रमा करते थे....

कार्त्तबीर्यार्जुनाम् राजा वाहु सहस्रवान् !

तस्य स्मरण मान्त्रेण गतं नष्टं च् ळभ्यते !!

कार्त्तवीर्यस्य शिष्टानां रक्षकस्य. च् !

कार्त्तवीर्याजुनो धन्वी शुभांशुः हैहयेश्वरः!!

उसके पश्चात हैहय हो– हैहय हो चिल्लाते हुए पशुओ को अपने घरो की ओर दौडाते थे! यही था गोरक्षक , गऊवर्धन, गौ संवर्धन, यानि गोवर्धन पर्व ! जो बाद मे श्री कृष्ण जी के गोवर्धन पर्वत की कथा से जुड गया!

भगबान् श्री कार्त्तवीर्य सहस्रार्जुन जी ने गोरक्षा तथा गौ संवर्धन के लिये वास्तविक कार्य किया हमे गोवर्धन पूजा करते हुए श्री कार्त्तवीर्य सहस्रार्जुन जी की भी पूजा करनी चाहिए तथा गौरक्षा का संकल्प लेकर गौसंवर्धन पूजा का सार्वजनिक आयोजन करे तथा गायो, गौवंश की रक्षा का संकल्प लें तथा पुनः उक्त पर्व को श्री कार्तवीर्य सहस्रार्जुन गौरक्षा संकल्प दिवस के रूप मे मनायें! जय गौमाता जय गोपाल !!

भगवान श्रीसहस्रार्जुन जी अवतारी थे भगवान श्रीसहस्रार्जुन जी ने दस विद्या,अष्ट सिद्धियों से राष्ट्र और धर्म की रक्षा की तथा प्रजा की सेवा करने के लिए प्राप्त की थी। हरिवंश पुराण में कहा है कि सूर्य के समान तेजस्वी रथ द्वारा संपूर्ण पृथ्वी को जीत लिया। विष्णु अवतार महिर्षी दत्तात्रेय के शिष्य परम शक्ति के उपासक

थे। योग सिद्धि के ज्ञाता शूरवीर दानवीर भृगवंशीय ब्राह्मणों के यजमान थे। अग्नि के समान तंत्र शास्त्र के आचार्य ,अंधकार रूपी रात्रि को नष्ट करने वाले पूर्णिमा के चंद्र के समान, निज शक्ति से जगत की रक्षा करने वाले सूक्ष्म से सूक्ष्म स्थूल से स्थूल रूप धारण करने वाले संसार में वायु की तरह हर जगह बेरोकटोक विचरण करते थे। ध्यान योग का साधना करते-करते जब पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पांचों सिद्धियों प्राप्ति योगी की, बिना इच्छा के शरीर नष्ट नहीं होता है। भगवान श्रीसहस्रार्जुन जी राजाओं के भी राजा तथा स्वामी थे। संपूर्ण देवी विपत्तियों का नाश कर प्रजा की रक्षा करते थे। सर्वत्र यश को प्राप्त करने वाले, धर्म की वाणी बोलने वाले और सांसारिक व्यक्तियों का विनाश करने वाले ऐसे महापुरुष श्रीसहस्रार्जुन जी जी थे। मार्कंडेय पुराण के अध्याय17, श्लोक 32 में कहा है कि भगवान श्री राजराजेश्वर श्रीसहस्रार्जुन जी के नाम मात्र उच्चारण से मनुष्य गणों को सभी आपदाओं से मुक्ति मिल जाती है। इस प्रकार प्रजा की रक्षा प्राकृतिक आपदाओं से बचाते हैं। भगवान श्रीसहस्रार्जुन जी स्वयं सुदर्शन चक्र अवतार हैं। सुदर्शन चक्र से विघ्नों का नाश करता है। नारद पुराण में नारद जी कहते हैं कि हजारों यज्ञ, दान, तप, पराक्रम, यश, कीर्ति, विघ्नहर्ता, विद्धता, उदारता आदि गुणों के राजा के रूप में भगवान सहस्त्रार्जुन जी पृथ्वी पर देवों के देव के रूप में विद्यमान है। **अहिंसा वादी, प्रकृति प्रेमी, शुक्र के स्वामी, दशानन विजेता, महामारी राक्षस का विनाश कर, समुद्र मंथन कर कृत्रिम वर्षा कराने वाले,होली,दशहरा ,दीवाली जैसे महा पर्व त्योहारों की शुरुआत की। ऐसे ही हमारे भगवान श्रीसहस्रार्जुन जी देव अवतार बनकर देवभूमि भारत में उदय हुआ ओर आज की कृपा से महामारी का विनाश कर विश्व मानव जगत का कल्याण कर रहे हैं। जय जय श्री प्राणनाथ सहस्रार्जुन !!!**

पं. राधेश्याम जायसवाल वैध जी
मो.न. 9307730024

बलभद्र जन्मोत्सव

आप सभी हैहयवंशी, बलभद्रवंशी कलचुरी राजवंश में उत्पन समस्त कलवार, कलार और कलार बंधुओं को कुलदेवताद्वय श्री बलभद्र सह श्री सहस्त्रार्जुन पूजनोत्स्व की हार्दिक बधाई और आत्मीय शुभकामनाएं देते हुए अंतर्मन से आह्लादित हूँ।

ब्रह्मा को सृष्टि रचियता मानते हुए यदि वंशावली का अवलोकन किया जाये तो ब्रह्मा से भृगु, शुक्र, अत्तरी, चंद्र .... होते हुए बीसवीं पीढ़ी में चक्रवर्ती राजधिराज श्री कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन जी महाराज त्रेता युग में उत्पन हुए और इनके प्रपोत्र के प्रपोत्र श्री बलभद्र जी द्वापरयुग में अवतरित हुए।

श्री विष्णु की सेविका योगमाया ने कंस के कारागृह में बंदी जीवन जीने वाली माता देवकी के सातवें गर्भ को श्री वसुदेव की धर्मपरायणा पत्नी रोहिणी के गर्भ में संकर्षण विधि के द्वारा स्थापित कर दिया। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को रोहिणी नक्षत्र, तुला लग्न में भगवान प्रकट हुए।

बाल्यकाल में अपने अनुज श्री कृष्ण के साथ कई लीला करने वाले बलराम के सहस्त्र नाम हैं पर उनमें नौ नाम प्रसिद्ध है, जो इस प्रकार हैं– 1. संकर्षण, 2. अनंत, 3. बलदेव, 4. हली, 5. शीतिवासा, 6. मूसली, 7. रेवतीरमण, 8. रौहिणेय और 9. बलभद्र

श्री बलभद्र की पूजा केवल कलवार, कलाल और कलारों के द्वारा जन्मोत्सव के रूप में ही नहीं मनाया जाता है अपितु देश के कई भागों में अलग अलग रूप में होती है। मध्य और पश्चिम भारत में मनाया जाने वाला हलषष्ठी का व्रत भी श्री बलभद्र को ही समर्पित है और श्री बलभद्र की तरह बलशाली और श्रेष्ठ आचरणभाषी पुत्र की प्राप्ति के लिए किया जाता है, जिसमे महिलायें जमीन में पैदा होने वाले उस तरह के अनाज का प्रयोग नहीं करती जिसमें हल का प्रयोग होता रहा है, साथ ही गाय के दुग्ध या इससे बने पदार्थ का उपयोग भी नहीं करती हैं।

बलभद्र किसानों के भी देवता हैं और उनके प्रेरक भी। हल और मुसल जैसे कृषकयंत्रों को शस्त्र के रूप में प्रयोग कर कृषक को कुशल योद्धा बना दिया।

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में सम्पूर्ण भारत वर्ष में 500 से भी अधिक स्थानों पर बलभद्र जन्मोत्सव मनाया जाता है साथ ही कनाडा, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया ... जैसे विकसित देशों में भी बलभद्र जन्मोत्स्व की धूम रहती है।

विश्वप्रसिद्ध श्री जगन्नाथ धाम की पुरी रथ यात्रा जिसमें भगवान् श्री बलभद्र अपने अनुज और बहन सुभद्रा के साथ विराजमान रहते हैं। पश्चिम बंगाल का विश्व प्रसिद्ध मायापुर मंदिर के साथ इस्कॉन मंदिर में भी श्री बलभद्र अपने अनुज के साथ वास करते हैं।

ब्रह्मा जी के द्वारा रचित और श्री बलभद्र को समर्पित षोडशाक्षर मंत्र ऊँ कीं कालिंदी भेदनाय संकर्षणाय स्वाहाष का जाप दु:ख, व्याधि और पापों को हरने वाला है।

मेरी जानकारी में यह जाति एकमात्र ऐसी जाति है जो आदि काल से विवाह संबंधों में बान का प्रयोग करती है। **इस बान प्रथा के कारण नजदीकी रिश्तों (वर/ वध ु के पिता के खुद का वंश - मूलबान , वर/ वधु के पिता की दादी का मायका का वंश - ददियाउर , वर/ वधु के पिता के नाना का वंश - ननियाउर, वर/ वधु के माता के मायके का वंश - ससुराल, वर/ वधु के माता के नाना का वंश - सास का नैहर) में शादी नहीं होती है, जिसे आज का विज्ञान भी मान्यता देता है** और आधुनिक विज्ञान में 'MARRIAGE WITHIN BLOOD RELATION AND EFFECT' के शीर्षक से कई शोध पत्र मौजूद हैं, यानि विज्ञान ने जिसे आज माना, वह ज्ञान हमारे पास कई सौ वर्षों पूर्व से ज्ञात है।

श्री बलभद्र से हमारा सम्बन्ध आदिकाल से चला आ रहा है जिसका प्रमाण हमारे रीति- रिवाज और प्रथा में हजारों हजार साल से है। स्वजातीय समाज में आज कि तारीख में भी होने वाले सारे वैवाहिक कार्यक्रम में भगवान् श्री बलभद्र की पूजा कुलदेव के रूप में ही होती आ रही है और इस पूजन के बिना विवाह संपन्न ही नही हो सकते।

महाभारत काल में भगवान् बलभद्र ने जब सुभद्रा का विवाह दुर्योधन से तय कर दिया तो श्री कृष्ण को यह नागवार गुजरा और उन्होंने अपने सखा अर्जुन को समझा कर सुभद्रा का अपहरण करवा लिया। जिस रथ में सुभद्रा को लेकर अर्जुन गए उस रथ को खुद सुभद्रा ही चला रही थी। जब श्री बलभद्र को यह जानकारी हुई तो वे क्रोधित हो गए हुए अर्जुन को दण्डित करने निकल पड़े। तब श्री कृष्ण ने दाऊ को समझाया कि "हमारी बहन अर्जुन से प्रेम करती हैं और वह रथ चला कर अर्जुन का अपहरण कर के ले गई है।अर्जुन अपराधी नहीं हैं तथा वह सुभद्रा के लिए सुपात्र भी है। इस तरह बलभद्र जी को बहुत अनुनय विनय कर के मनाया गया। इसी अनुनयपूर्वक मनाने की विधि को ''मनावन'' बोला जाता है। श्री बलभद्र जी मान गए और विवाह हेतु शुभाशीष दिया । तभी से कलवार जाति में बलभद्र मनावन की परंपरा चली आ रही है इस विधि को मान कर ही आज भी विवाह सम्पन्न होते हैं।

इस रस्म को मानाने के लिए सर्वप्रथम कुम्हार के घर से बलभद्र जी की एक मिट्टी की छोटी प्रतिमा लाई जाती है। इस प्रतिमा को जौ से सजाया जाता है। बाजे गाजे के साथ इस प्रतिमा को घर की महिलाएं ले कर आती हैं इसे "श्री बलभद्र लाना" कहते हैं। वैवाहिक विधि - विधान में हल के पाटे का भी उपयोग किया जाता है, जिसे शिरीष कहते हैं। उपवास रह कर अति शुद्धता और भक्ति के साथ पूजा स्थान पर कुल देवता बलभद्र जी को स्थान दिया जाता है और पूजा की जाती है। छोटे छोटे चुकिया कलश जो ढक्कन के साथ होता है उनके सम्मुख रखा जाता है। इन पात्रों को चना दाल तथा शुद्ध घी से बने मीठी बुंदिया से भरा जाता है और ढक दिया जाता है। एक पात्र में चीनी का शरबत भी भरा जाता है। एक पत्तल में पान का बीड़ा, और दांत सफा करने हेतु खरिक्का रखा जाता है। श्री बलभद्र भगवान जी को भोग लगाने के लिए "कच्ची रसोई" जैसे भात, दाल, बजका, बरी, अदौरी, फुलौरा (एक तरह की खास मिठाई), सब्जी, इत्यादि बनायीं जातीं है, फिर थाली में भोग लगाया जाता है। प्रसाद में अर्पित भोग को उसी थाली में मिला कर अपने वंश के सदस्यों को प्रसाद के रूप में दिया जाता है!

यह पूजा 5 पुरुष जो कि अपने कुल (एक मुलबान) के होते हैं, करतें हैं। ये पांचो व्यक्ति उस थाली को पकड़ कर एक सदस्य प्रश्न करता है और शेष ४ के साथ अन्य उपस्थित समूह उत्तर देता है!

प्रश्न 1 "बलभद्र जी उठलें ?"

उत्तर 1 "हाँ उठलें!"

प्रश्न 2 " बलभद्र जी मुहँ धोवलें?"

उत्तर 2 - " हाँ धोवलें !"

प्रश्न 3 "बलभद्र जी खाना खइलन?"

उत्तर 3 - "हाँ खइलन !"

प्रश्न 4 "बलभद्र जी कुल्ला कइलन?"

उत्तर 4 - सबकोई मिलकर स्वांग करते हुए एक साथ "हाँ कुल्ला कइलन!"

प्रश्न 5 "बलभद्र पान खइलन"

उत्तर 5 सभी पान खाने के स्वांग के साथ देते है "हाँ खइलन!"

इसे सम्पन्न करने के बाद समझा जाता है कि बलभद्र

जी अब मान गए हैं, अतः उनके आशीर्वाद से विवाह निर्विघ्न रूप से संपन्न होगा।

विवाह होने तक श्री बलभद्र जी की प्रतिमा को पूजा घर में रखा जाता है। "चौठारी" (विवाह का चौथा दिन - दूल्हा - दुल्हन के हांथों के मंगल बंधनवार को खोलने तथा मंदिरों में दर्शन वाले दिन) इस प्रतिमा को बड़े ही श्रद्धा, सम्मान और प्यार से नजदीक के नदी में विसर्जित कर दिया जाता है।

यह श्री बलभद्र के वंशज होने का आध्यात्मिक और धार्मिक प्रमाण है।

अब स्वजातीय समाज के सामाजिक और राजनितिक स्थिति पर नजर डालने से पता चलता है की पूरे भारत वर्ष में लगभग 10 करोड़ की आबादी वाला यह समाज आज जाग्रत हो रहा है और राजनितिक भागीदारी की मांग करने लगा है।

भारत वर्ष में जाति प्रथा आदि काल से चली आ रही है। प्रारंभ की वर्ण व्यवस्था आज जातियों व उपजातियो में बिखर चुकी है। दिन प्रतिदिन यह लघु रूपों में बिखरती जा रही है। आज की कलवार, कलाल या कलार जाति जो कभी क्षत्रिय थी, आज कई राज्यों में वैश्यों के रूप में पहचानी जाती है। यह हैहय वंश या कलचुरि वंश की टूटती हुई श्रंखला की कड़ी मात्र है। इसे और टूटने से बचाना है।

वर्ण व्यवस्था वेदों की देन है, तो जातियाँ व उपजातियाँ सामाजिक व्यवस्था की उपज है।

कलवार शब्द की उत्पत्ति का अध्ययन करने पर पता चलता है कि मेदिनी कोष में कल्यपाल/ कल्पपाल शब्द का अर्थ न्यायाधिपति प्रजापति है। कल्यपाल/ कल्पपाल शब्द का अपभ्रंश ही कलवार है।

कल्हण कृत राज तरंगिणी संस्कृत ग्रन्थ में जो काश्मीर के प्राचीन महाराजाओं का इतिहास है, राज्यक्रम का वर्णन करते हुए आचार्य ने करकोटि राज्यवंश के पश्चात कल्पपाल राज्यवंश का वर्णन किया है। कल्पपाल के वंशज अपने आगे वरमन उपाधि का प्रयोग करते हैं। वरमन की उपाधि केवल क्षत्रिय के लिए प्रचलित थी। आज भी कलवार जाति के लोग इस उपाधि का प्रयोग करते हैं। इस उपनाम के लोग बंगाल में बहुतायत में हैं और आज भी खुद को क्षत्रिय ही मानते हैं।

पद्मभूषण डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पुस्तक 'अशोक का फूल' में लिखा हैं कि कलवार हैहय क्षत्रिय थे। सेना के लिए कलेऊ की व्यवस्था करते थे, इसीलिए कालांतर में वैश्य कहलाये। क्षत्रियो के कलेवा में मादक द्रव्य भी होता था, इसी लिए ये मादक द्रव्यों का कारोबार करने लगे और आगे चलकर इस मादक द्रव्य ने कलवार की सामाजिक मर्यादा घटा दी।

श्री नारायण चन्द्र साहा की जाति विषयक खोज से यह सिद्ध होता हैं की कलवार उत्तम क्षत्रिय थे। जब गजनवी ने कन्नौज पर हमला किया तो उसका मुकाबला कालिंदी पार के कलवारों ने किया था, जिसके कारण इन्हें कलिंदिपाल भी बोलने लगे। इसी कलिंदिपाल का अपभ्रंश भी कलवार ही हैं।

संस्कृत व्युत्पत्ति से कलवार शब्द का भी अपना एक स्वत्रन्त्र अर्थ है - यथा कलः सुन्दरः वारयस्य यानी जिनके दिन वाणिज्य व्यवहारादि द्वारा सुखमय रहते हों, वे कलवार कहलाये।

आचार्य क्षितिमोहन सेन शास्त्री ने भारत वर्ष में जाति भेद नामक पुस्तक के पृष्ठ 153 में लिखा है -

'गुरु गोविन्द सिंह के खालसा धर्म में जाति धर्म निर्विशेष सभी सादर स्वीकृत हुए हैं उनमे कलवार यानी मद्य विक्रेता कलाल जाति भी क्रमशः अभिजात हो सकी है।'

हैययवंशी क्षत्रिय कलवार, कलाल व कलार का ज्ञात इतिहास लाखों साल पुराना है। स्वजातीय इतिहास में नर्मदा नदी तट स्थित और राजा हैहय के प्रपौत्र महिष्मान द्वारा बसाया गया महिष्मति नगर (वर्तमान में मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में महेश्वर के नाम से प्रसिद्द है, जो कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन जी महाराज कि राजधानी थी) का विशेष धार्मिक महत्व है। इसी तरह शेषनाग अवतार श्री बलभद्र जी से सम्बंधित गोकुल, मथुरा ...आदि के भी धार्मिक रूप से विशेष महत्व हैं।

आज इस इतिहास को जन-जन तक पहुंचाने की नितांत आवश्यकता है ताकि हमारी वर्तमान और आगामी पीढ़ी इसे सहेज कर और समृद्ध बना सके।

जय कलवार, जय कलाल व जय कलार

''जय सहस्त्रार्जुन, जय बलभद्र''

कमलेश के कलवार
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ऑल इंडिया कलवार कलाल कलार एसोसिएशन
(AIKKKA / आइका)
Mob: 9911287166

अध्याय-एक

श्री कार्तवीर्यार्जुन का चालीसा पाठ, पूजन-विधान

प्रतिवर्ष कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी को इनकी जयंती मनायी जाती है और पूजन किया जाता है।

अनुष्ठान की तैयारी

(1) चालीसा वाचन, पूजन शुक्रवार या रविवार (इस दिन श्री कार्तवीर्य का जन्म हुआ था) किसी भी दिन करना चाहिये।

(2) शुक्रवार या रविवार अर्थात व्रत करने के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत होकर श्री कार्तवीर्य के चित्र अथवा मूर्ति, स्थान शुद्ध कर, स्थापित करें (जहां चालीसा वाचन व पूजन किया जाना है) फिर उसके सामने नमोऽस्तु कार्तवीर्याय का उच्चारण करते हुये घी का दीपक जलाना चाहिये। यह दीपक चालीसा वाचन पूजन के समय रात तक अखण्ड जलना चाहिये।

(3) व्रत के दिन उपवास करें। उपवास का अर्थ निराहार या भूखा रहना नहीं है, बल्कि अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुये उनके समीप बने रहना है। अस्तु अन्न के भोजन को त्यागकर फल दूध चाय का सेवन करते रहें। डायविटीज से पीड़ित साधक को अनावश्यक कोई कष्ट न हो यह ध्यान रखना चाहिये।

किन्हीं विशेष परिस्थिति में यदि अन्न ग्रहण करना आवश्यक हो तो इष्टदेव को अर्पण कर एक बार भोजन ग्रहण कर सकते हैं। प्रमुख विषय व्रत में श्रद्धा का होना है।

(4) चालीसा वाचन, पूजन, हवन का कार्य सूर्यास्त के बाद सम्पन्न होता है। संध्याकाल सर्वोतम समय है।

(5) साधक को नमोऽस्तु कार्तवीर्याय मंत्र का मन में जप करते हुये दिन के सभी कार्य अन्य दिनों की भांति सम्पन्न करना चाहिये।

(6) चालीसा वाचन, पूजन, हवन के बाद भोजन ग्रहण करना चाहिये।

(7) विभिन्न ग्रंथों तथा पुस्तकों में पूजा के अनेक विधान लिखे गये हैं। इनमें मनसा (मन से) पूजन सर्वश्रेष्ठ माना गया है। अतएव शास्त्रीय अशास्त्रीय विधान के चक्कर में न पड़ते हुये श्रद्धा और विश्वास के साथ पवित्र भावना के साथ मनसा पूजन कर चालीसा का आरम्भ करना श्रेष्ठ विधान है।

(8) चालीसा सरल हिन्दी में लिखा गया है जिसे सम्पूर्ण भारत के लोग पढ़ सकते हैं अतः पूजन तथा चालीसा का वाचन स्वयं करें तो अति उत्तम होगा

अनुष्ठान के लिये पूजन सामग्री

(1) श्री कार्तवीर्य की मूर्ति या चित्र
(2) आसन
(3) लाल रंग के फूल और माला
(4) पचरंगा धागा (कलावा)
(5) नारियल
(6) दीपक
(7) दीपक के लिये घी
(8) अक्षत (चावल)
(9) रूई बत्ती
(10) पंचमेवा (किशमिश, चिरौंजी, मखाना, छुहारे एवं बादाम)
(11) शुद्ध जल का तांबे का कलश
(12) कपूर
(13) प्रसाद के लिये मिष्ठान
(14) लाल रंग का वस्त्र
(15) पान का पत्ता
(16) ऋतु फल (सेब, केला आदि)
(17) धूप
(18) लाल चन्दन
(19) हल्दी रोली
(20) अगरबत्ती
(21) हवन के लिये जवा, काले तिल
(22) हवन के लिये चावल की खरीर शक्कर, घी, चावल
(23) लाल झण्डा
(24) हवन के लिये आम, गूलर, वेल या पलान की समिधा
(25) हवन कुण्ड
(26) माचिस
(27) यज्ञोपवीत
(28) शहद
(29) कच्चा दूध

(30) दही
(31) तुलसीदल
(32) सुपारी
(33) हल्दी गाँठ
(34) पूजन के लिये थाली
(35) लकड़ी का पटा
(36) प्रसाद वितरण के लिये दोना, पत्तल आदि अन्य सामग्री आवश्यकतानुसार।

श्रीकार्तवीर्य पूजन में उपचारों के अंग

पूजन 64, 18, 16, 5 उपचारों से की जाती है। यहां पांच उपचारों द्वारा पूजन विधि वर्णित है। पंचोपचार-

(1) गंध (चन्दन, अगर, कर्पूर एक साथ मिलाकर)
(2) पुष्प (5 से अधिक अनेक रंग)
(3) धूप (गुग्गुल का कांस्य पात्र में)
(4) दीप (कपास की बत्ती से कर्पूर आदि मिलाकर बनाई गयी चार अंगुल की लगभग बत्ती) और
(5) नैवेद्य (एक पुरुष के भोजन योग्य वस्तु हो जिसमें चर्व्य, चोष्य, लेहा, पेय अर्थात चबाने वाली, चूसने वाली, चाटने वाली, और पीने वाली इस प्रकार चारो प्रकार की वस्तुएँ हों।)

चालीसा वाचन का अनुष्ठान आरम्भ करना

व्रत (उपवास) के साथ ही दिनभर के घर परिवार के कामकाज से निवृत होकर अनुष्ठानकर्ता साधक को सूर्यास्त के बाद स्नानादि कर के ''श्री कार्तवीर्य'' पूजन, चालीसा वाचन हवन के अनुष्ठान का आरम्भ करना चाहिये।

पूजन के स्थान पर श्री कार्तवीर्यार्जुन के चित्र अथवा मूर्ति को लकड़ी के पटे पर लाल रंग का कपड़ा बिछाकर स्थापित करना चाहिये। मूर्ति या चित्र का मुख पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिये। सभी आवश्यक सामग्री पहले ही एकत्रित कर, पास में रख लेना चाहिये। फिर स्वयं पवित्र आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिये। (यदि पूजा के लिये पुरोहित बुलाया गया हो तो पुरोहित को उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिये) पश्चात नमोऽस्तु कार्तवीर्याय या कार्तवीर्याय नमः मंत्र का उच्चारण करते हुये पूजा के सभी कार्य सम्पन्न करना चाहिये।

आसन-साधक को बांये कंधे पर यज्ञोपवीत या अंगोछा रखकर आसन पर बैठना चाहिये।

पवित्रीकरण-आचमन के लिये तुलसी पत्र और पुष्प मिला जल बाएं हाथ में लेकर दाएं हाथ से ढंकरकर अंजुली बनाकर अपने ऊपर सींचते हुए प्रार्थना करें-हे परमपिता श्री कार्तवीयार्जुन आपका स्मरण करते हुए तन-मन को शुद्ध कर रहा हूँ।

इसके बाद आसन, पूजन सामग्री तथा चित्र पर भी फूल अथवा दूर्वा से जल सिंचन करते हुए प्रार्थन करें- हे विश्व को धारण करने वाली पृथ्वी मेरा आसन शुद्ध करें।

आचमन-आसन को शुद्ध करने के बाद आचमन के लिये अपनी दायी हथेली पर जल लेकर तीन बार आचमनी करें (जल को मुँह से छुआयें) इसके बाद अंगूठे से होंठो हो पोंछकर हाथ धोकर शुद्ध कर लें। कार्तवीर्याय नमः मंत्र का जाप करते रहे।

पश्चात माथे पर तिलक लगावें। यदि साधक लम्बी शिखा (चोटी) रखता हो तो उसे बाँध लेना चाहिये। फिर दायें हाथ की अंगुलियों को गीला करके शिखा स्थान का स्पर्श करें।

प्राणायाम-प्राणायाम करते हुये प्रार्थना करें-हे प्रजा पालक श्री कार्तवीयार्जुन! हम आपके परम तेज पुंज, दुखनाशक स्वरूप को नमस्कार करते हैं। हे कृतवीर्य नंदन हमारी बुद्धि को सत्कार्य में प्रेरित करें।

न्यास-बाएं हाथ की हथेली में जल लेकर, दाहिने हाथ की पांचों अंगुलियों को इकट्ठा कर शरीर के विभिन्न अंगों का नाम लेते हुये जल स्पर्श करना चाहिये।

करन्यास-ऊँ दत्तात्रेयाय त्रिनयनाय हस्तभ्याम नमः।
हृदयादिन्यास-ऊँ दत्तात्रेयाय त्रिनयनाय हृदययाय नमः।
मंत्र हृदयादिन्यास-ऊँ हाँ हृदय नमः।
ऋष्यादिन्यास-ऊँ दत्तात्रेयाय ऋदये नमः शिरसि।
श्री कार्तवीर्यार्जुन देवतायै नमः हृदये फों बीजाय नमः गुह्ये।

दिशान्यास-हाथ में अक्षत लेकर दिशाओं के नाम लेते हुये सभी दिशाओं में अक्षत (चाँवल) छिड़कना चाहिये।

विनियोग-श्री कार्तवीर्य के मूल मंत्र का पाठ करें

ऊँ अस्य श्री कार्तवीर्यार्जुन मंत्रस्य दत्तात्रेये ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री कार्तवीर्यार्जुनो देवता पुं बीज ही शक्तिः क्लं कीलकं ममाभीष्ट सिद्धर्थे जपे विनियोगः।

पृथ्वी पूजन-पृथ्वी का स्मरण करते हुये जल अथवा अक्षत फूल पृथ्वी को अर्पित करें।

कलश पूजन-कलश को आम के पत्तों से सजाकर कलावा बांधकर उस पर दीपक रखें। फिर कलश को जल हल्दी, अक्षत, फूल आदि से पूजन कर उसे प्रज्जवलित करना चाहिये। (अथवा सुब से जल रहे दीपक को

स्थापित करना चाहिये।)

संकल्प-हाथ में अक्षत और जल लेकर अनुष्ठान करने का संकल्प करते हुये उसे सफल बनाने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें।

(**गणेश पूजन**-कथा पूजन आरम्भ करते हुये आगे लिखे मंत्रों का उच्चारण कर देवताओं का मनसा पूजन करें।)

ऊँ गंगणपतये नमः।।

(**गुरू पूजन**-आदि गुरू दत्तात्रेय का ध्यान करते हुये माला मंत्र का पाठ करें)

ऊँ द्रों दत्तात्रेयाय नमः।।

श्री कार्तवीर्य का आव्हान्-श्री कार्तवीर्य का आव्हान इस प्रकार करना चाहिये-प्रकाशों के प्रकाश, सूर्य के समान तेजस्वी, गले में स्वर्ण की माला धारण किये हुये, सिर पर लाल पगड़ी बांधे हुये नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषित, अपने पाँच सौ हाथों में धनुष तथा पाँच सौ हाथों में बाण धारण करने वाले, पृथ्वी के एकमात्र स्वामी, रक्षा करने में सामर्थ्य श्री कार्तवीर्य सभी प्रकार से हमारी रक्षा करें। हे सहस्त्रार्जुन महाराज मेरी पूजा में पधारकर शुभ कार्य को सफलता प्रदान करें और शुभ आसन को ग्रहण करें। (ऐसा कहते हुये चित्र या मूर्ति पर पुष्प और अक्षत अर्पित करें, फिर शुद्ध जल का सिंचन कर पैर पखारें)

श्री कार्तवीर्यार्जुन चालीसा का महात्म्य

जिस तरह ''श्री हनुमान चालीसा'' श्रद्धा भाव से पठन करने वाले भक्तों को फलदायी है, उसी प्रकार भगवान राजराजेश्वर श्री सहस्त्रबाहु कार्तवीर्यार्जुन, (जो श्री विष्णु के चक्रावतार हैं) की चालीसा भी फलदायी, इच्छापूर्ति करने वाली है। क्योंकि श्री कृष्णदास खेमराज द्वारा प्रकाशित वृहद उपासनाध्याय के पृष्ठ 50 पर श्लोक 51 व 52 में पवनपुत्र हनुमान जी व श्री कार्तवीर्यार्जुन में समानता दर्शाते हुये कहा गया है कि- ''जो श्री माहिष्मतीनाथ श्रीकार्तवीर्य व श्री हनुमान जी के बीच भेद मानते हैं वह प्राणी कष्टमय जीवन व्यतीत कर सहस्त्रों पाप के भागी होते हैं।''

इस प्रकार जो व्यक्ति पुण्य बढ़ाने वाले, सभी पापों को नष्ट करने वाले, सभी उपद्रवों को नष्ट करने वाले, सभी प्रकार की शांति प्रदान करने वाले, समस्त विजय तथा अर्थ प्रदान करने वाले, सभी प्रकार की संपति प्रदान करने वाले संतान की वृद्धि करने वाले, सभी प्रकार के सुख देने वाले, मनोरथों को पूर्ण करने वाले, यश कीर्ति और विद्या को अभिवृद्धि करने वाले, दीर्घायु देने वाले, दुःस्वप्नादि समस्त दोष नष्ट करने वाले कल्याणकारी श्री कार्तवीर्य का पूजन करता है और चालीसा पाठ करता है या सुनता है। वह अपनी समस्त कामनाएँ प्राप्त कर लेता है व वह शांति और आनन्द का वरण करता है। उसके धन का कभी नाश नहीं होता है और वह अपार ऐश्वर्य और धन सम्पति का स्वामी होता है। सभी प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाकर सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

श्री कार्तवीर्य-चालीसा

हैहय-कुल-सर-कमल-दल विकसित सुभग पराग।
जग की भव बाधा हरो, प्रभुवर, करि अनुराग।।
विपत-हरण, मंगल-करण, जगन्नाथ जगदीश।
बार-बार विनवो तुम्हें, धर करि पद-रज शीश।।
जय श्री कार्तवीर्य महाराजा।
करत सदा सन्तन के काजा।।
जय सब भांति भक्त हितकारी।
साधु हृदय मुद मंगल कारी।।
जन के काज विलम्ब न कीजै।
दुख करि दूर महा सुख दीजै।
जय सरमा के राज दुलारे।
नृप कृतवीर्य-प्राण के प्यारे।।
अनुसुइया के सुत विद्वाना।
दत्तात्रेयि नाम जग जाना।।
तंत्र मंत्र के अद्भुत स्वामी।
छिति-पाताल गगन के गामी।।
जाके सेवक शुभ गुण सारे।
सोई महर्षि गुरू देव तुम्हारे।।
जो विमाल सुचि हेम बनावा।
सहज विश्वकर्मा पावा।।
ता कँह मुनि हंस तुम कह दीन्हा।
सब प्रकार अधिकारी चीन्हा।।
वाम हाथ मह गदा विराजे।
दायें कर त्रिशूल शुभ साजे।।
गौर वर्ण सुन्दर तन धारी।
शरद चंद तुम पर बलिहारी।।
राजनीति के अद्भुत ज्ञाता।
विज्ञानी-जल-वृष्टि विधाता।
शतशः अश्वमेघ करि डारा।
दलित जनन के बने सहारा।
हरि औतर पाप त्रय हारी।

विष्णु-समान तेज-बल धारी।।
शैव-वैष्णव भाई-भाई।
फूट-कलह तिनके घर छाई।।
निज प्रभाव से ताहि मिटावा।
दै सिख उन मंह मेल करावा।।
कद्रू-सुत करकोटक नामा।
कोऊ न जीत सके संग्रामा।।
ताहि जीत के सोक नसावा।
नाग लाय निज देश बसावा।
सब सुख मिले तुम्हारी शरना।
लोभ, मोह, मद, मत्सर हरना।।
रावण महा-सैन सज आवा।
समरांगण मंह गाल-बजावा।।
करि के युद्ध प्रबल घनघोरा।
तेहि कर गरब निमिष मंह तोरा।।
धरि राखेउ बंदी गृह मांही।
ताहि देख सुरपति हर्षाही।।
मुनि पुलस्त्य विनती जब कीन्हा।
तब तुम अभय-दान तेहि दीन्हा।।
यश गौरव भूमण्डल छावा।
हर घर बाज अनंद बधावा।।
राज्य-क्षेत्र का करि विस्तारा।
हैहय वंश कीन्ह उजियारा।।
जब जय जय प्रभु अंतरयामी।
हरहु ताप-त्रय जग के स्वामी।।
रण वन व्याधि जलधि घर माही।
तुम्हरे बल कोउ डरपत नाहीं।।
अगिन परेत भूत बैताला।
ब्रम्हाराक्षस यक्ष कराला।।
नाम तुम्हार लेत डर जावे।
सब कह सुखद लाभ पहुँचावें।।
जेहि पर कृपा-कोर प्रभु करहीं।
ता कँह काल दूत जम डरहीं।।
सोई कुबेर पदवी कह पावे।
जनम-जनम के पाप नसावे।।
चित वृत्ति मह दृढ़ता लावे।
अंत काल सुरपुर कह जावें।
पूजा-पाठ विनत व्यवहारा।
नहि जानत कुछ दास तुम्हारा।।
तुम दयाल पयनिधि की नाई।
राखो सब की लाज गुसांई।।
कार्तवीर्य नृप सुचि चालीसा।
लिखे 'भुशुंडि' पाय आशीषा।।
जो जन पाठ करे मन लाई।
सुख-सम्पदा तासु घर आई।।

दीन बंधु गुणशील प्रभु कृपा-सिंधु रणधीर। जन अनाथ के नाथ बन, हरहु विषम भवपीर

जो प्राणी नित प्रति पढ़े चालीसा हरि ध्यान। तेहि सुचि छाया करे, हैहयपति भगवान।

श्री कार्तवीर्यार्जुन भगवान की जय

श्री कार्तवीर्यार्जुन का पूजन-विधान

भौतिक जगत में श्री कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन का पूजन, चालीसा पठन एवं हवन के समान कल्याणकारी कोई अन्य अनुष्ठान नहीं है। आस्था और विश्वास के साथ समर्पित भाव से अनुष्ठान करने वाले मनुष्य की सभी कामनाएँ पूरी होती है। उत्साह वर्धन होता है और समृद्धि आती है। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन ही एक मात्र ऐसे देवता है जिनकी सतयुग से अभी तक पूजा अर्चना की जा रही है तथा संसार के लोग उनके अनेकों मंत्रों, तंत्रों और यंत्रों का प्रयोग कर लाभ पा रहे हैं।

प्राचीनकाल में जब आज जैसे मनोरंजन के साधन नहीं है लोग चौंपालों में अपना समय व्यतीत करते थे किन्तु आज के व्यस्ततम् जीवन में लोगों के पास समय नहीं है। अर्थात् आज समय का महत्व बहुत ज्यादा बढ़ गया है। कहते हैं ''समय ही धन'' है इसलिये और भी आवश्यक हो जाता है कि हम ''समय के मानवावतार श्री कार्तवीर्य'' का पूजन अर्चन कर समय की महत्ता को आदर दें।

इस प्रकार श्री कार्तवीर्य के चालीसा पठन, पूजन अनुष्ठान से मनुष्य की सभी समस्याओं का निदान और उसका कल्याण होता है। अस्तु अपना कल्याण चाहने वाले मनुष्यों को जितना शीघ्र ही अज्ञान रूपी अनिद्रा से जागकर अपने कल्याण तथा परिवार की समृद्धि और सुख शांति के लिये श्रद्धा भक्ति के साथ ''श्री कार्तवीर्यार्जुन की चालीसा'' का श्रवण मनन और पठन पाठन अवश्य करना चाहिये, ताकि सुखद, वैभवशाली जीवन हेतु धनवान हों, ऐश्वर्यमान हों। ईश्वर किसी भी भाषा में भेद न करते हुये भक्त के द्वारा श्रद्धा और विश्वास की भावना से की गई पूजा का फल देता है। इसलिये अनुष्ठान की प्रक्रिया को सरल बनाने तथा ''स्वयं'' पूजन हवन सम्पन्न करा सकने के उद्देश्य से इस पुस्तक में पूजा विधान बोलचाल की सरल हिन्दी भाषा में लिखा गया है।

हिन्दी दिवस पर विशेष

हिन्दी भक्त : रायबहादुर डॉ.हीरालाल इंस्पेक्टर की भविष्यवाणी

सन् 1874 ई.की बात है। जाड़ों के दिन थे। सुबह का वक्त था। वर्नाक्यूलर स्कूल (प्राथमिक विद्यालय) विशेष रूप से सजाया गया था। एक बड़े आदमी का स्वागत था। उसी के अनुरूप सजावट का भी आयोजन हुआ था। स्कूल का वातावरण भी हर्ष से अनुरंजित हो रहा था। लड़कें प्रार्थना के गीत गा रहे थे, जिन्हें सुनकर मार्ग के पथिक भी मुग्ध जाते थे। प्रार्थना समाप्त हुई। एक अंग्रेज महाशय सामने खड़े हुए कुछ विद्यार्थियों से बातचीत करने लगे। ये महाशय एजुकेशन के इंस्पेक्टर थे और स्कूल का निरीक्षण करने आए थे।

इंस्पेक्टर साहब ने विद्यार्थियों से कुछ प्रश्न हिन्दी में किए।

सात साल के एक तेज विद्यार्थी ने आगे बढ़कर कहा-'जनाब, आप एक गलती करते हैं। ठीक शब्द ''तुम'' है, ''टुम'' नहीं।'

इंस्पेक्टर साहब का स्वभाव अच्छा था। उन्होंने इस शब्द को दो-तीन बार दुहराया ताकि ठीक उच्चारण कर सकें।

'क्या अब ठीक है?-उन्होंने पूछा।'

'जी नहीं, क्या आप कभी स्कूल में नहीं पढ़े?' -उस बालक ने तुरन्त जवाब दिया।

'बच्चे ! स्कूल में तो पढ़ा हूं, लेकिन हिन्दी मेरी मातृभाषा नहीं है।'

उस बालक ने चट से उत्तर दिया, तो फिर जवाब,आप हमारे हिन्दी स्कूलों की जांच क्यों करते हैं?

कुछ क्षण के लिए इंस्पेक्टर साहब का मुंह बंद हो गया। इस छोटे से बालक की विद्ग्धता से वे चमत्कृत हो गए और कुछ समय तक कोई उत्तर न दे सके। अपने गले की फूलों की माला उतार कर उन्होंने उस बालक के गले में पहना दी, बड़े प्रेम से उसकी पीठ ठोंकी और यकायक उससे पूछ पड़े तुम अपने जीवन में क्या बनना चाहते हो?'

बालक ने बड़ी सरलता से छूटते ही जवाब दिया-'अंग्रेजी मदरसे का बड़ा साहब।'

इंस्पेक्टर साहब ने स्कूल के अध्यापक से कहा, वास्तव में यह लड़का बड़ा चतुर है। इसका भविष्य बड़ा उज्जवल है।

इंस्पेक्टर साहब की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। रायबहादुर डॉ हीरालाल ने देश और विदेश दोनों में ख्याति प्राप्त की जिस पर कोई भी आदमी गर्व कर सकता है।

एक बार मैंने संस्कृत के एक जर्मन प्रोफेसर से रायबहादुर साहब के संबंध में उनकी सम्मति पूछी। उन्होंने उत्तर दिया 'वे तो साक्षात् विद्या की मूर्ति है।' राबर्टसन कॉलेज, जबलपुर, के एक यूरोपियन प्रोफेसर ने उन्हें एक बार अपने समय के शंकराचार्य कह कर सम्मानित किया था। मैं समझता हूं रायबहादुर साहब जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति के लिए ऐसा कथन उनके अनुरूप ही था।

रायबहादुर हीरालाल अपने देश की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के उपासक थे। अपने देश की महान् संस्कृति से उनका विशेष परिचय था। वे उसमें सदैव घ्आकर्षण देखते थे। संक्षेप में देखा जाये तो उनका जीवन का उद्देश्य भारतवर्ष की महान और उत्कृष्ट संस्कृति को पुनर्जीवित करना और उसे अपने देश वासियों तथा पश्चिमी संसार के सम्मुख प्रस्तुत करना था।

अगर आप कभी उसके घर जायें तो आप उसे एक अजायबघर के रूप में पाएंगें **जिसमें दुष्प्राप्य पुस्तकें हैं, हस्तलिखित ग्रंथ हैं और पुरातत्त्व-संबंधी अनेक बहुमूल्य वस्तुएं हैं। उनकी वाटिका और खोज-पुस्तकालय में प्राचीन वास्तुकला और मूर्तिकला की प्रदर्शनी सी हो रही है।कला के इन भग्नावशेषों को उन्होंने प्राचीन ऐतिहासिक स्थानों से** प्राप्त करके वहां सुरक्षित कर रखा है। इस बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कि वे अपने देश की संस्कृति से कितना प्रेम करते थे, केवल एक घटना का उल्लेख करना पर्याप्त होगा। रायबहादुर साहब के पास एक हिन्दू देवता की दो एक-सी दो मूर्तियां थीं । एक अमेरिकन विद्वान जो उन्हीं के यहां ठहरे हुए थे, उनमें से एक मूर्ति लेने के लिए पागल हो गए और छै हजार पाउंड तक नगद देने लगे, रायबहादुर साहब ने उत्तर दिया, मैं अपनी प्राचीन मूर्तियां आपको दे नहीं सकता। क्या आप समझते हैं कि मैं अपने देश की प्राचीन संस्कृति को बेच दूंगा?

रायबहादुर साहब के सिर पर सरकारी काम का काफी भार रहता था, फिर भी वे अपनी साहित्य-सेवा में कभी कमी नहीं होने देते थे। अपनी नौकरी के कामों को

सफलतापूर्वक करते हुए वे अपने खोज-कार्य के लिए काफी समय निकाल लेते थे लेकिन वास्तव में डॉ हीरालाल जैसे व्यक्ति के लिए सरकारी काम और साहित्यसेवा दोनों ही अपर्याप्त थे। उनके अन्दर वह प्रतिभा थी कि इनके अतिरिक्त वे और भी काम एक ही समय में कर सकते थे।

55 वर्ष की आयु होने पर जब रायबहादुर साहब ने सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण किया तो पूज्य पंडित मदनमोहन मालवीय ने उनसे काशी विश्वविद्यालय में प्रोफेसरी के लिए प्रार्थना की। पूज्य मालवीय जी की प्रार्थना उन्होंने विनम्र शब्दों में अस्वीकार की और चिरकाल के कठिन परिश्रम के बाद शांति से एकांत जीवन व्यतीत करने की इच्छा प्रकट की। वास्तव में आराम करना उनका उद्देश्य नहीं था, वे तो शांतिपूर्वक खोज करना चाहते थे और इसीलिए उन्होंने एकांतवास की इच्छा प्रकट की थी। परिश्रम करने की उनमें अद्‌भुत शक्ति थी।काम में उन्हें विशेष आनंद आता था।

रायबहादुर डॉ हीरालाल जी के राष्ट्रभाषा और देवनागरी लिपि हित में अनेक अद्वितीय तथा अभिनव अवदानों के लिए देश की सबसे पहली और प्रतिष्ठित हिन्दी की संस्था नागरी प्रचारिणी सभा काशी के निर्वाचित अध्यक्ष रहे थे। आप नागपुर विश्वविद्यालय की स्थापना से जुड़े रहे एवं विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में हिन्दी को सम्मिलित कराया। आपको विश्वविद्यालय का कुलपति भी बनाया जा रहा था किन्तु आप नहीं बनें।

रायबहादुर साहब के सद्‌गुण, ऐतिहासिक समस्याओं को हल करने की उनकी दूरदर्शिता,उनका आदर्श चरित्र, उनकी प्रेरक शक्ति- अब कहीं नहीं हैं।कराल काल ने एक ही बार में उन्हें हमसे छीन लिया। रायबहादुर साहब का पार्थिव शरीर अब इस संसार में नहीं है, लेकिन उनका नाम, उनका यश, सदैव अमर रहेगा।

आलेखः लक्ष्मी प्रसाद त्रिवेदी 'मधु' मथुरा

अखिल भारतवर्षीय हैहय-क्षत्रिय महासभा तथा हैहय-क्षत्रिय सभा प्रयाग का मासिक मुख-पत्र

हैहय-क्षत्रिय-मित्र, जनवरी-फरवरी 1936, पृष्ठ क्रमांक 170 ; हीरालाल कुसुमांजली। पुनर्मुद्रित और विमोचित

संभागायुक्त, जबलपुर;
अध्यक्ष इन्टैक जबलपुर अध्याय
पृष्ठ क्रमांक 141.
संकलन - ओम् मालवीय
भोपाल (म.प्र)

शोक समाचार

भरे हृदय से सूचित करना पड़ रहा है कि दिल्ली के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री दयाशंकर जायसवाल के बड़े सुपुत्र श्री संजय जायसवाल का एक लम्बी बीमारी के बाद 2 सितम्बर 2021 को निधन हो गया। वे दिसम्बर से आक्सीजन पर थे और अपने अन्तिम दिनों में ICU में थे AIMS में भर्ती थे। सम्पूर्ण भारत वर्ष से व्यापक सोशल मीडिया पर लग्स दानदाता की अपील के बाद भी कोई दानदाता नहीं मिला और उनके लग्सं ने कार्य करना बंद कर दिया अन्ततः मृत्यु को प्राप्त हो गये। उनकी माताजी का भी हाल ही में जनवरी माह में देहवासन हो गया था।

उनके परिवार में पिता दयाशंकर जायसवाल, भाई गौरव जायसवाल व तीन बहने उनकी पत्नी रश्मि जायसवाल व पुत्र श्लोक पुत्री सौम्या सहित एक भरा पूरा परिवार है अब उनकी पत्नी व पुत्र पुत्री की जिम्मेदारी उनके पिता पर आ गई है।

जायसवाल जागृति परिवार स्व. संजय जायसवाल को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए परमेश्वर से इनकी आत्मा की चिरशांति की कामना करता है।

शोक समाचार

जयपुर के अध्य व्यवसायी श्री प्रकाश चन्द गुप्ता का आकस्मिक निधन जन्माष्टमी के दिन हो गया। वे पूर्णतया स्वस्थ थे किन्तु विधी की विडम्बना कहे या ईश्वरेच्छां वे अपने पीछे अपनी पत्नी पुत्र लोकेश, दिनेश व आशीष पुत्री दिव्यांका व दामाद पोत्र पोत्रिया व दोहिते से भरपूर परिवार छोड़ गये हैं जायसवाल जागृति परिवार की ओर भावभीनी श्रद्धांजलि।

भूल सुधार

जायसवाल जागृति के अप्रैल से जुलाई अंक 1, 2021 के कवरपेज 3 में श्रीमती सुषमा जायसवाल एवं सतीश जायसवाल (पुत्री एवं दामाद) पढ़ा जाये तथा पौत्र-पौत्रियाँ में आँचल की जगह अर्चित पढ़ा जाये।

समय का महत्व

इस संसार में परिवर्तन को छोड़कर कुछ भी स्थाई नहीं है। इस दुनिया में सबसे शक्तिशाली चीज समय है। 'समय' सुनने में तो यह सिर्फ तीन अक्षरों का एक शब्द है, लेकिन इस पूरे ब्रह्मांड संचालन समय के अंतर्गत ही होती है।

समय वह कीमती अमृत है, जो किसी की जिंदगी सवार भी सकता है और बिगाड़ भी सकता है। समय के चक्र से आज तक ना कोई बच पाया है और ना कोई कभी बच पएगा। आज तक जितने भी महापुरुष और सफल लोग हुए हैं, उन्होंने हमेशा समय का इस्तेमाल एक शानदार तरीके से किया है, जिसके कारण ही आज हम उन्हें पहचानते हैं। इस दुनिया में जितने भी लोग हैं, उन सभी को ठीक उतना ही समय मिलता है जितना कि एक सफल होने वाले व्यक्ति को मिलता है।

यह सोचने की बात है, कि 24 घंटों का उपयोग करके कोई महान बन जाता है, तो कोई समय बर्बाद करने से गरीब और लाचार बना जाता है।

जन्म, बुढ़ापा और मृत्यु तीनों ही समय का खेल है। जो इस खेल को समझ जाता है वह आबाद हो जाता है। दुनिया में ऐसी कोई भी चीज नहीं है, जिसकी तुलना अनमोल समय से की जा सके।

अगर पूरी दुनिया के सभी अमीर लोग एक साथ मिलकर अपनी जायदाद बेच देते हैं, तो भी समय को नहीं खरीद सकते हैं। इतिहास गवाह है, कि इस धरती पर जन्म लेने वाले अवतार पुरुष भी समय के कालचक्र से बंधे होते हैं।

महान कवि कबीर दास ने कहा है कि-

'काल करे सो आज कर आज करे सो अब, पल में प्रलय होएगी बहुरि करेगा कब'।

इसका अर्थ है, कि जिस काम को कल करना चाहिए यदि संभव है, तो उसे आज इसी वक्त पूरा कर देना चाएिह। जिस कार्य को आज किया जा सके उसे कल पर नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि कोई नहीं जानता कि कल कब आएगा।

समय में इतनी ताकत है, कि वह किसी फकीर को राजा बना सकती है और किसी राजा को गरीब दुनिया में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक समय है, जिसकी सिखाई गई शिक्षा पूरी जिंदगी याद रह जाती है। बीता हुआ समय वापस नहीं आता इसीलिए इसका उपयोग हमेशा ईमानदारी और समझदारी पूर्वक करना चाहिए।

समय का सदुपयोग क्यों जरूरी है?

सभी लोगों की ख्वाहिश होती है, कि वे अपने जीवन में मनचाहा सुख सुविधाओं का आनंद उठाएं। लेकिन कुछ लोग ही ऐसे होते हैं, जो अपने समय का सही तरीके से उपयोग करके सफल हो पाते हैं। हमेशा से ही मानव की ऐसी प्रवृत्ति रही है, किस जिस वस्तु को उसे मुफ्त में दिया जाता है, उसकी कदर वह कभी भी नहीं करता। चाहे वह भोजन, पानी, ऑक्सीजन और समय ही क्यों ना हो। वस्तुओं के अभाव में ही लोग अपने जीवन के वास्तविक चीजों से अवगत हो पाते हैं।

यदि आप अपना समय किसी ऐसे कार्य में लगा रहे हैं, जो अपने भविष्य निर्माण में सहायता कर सकती है, तो आप बेशक सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

लेकिन अक्सर लोग मौज मस्ती, घूमना फिरना, मनोरंजन और टालमटोल में ही अपना पूरा दिन खर्च कर देते हैं। ऐसे ही लोग कभी भी अपने जीवन में बड़ी उपलब्धियों को नहीं प्राप्त कर पाते हैं। हर व्यक्ति अपने जीवन में खुशियां पाने की इच्छा रखता है, लेकिन ऐसा तभी होगा जब समय को उचित रूप से उपयोग करके परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लिया जाए। यदि विद्यार्थी जीवन से ही समय के मूल्य को समझा जा सके, तो इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है। यह जीवन का वह दौर होता है, जहां मुश्किल से मुश्किल प्रयासों को आसानी से किया जा सकता है। समय का सदुपयोग दुनिया में सबसे मुश्किल कामों में से एक है।

यदि समय को उचित ढंग से इस्तेमाल कर लिया जाए तो जीवन की आधी दिक्कतें अथवा परेशानियां अपने आप ही खत्म हो जाएंगे। समय किसी के भी साथ नाइंसाफी नहीं करता है, वह सबको बराबर का मौका देता है।

सफलता पाने की पहली सीढ़ी समय का सदुपयोग ही होता है। जिस प्रकार परीक्षा में समय की सीमा तय होती है, उसी प्रकार जीवन में भी सीमित समय होता है।

जब एक बहती हुई धारा गति करना छोड़ देती है, तो वह दूषित तालाब अथवा पानी के गड्ढे का रूप ले लेती है। लेकिन यदि वही धारा रास्ते में पढ़ने वाले रूकावट अथवा चट्टानों को चीर कर निकल जाती है, तो वह विशाल समुद्र में जाकर ही रूकती है।

कुछ इस प्रकार हमारे साथ भी होता है, जब लोग मुसीबातों को चुनौती देते हैं तो सफलता उनके कदम चूमती है। जब कोई टालमटोल अथवा टाइम पास करके गवाता है, तो उसका भविष्य बहुत दयनीय होता है।

गुरु चापणक्य ने कहा है, कि

कहे हुए शब्द और बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता।

आज के समय में लोग सबसे ज्यादा कीमत पैसों के करते हैं। लोग किसी और को नहीं बल्कि खुद को ही मूर्ख बनाते हैं, क्योंकि पैसा पुनः कमाया जा सकता है, लेकिन व्यर्थ गवाया हुआ समय कभी भी वापस नहीं लाया जा सकता है। इसीलिए समय का सदुपयोग जीवन में सबसे पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

समय का दुरूपयोग क्यों नहीं करना चाहिए?

जीवन में बितने वाला प्रत्येक क्षण हमें मृत्यु की ओर ले जा रहा है। वैसे तो दुनिया में करोड़ों लोग हैं, लेकिन हम केवल उन्हीं को पहचानते हैं जिन्होंने अपने जीवन में कुछ उपलब्धियां हासिल की हैं।

उपलब्धियां केवल और केवल समय के सदुपयोग से ही प्राप्त की जा सकती हैं। समय का दुरूपयोग करने वाले लोगों को न कोई जानता है, ना हीं पहचानता है। समय के साथ हमेशा परिवर्तित होना चाहिए, यही संसार का नियम है। यदि समय रहते हुए हम नहीं बदलते हैं तो समय एक ना एक दिन हमें ही बदल देता है।

ऐसे कई लोग मिल जाएंगे जो अपने जीवन में पर्याप्त समय ना होने का बहाना देंगे, लेकिन सच्चाई तो सभी को पता है, कि सभी को 1 दिन में 24 घंटे ही मिलते हैं। वास्तविक तो यह है, उचित समय कभी नहीं आता है, बल्कि समय को उचित बनाना पड़ता है।

अगर समय की कदर सही समय पर नहीं की जाए तो बाद में सिफ और सिर्फ अफसोस होता है। लेकिन सच्चाई तो यह है, कि किसी को नहीं पता कब और कैसे वह पर्याप्त समय अंतिम समय बन जाएगा।

स्वामी विवेकानंद ने समय का महत्व बताते और लोगों को प्रेरित करते हुए कहा है, कि

उठो जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए।

कामयाब और साधारण लोगों में सिर्फ इतना सा फर्क होता है, कि कामयाब लोग कभी भी अपना वक्त बेकार की चीजों में जाया नहीं किया करते हैं।

शायद समय की कीमत उन से पता लगाया जा सकता है, जो लोग दौड़ के खेल में कुछ सेकंड से हार जाते हैं। यह तो एक उदाहरण है, लेकिन दुनिया में ऐसे कई उदाहरण हैं जिन्हें देख्कर अपको यह सीख जरूर मिलेगी कि कभी भी समय का दुरूपयोग नहीं करना चाहिए।

इस पूरे ब्रह्मांड में समय से ज्यादा बलवान और कोई नहीं है। जो लोग समय को नीचा दिखा कर उसका दुरूपयोग करते हैं, समय ऐसे लोगों को कहीं का नहीं छोड़ता है।

समय को बर्बाद करने से केवल **असफलता** और असंतोष ही हाथ लगती है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता, कि जो लोग समय का दुरूपयोग करते हैं वे पूरी तरह से आलसी, कर्तव्यहीन, नासमझ और कायर होते हैं।

समय का सदुपयोग कैसे करें?

समय का सदुपयोग करना बहुत बड़ी बात है। दुनिया में सबसे मुश्किल काम में गिना जाने वाला यह कार्य किसी चुनौती से कम नहीं होता है।

लेकिन यदि किसी कार्य को 3 हफ्ते से अधिक अपने दिनचर्या में ढाल लिया जाए और उसका नियमित रूप से पालन, किया जाए, तो किसी भी कार्य को अपने पूरे जीवन में लागू किया जा सकता है।

संतोष कुमार जायसवाल
उप निदेशक, डीआरडीओ, बेंगलुरू

स्वजातीय समाचार

जायसवाल जागृति की बैठक सम्पन्न

भगवान कृष्ण के अवतरण के पावन पर्व जन्माष्टमी पर राधाकृष्ण मंदिर द्वारका में जायसवाल जागृति की एक विशेष सभा वयोवृद्ध समाजसेवी तथा जागृति के संस्थापक वरिष्ठ संरक्षक श्री पन्नालाल जायसवाल के सानिध्य में आयोजित की गई। सभा में मेरे द्वारा सम्पादित प्रथम अंक श्रद्धेय राजाराम श्रद्धांजलि विशेषांक की समीक्षा की गई। साथ ही जागृति के मूल उद्देश्यों एवं कार्यकलापों पर भी विस्तृत चर्चा की गई। मेरी राय में जागृति एक पत्रिका ही नहीं वरन एक अलख है जो सामाजिक चेतना के साथ-साथ राजनैतिक व बौद्धिक चेतना जगाने में प्रयासरत है यह वह माध्यम है जिससे समाज के निम्न स्तर से लेकर उच्चतम स्तर तक बैठे व्यक्ति की अभिव्यक्ति को व्यक्त कर सकती है समाज में फैले अधेरे को दूर कर रोशनी की किरण दिखा सकती है, नौजवानों में उत्साह व उमंग भर सकती है उनको उचित मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे सकती है तो किसी को भावना में बह जाने का कारण बन सकती है इसके माध्यम से विवाह संबंध तय किये जा सकते हैं।

हाल ही में मुझे आइका द्वारा आयोजित भगवान बलभद्र की पूजा में जाने का अवसर प्राप्त हुआ वहां स्वजातिय आदरणीय सांसद श्रीमती रमा देवी जी के दामाद दिलीप गुप्ता ने अपने उदघोषणा में कहा कि कोई ऐसी पत्रिका होनी चाहिये जो समाज के उद्भव विकास व निरन्तरता के बारे में बता सके साथ ही साथ भिन्न-भिन्न स्थानों पर पायी जाने वाली जातियों और उपजातियों के बारे में बता सकें। इस सन्दर्भ में कहना चाहूँगी जायसवाल जागृति में इन सभी बातों का समावेश रहता है। इसमें प्रकाशित लेखों से आपको पत्रिका के स्तर तथा उसके राष्ट्रीय स्वरूप का आभास हुआ होगा। पत्रिका को सभी दृष्टियों से पूर्ण बनाने का हमारा प्रयास है। जहाँ हम देश के स्वजातीय मूर्धन्य विद्वानों के लेख प्रकाशित कर रहे हैं, वहाँ अपनी जाति के नवोदित कवियों, कथाकारों तथा कलाकारों की कृतियों को भी प्रकाश में लाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

पत्रिका को अधिक उपयोगी बनाने के लिए कुछ विशेष स्तम्भ प्रारम्भ किये जा रहे है। ये हैं- स्वजातीय रत्न, सम्पादक के नाम पत्र, विचार मंच, महिला जगत, आपकी समस्याएं, स्वजातीय समाचार (प्रदेशों की चिट्ठियाँ), आपका स्वास्थ्य, ज्ञान कुम्भ,नवोदित कवि-कथाकार-कलाकार, वैवाहिकी। हम इन सभी स्तम्भों के लिए आपकी रचनाएं आमंत्रित करते हैं। आप कार्टून, हास्य व्यंग्य (लेख एवं कविता) तथा अन्य मनोरंजन सामग्री भी भेज सकते हैं।

आपके लेख तीन-चार पृष्ठों (लगभग 1000-1200 शब्द) से अधिक न हों और कागज के एक ओर टाइप किये हों।कि जायसवाल जागृति ही एक मात्र ऐसी पत्रिका है जो समाज के इन सभी उद्देश्यों को पूरा करती है। अत: जो व्यक्ति अपनी लेखनी के माध्यम से इस संदर्भ में कुछ लिखना चाहता है तो जागृति उनके लेखों और विचारों को आमंत्रित करती है।

मीनू गुप्ता जायसवाल (M 9891232016)

देश की गौरवशाली बेटियाँ

भारत के मेनचेस्टर और साबरमती के संत की स्थली के रूप विख्यात अहमदाबाद (गुजरात) में दिनांक सोमवार, 23-अगस्त 21 को अखिल भारतीय जायसवाल (सर्व.) महासभा के गुजरात प्रदेश इकाई द्वारा महासभा के राष्ट्रीय संरक्षक श्री पन्नालाल वैधनाथ जायसवाल जी के मार्गदर्शन में और गुजरात प्रभारी व कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमान मदनलाल प्रभावतीलाल जायसवाल जी के अध्यक्षता में शिव वाटिका, सत्ताधार में भव्य सम्मान समारोह रखा गया। जिसमें गुजरात महासभा के पदाधिकारीओं और आमंत्रित अतिथियों के गौरवपूर्ण उपस्थिति में अपने राष्ट्र, समाज और परिवार को गौरवान्वित करने वाली और विलक्षण प्रतिभा के धनी,

समाज की बेटी सुश्री दृष्टि जायसवाल और सुश्री आयुषी जायसवाल को विजयोपहार, पुष्पगुच्छ, प्रसस्तिपत्र और परितोषिक देकर सम्मानित किया गया।

उलेखनीय है कि नवसारी (गुजरात) की रहने वाली दृष्टि जायसवाल ने अद्भुत कौशल का परिचय देते हुए महज 7 साल की उम्र में 4 अप्रैल 2021 को जिमनास्टिक में 1 मिनट में 64 फॉरवल वर्कओवर पूर्ण करके वर्ल्ड रिकॉर्ड ब्रेक करते हुए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कारया और दृष्टि जायसवाल ने 4 अगस्त को दुनिया की सबसे छोटी उम्र में जिमनास्टिक की 'टाइटल होल्डर' भी बन गई। जो बेहद गौरवपूर्ण और खुशी की बात है।

गुजरात महासभा के कर्मठ और सक्रिय पदाधिकारी श्रीमान हरिप्रकाश जी की सुपुत्री और MBBS द्वितिय वर्ष की छात्रा व इंटरनेशनल अवॉर्ड से सम्मानित सुश्री आयुषी जायसवाल नें केवल 7 घंटों में उपयोगी 100 मेडिकल वीडियो यूट्यूब पर अपलोड करके वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है, जो बेहद प्रशंसनीय है।

गुजरात महासभा के शीर्षनेतृत्व के रूप में आदरणीय श्री पन्नालाल जी जायसवाल और श्री मदन लाल जी जायसवाल के हाथों समाज को दोनों बेटियों को सम्मानित करते हुए अपने को भाग्यशाली बताते हुए उन्होनें अपने व्क्तव्य में बध ाई और शुभकामनाएँ प्रेषित की और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। बेटियों ने अपने देश, समाज और परिवार के नाम रोशन किया है और मातृशक्ति, नारी सशक्तिकरण की ओर अपने जागरूक समाज के तेजी से बढ़ते हुए कदम बताया और भविष्य में और भी सुखद और नेक परिणाम निश्चित रूप से देखने को मिलेगा, ऐसा विश्वास जताया।

साथ ही, गुजरात प्रदेश महिला अध्यक्ष श्रीमती उषा जायसवाल और राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष ड़ॉ हर्षा जायसवाल द्वारा कुशल, निष्ठावान सामाजिक चिंतक व नेत्री श्रीमती कोमल रमेश जायसवाल जी को गुजरात प्रदेश महिला कोषाध्यक्षष पद के लिए मोनोनित किया गया, जिसका सभी पदाधि कारियों ने करतल ध्वनि से इसका अभिवादन किया और उम्मीद जताई कि आपकी कर्मठता, कार्य कुशलता से समाज एवं संगठन की एकता, उत्थान और सशक्तिकरण में बहुआयामी एवं आशातीत सफलता मिलेगी!!

आदित्य वर्धनम, राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय जायसवाल (सर्व) युवा महासभा
मो. 9818389050

अर्चना जायसवाल बनी दूसरी बार प्रदेशाध्यक्ष

श्रीमती अर्चना जायसवाल राष्ट्रीय कल्चुरी एकता महासंघ की राष्ट्रीय संयोजक हैं,एवम सन 2000 से राजनीति में सक्रिय हैं, 2011 में पहली बार इन्हे महिला कांग्रेस का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया था।

जबलपुर ही नहीं पूरे मध्यप्रदेश के विद्वान बकीलो में शुमार इनके पिता स्वनामधन्य श्री डी सी भमोरे स्वतंत्रता सेनानी परिवार थे।इनकी शिक्षा जबलपुर में हुई पिताजी इन्हे वकील बनाना चाहते थे पर कालेज समय से ही इनकी रुचि राजनीति में रही, एम फिल पीएचडी करने के बाद इनका विवाह श्री हैहय क्षत्रिय समाज धर्मशाला ट्रस्ट इंदौर के वरिष्ठ ट्रस्टी स्व श्री कमलनारायण जायसवाल जी के इकलौते पुत्र श्री राकेश जायसवाल के साथ हुआ जो एक जाने माने इंजीनियर एवम कांट्रेक्टर हैं।श्रीमती अर्चना जायसवाल अपने परिवार के साथ इंदौर की मिलिंद कालोनी में निवास करती है, इनकी दो पुत्रियां एवम एक पुत्र दयेश साफ्टवेयर के क्षेत्र में एक कामयाब व्यवसाई हैं एवम सभी बिटिया बेटा विवाहित हैं। ये इंदौर विकास प्राधिकरण की सदस्य बनाई गई जिसमे नगर विकास के बहुत सारे काम इन्होंने किए एवम इनके कार्यों को देखते हुए 2014 में कांग्रेस पार्टी ने इंदौर नगर निगम हेतु महापौर पद का प्रत्याशी घोषित किया था।

कांग्रेस पार्टी ने इन्हे प्रदेश इकाई में वरिष्ठ उपाध्यक्ष नियुक्त किया जहां उन्हें कांग्रेस के सभी प्रदेश विभागो,मोर्चो

का समन्वयक प्रभारी नियुक्त किया वहीं इनकी कार्यकुशलता एवम पिछड़े वर्ग की अगुआई करने पर विगत दिनों मध्यप्रदेश महिला कांग्रेस का दूसरी बार प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया,

वर्तमान में मध्यप्रदेश में कांग्रेस विपक्ष में रहते हुए आंतरिक झंझाबातो से भी जूझ रही है एवम आने वाले दिनों में एक लोकसभा खंडवा एवम तीन विधानसभा के चुनाव इनकी परीक्षा लेंगे तथा आने वाले दो वर्षो 2023 में होने वाले आम चुनावो में महिलाओं,सहित पिछड़े वर्ग को कांग्रेस से कितना जोड़ पाने में सफल होंगी यह परिणाम बताएंगे पर इन्होंने अपनी प्राथमिकता अभी से तय करते हुए महिला कांग्रेस को सक्रिय कर पुनः कांग्रेस को सत्ता में बैठाना उद्देश्य बना लिया है जिसके लिए रात दिन से कार्य कर रही हैं।समय समय पर राजनीति के साथ साथ सामाजिक कार्यों को भी संपादित करती रहती हैं। अपनी बेबाक बात रखने में माहिर श्रीमती अर्चना जायसवाल के सुखद उज्जवल भविष्य की मंगल कामना करता हूं।

'किशोर राय'
प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष
राष्ट्रीय कल्चुरी एकता महासंघ मध्यप्रदेश

समाज शिरोमणी श्री राजारामजी कलचुरी समाज का शत् शत् नमन ''श्रद्धांजलि''

अर्चना जायसवाल

कोरोना महामारी ने देश के कलाल, कलार एवं कलवार समाज को एक बडा झटका दे दिया। वयोवृद्ध समाजसेवी और जायसवाल जागृति पत्रिका के प्रधान संपादक श्री राजाराम जायसवाल जी का (3 मई, 2021) निधन हो गया। इसका समाचार मिलते ही समाज में शोक की लहर दौड़ गई। सभी सामाजिक संगठनों और सेवियों ने सोशल मीडिया पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। एक सप्ताह पूर्व 26 अप्रैल को उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चंद्रप्रभा जायसवाल जी का भी कोरोना संक्रमण से स्वर्गवास हो गया।

हम सभी के वरिष्ठ मार्गदर्शक, स्व श्री राजारामजी एक चलती फिरती युनिवर्सिटी थे, आज हमारे बीच नहीं हैं ऐसा हम सोच भी नहीं सकते ''राजारामजी'' कलचुरी समाज की आन-बान-शान थे। बेहद संवेदनशील कलचुरी समाज के लिए समर्पित, हर किसी से स्नेहपूर्वक बातचीत करते थे। सबकी सुनते थे, सबके लिये चिंतित होते थे। लेखनी के माध्यम से पूरे हिन्दुस्तान के कलचुरी समाज की बात ''जायसवाल जागृति'' में रखते थे।

आदरणीय राजाराम जी मूल रूप से उत्तर प्रदेश के थे लेकिन उनकी परवरिश और शिक्षा-दीक्षा मुंबई में हुई। 1982 में केंद्रीय वित्त मंत्रालय की सेवा में दिल्ली आए थे, जहां से वह पदोन्नत होकर इलेक्ट्रॉनिकी विभाग में 'सहायक निदेशक राजभाषा' बने और इसी विभाग में 'संयुक्त निदेशक राजभाषा' के पद से रिटायर हुए।

रिटायरमेंट के बाद उन्होंने जायसवाल जागृति पत्रिका का प्रकाशन किया, जो समाज की संभवतः पहली पत्रिका है जो बीते 28 वर्ष से नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चंद्रप्रभा जायसवाल जी भी समाजिक क्षेत्र में सक्रिय थीं, और जायसवाल जागृति संस्था की महिला प्रकोष्ठ की संरक्षक थीं। 85 वर्षीय श्री राजाराम जायसवालजी दिल्ली के गुलाबी बाग क्षेत्र में रहते थे और अपने पीछे दो पुत्रों एवं दो पुत्रियों तथा पौत्र-पौत्री से भरे-पूरे परिवार को छोड गए हैं।

राष्ट्रीय कलचुरी एकता महासंघ द्वारा आदरणीय राजारामजी एवं उनकी धर्म पत्नी को श्रद्धांजली अर्पित करते है। उनका जाना हमारे समाज के लिये बडी क्षति है जो कभी पूरी नहीं हो सकती। ईश्वर उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति दे व उन्हें उनके श्रीचरणों में जगह प्रदान करें। ओम शांति शांति

डॉ (श्रीमती) अर्चना जायसवाल
संयोजक, राष्ट्रीय कल्चुरी एकता महासंघ

My Grandppa

The Elysian Fields cavortswelcoming my grandparents, as we grieve their loss from our lives.

The glue that held the family together, the strength, our beloved grandparents departed for their heavenly abode. Their courageous battle with the aggressive virus was a nip and tuck affair.It is absolutely soul crushing to have lost them this way to the pandemic, but we take consolation in the fact that wherever they may be, they are together.

They spoiled the worldwith their kindness, their selflessness and love for 82 beautiful years.They fought against all odds, even when no one believed in them, they went against nature's laws - against all kinds of adversity - they grew like the rose that grew from concrete.

We will always remember them as two brave andcompassionate souls who always put everyone else before them.

A few days back, through a condolence meet, we experienced theoverwhelming love and respect people had for them.

The unparalleled wit of my Dadiji and the Godly charm of my Dadaji is something we will always cherish.Particularly, how in the face of adversity, they would always put up a strong front and march forwards.

Dadaji is without question the most considerate human being to walk on this planet. He would leave his food, and devote his time,to help someone in need. Hewas the most knowledgeable man I know. Be it Science or Hindi lessons, Dadaji could proficientlyteach you countless topics for countless hours.He explained the Indian mythology to me as if he occasionally discussed it over some chai and lai with the great Ved Vyas and Valmiki. He would explain all the dohas during the pujas (also during my marvel movie marathons but the doha explanations were better than the movies). There's nothing he couldn't solve, nobody he couldn't help.

Dadiji was his strength and ours. There's no argument she could lose and rightfully so. There's no injustice with her. I will admit though, she was slightly biased towards me and well howcould I complain? She was the best grandmother and also the motherly figure in my life. During my exams, I would regularly be treated with cut up fruits or kadak chai and then a nice scolding followed as I never finished my meals.She could make any delicacy better than the originators. My tiffin lunches were most definitely better than anyone in our class. Sorry buas but she won.

I will miss taking over the T.V and boring them with superhero movies. I will miss dadi complaining about how they ruined the city in the movie and then Dadaji chiming in with a doha lesson or two. I will miss gossiping with dadi because God knows how much she loved it, and I, her reactions. I will miss waking up to the smell of freshly fried samosas at 8 in the morning, looking at them beaming with joy whenever I came back from university, or even when they fought over the pettiest things (in all fairness they were more funny than intense). Most importantly I will miss how they lit every room they step foot in.

We are lucky to have shared that light and hope to burn that light brighter.

Until we meet again, dearest dada and dadi!

By **Soumya Jaiswal**
Granddaughter of Late Shri Rajaram Jaiswal

दक्षिण भारत की यात्रा

यह यात्रा सन् 1975 को हैं:

1. रेलवे की एक बोगी रिजर्व थी। उसी में दिन रात रहना-सोना-खाना-पीना, मनोरंजन करना।

2. बोगी घूमने के विभिन्न दर्शनीय स्थानों पर काट दी जाती थी- वहां दिनभर बस से हमलोग घूमते थे। लौटकर आने पर बोगी दूसरी निर्धारित ट्रेन में जोड़ दी जाती थी।

3. Tourist, Deptt से organise था। उन दिनों ट्रेन में ही नियम खाना पकाने और रहने तथा गाना बजाना-ताश खेलने आदि की व्यवस्था हो जाती थी। एक ग्रुप के ही सभी लोग थे।

प्रस्थान 20-1-1975 पटना जक्शन से प्रात: 7 बजे तूफान एक्सप्रेस रवाना

21-1-75 कोलकता-दक्षिणेश्वर मन्दिर-बेलुर मठ-काली मन्दिर-बिड़ला तारामंडल

22-1-75 पुरी- जगन्नाथमन्दिर-12वीं शताब्दि का - नट मन्दिर DANCING Hall जगमोहन (Audiance Hall) पुरी में बस द्वारा- कोनार्क सूर्य मन्दिर- प्रसिद्ध लेखक का कथन "Konark is a living Testimory to the speculative during and artistics sensibility of a race that once know how to live, worship and creat in heroice propartions" The sum temple is the grandest achivement of the Eastorn school of arehitective. This was built by Kalinga Workers.

निम्न मन्दिरों के भी दर्शन हुए- भुवनेश्वर मन्दिर, साक्षी गोपाल धौलागिरी लिंगराज मन्दिर, गणेश गुफा।

23-1-75 शाम को ट्रेन से वाल्टेयर के लिए प्रस्थान। चिलका झील ट्रेन से 1 कई km झील- भारतवर्ष का सबसे लम्बा झील- 72 km.

24-1-75 वाल्टेयर प्रात: 5 बजे- रोशनीघर, समुंद्रतट वैकटेश्वर मन्दिर अत्यंत विशाल, आर-पर स्पोर्ट, विशाखापट्टनम बन्दरगाह अत्यन्त विशाल।

25-1-75 मद्रास में 2 बजे दिन में। मेरिना समुंद्रतट (Second Longest Beach in the world). फोर्ट सेन्ट जार्ज, जू (चिड़िया घर)असेम्बली म्यूजियम, विश्वविद्यालय, उच्चन्यायालय, पीपुल्सपार्क, रतन मार्केट, लार्ड कपिलेश्वर मन्दिर, पार्थ सारथी मन्दिर, मुथु कुमार स्वामी देवस्थान।

26-1-75 तिरूपति का विख्यात मन्दिर देखा (The Lord of Seven Hills Reside here) यह दक्षिण भारत का अत्यन्त पवित्र मन्दिर है। भारतवर्ष के कौन-कौन से प्रतिदिन हजारो भक्त आते हैं। यह मन्दिर पहाड़ पर अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक ढंग से बना है। इस पहाड पर कई तालाब और झरने हैं जिनके नाम हैं- कपिल तिर्थम आकाश गंगा तथा पापनाशम।

27-1-75 बस से महाबलीपुरम निरूकालिकुन्द्रम तथा पांडिचेरी भी गए। महाबलिपुरम में समुंद्रतटीय मन्दिर का निर्माण पल्लव राजाओं द्वारा 7वीं शताब्दी में किया गया।

पांचो मन्दिरों के नाम द्रोपदी एवं महाभारत के पांडवों के नाम पर हैं। महिषासुर मंडपम अत्यन्त सुन्दर है। निरूकालिकुन्द्रम शिवमन्दिर है प्रतिदिन नियमित रूप से दोपहर को दो पक्षी आते हैं और पुजारी के हाथ का खाना खाते हैं। ऐसा विश्वास है कि ये दोनों पक्षी दो योगी हैं। पांडिचेरी यहां का White Town फ्रांसीसी स्टाइल पर बना है। तब के सम्मुख गांधी जी की मूर्ति है। प्रसिद्ध अरविंद आश्रम वहीं स्थित है।

28-1-75 4 बजे शाम को ट्रेन केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम पहुंची।

29-1-75 त्रिवेन्द्रम दर्शनीय स्थान। 1-पद्मनाम स्वामी मन्दिर- सिर्फ धोती पहनकर। 2. सी बीच (समुंद्रतट) 3. मछलीघर- 4. चिड़िया खाना 5. आर्ट गेलरी 6. म्यूजियम 7. सांपघर- कई सांप घूम रहे थे। 8. सचिवालय 9. कारपोरेशम का भव्य भवन 10. स्वीमिंग पुल- 11. बाल भवन चित्रालय- 12 महाराजा का भव्य महल- (कोडियर पैलेस) 13 स्टेडियम- 14 कोवलय बीच (समुद्र का अति सुन्दर तट) SUN BATH SAND BATH और SEA BATH के लिए विश्व के सुन्दरतम तटों में एक है।

30-1-75 प्रात: कन्या कुमारी के लिए प्रस्थान।

कन्याकुमारी में सूर्योदय का दर्शन त्रिवेन्द्रम से कन्याकुमारी 85 km की दूरी पर है। यहां अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिन्दमहासागर का मेल होता है। विवेकानन्द मेमोरियल समुंद्र में चट्टान पर बना है। इस देखा/आकर्ष, प्रभावोपादक। त्रिवेन्द्रम के लिए रास्ते में शचिन्द्र मन्दिर-धोती पहनकर मन्दिर में प्रवेश।

31-1-75 7.30 AM मदुरई। यह उत्सव का शहर है। मिनाक्षी मन्दिर दर्शनीय है। मन्दिरों का शहर है। म्यूजिकल पीलर्स है। From anyside the hall. The visitors can get a kaleideseope view. Outside are the Musical Pillars which produce different स्वर्स when tapped outside the tample.

1-2-75 रामेश्वरम् में समुंद्री स्थान- रामनाथ स्वामीमन्दिर द्रविडियन स्टाइल पर बना है- 17वीं शताब्दि का।

2-2-75 त्रिचनापल्ली प्रात ट्रेन पहुंची। इरोड होते हुए बंगलोर के लए प्रस्थान। जोलारपट्टी जो एक रात्रि में ट्रेन पहुंची।

3-2-75 इरोड शहर- दुकानों पर अधिकांश लेडिज, सेल्स मैन। ट्रेन से चलकर बंगलोर पहुंचे। दर्शनीय स्थाने हैं- विश्वेसरैया इन्डस्ट्रीजल टेक्नोलाजिकल म्युजियम, 2 विधान सभा, म्यूजियम मेडिकल कॉलेज, टीपू का दरबार हॉल, नन्दी हिल, लालबाग, स्टेडियम, सचिवालय, आर्ट एण्ड क्राफ्ट इम्पोरियम।

5-2-75 बंगलोर से बस द्वारा मैसूर। इसे महलों और पार्क का शहर कहा जाता है। निम्न स्थानों को देखा। संनाथ स्वामी मन्दिर 1200 वर्ष पुराना रंग पटट्नम में स्थित है। सेन्ट जासेफ गिरीजाधर दुर्ग मन्दिर, बसंतमहल - चिड़ियाघर, महाराजा चाम राजेन्द्र आर्ट गेलरी, ललितामहल बृन्दावन गार्डन- कृष्ण राज सागर डाम के नीच अत्यन्त आकर्षक वृन्दाबन गार्डेन बना है। यहां फिल्म शूटिंग भी होती है। यहां से बंगलोर वापस।

6-2-75 बंगलोर वापस। यहां से ट्रेन मद्रास पहुंची।

7-2-75 मद्रास के इन दर्शनीय स्थानों को देखा- मैरिस कॉलेज जमिनी स्टूडियो, मेरीना बीच- पारसारथी मन्दिर, हाथी द्वारा सिर पर सूड़ रखकर आशीर्वाद देना एक मनोरंजक एवं हृदय ग्राह्य दृश्य। हैदराबाद में चार मीनार, गोलकोन्डा किला, जुवली पार्क, सालाजार म्यूजियम- A real store house of Art with unique curious term all over the world- Jade, Jewellary, paintings, statnes, wood carings and tournishings- रात्रि में मुंबई के लिए प्रस्थान।

9-2-75 मुंबई में- जुहु बीच- बस से- अति सुन्दर समुंद्रीय तट।

10-2-75 गेट वे इण्डिया के लिए। मोटर लांच पर बैठकर, एलिफेन्टा गुफा देखने हम लोग गए- अति आकर्षक एवं सुन्दर।

समुंद्र में ऐ घंटे का सफर अति आनन्ददायक। रात्रि 8.15 इलाहाबाद के लिए प्रस्थान।

11-2-75 इलाहाबाद 8.20 रात्रि में हमलोग पहुंच गए। ट्रेन में विश्राम।

12-2-75 इलाहाबाद में संगम स्थान। शहर भ्रमण- रात में पटना के लिए प्रस्थान।

13-2-75 प्रात: 11 बजे पटना जंकशन। सकुशल घर वापस जिन राज्य से होते हुए भ्रमण समाप्त हुआ उनके नाम 1. पश्चिम बंगाल 2. उड़ीसा 3. आन्ध्र प्रदेश 4. तामिलनाडू 5. केरल 6. पांडीचेरी 7. कर्नाटक 8. महाराष्ट्र 9. मध्य प्रदेश 10. उत्तर प्रदेश।

ट्रेन से कुल- 8250 km सफर

बस से कुल- 1360 km सफर।

अपने समाज की वर्तमान स्थिति पर एक बिहंगम दृष्टि

मैं वर्षों से अपने अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा के सम्मेलनों में प्राय: उपस्थित रहा हूं। अनुभवों के आधार पर सच्चाई को सामने रख रहा हूं।

इन बैठकों में समाज को भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिनिधि उपस्थित होते हैं। सबसे बड़ी उपलब्धि यह हो जाती है कि एक दूसरे से परिचित हो जाते हैं या पुन: मिलन हो जाता है। बैठक में अपने-अपने क्षेत्र में की गई कार्यवाही और भविष्य की योजना पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाता है।

प्रत्येक का विचार विमर्श, सुझाव Discussion और Instruction दिया जाता है कि धीमी प्रगति पर ध्यान देते हुए और सुधार लाया जाय। अन्त में Meeting, Sitting और Eating वाली कोटा पूरा करके बैठक समाप्त की जाती है।

अब मैं सही मानों में हुई प्रगति अथवा उन्नति को पाठकों के सामने रख रहा हूं।

जहां तक समाज में एकता और संगठन की बात है तो यही कहना पड़ेगा कि नाममात्र ही प्रगति कही जाएगी, क्योंकि सभी बन्धुओं से जो देश के कोने-कोने से आए रहते हैं एक सुनहरा अवसर मिलता है कि हमारे बंधु कहां-कहां फैले हुए हैं तथा किन-किन उपनामों से जाने जाते हैं, उनकी संख्या तथा पेशा की भी जानकारी मिल जाती है। आज स्थिति यह है कि, संगठन और एकता की बात दूर समाज में बिखराव हो रहा है, कभी अखिल भारतीय स्तर पर एक मंच और एक झंडा था। मुझे अच्छी तरह याद है कि अखिल भारतीय स्तर पर मात्र एक संगठन, एक मंच और एक झंडा था। आज चार से अधिक टुकड़ें हो गए हैं। कारण! अहम् और मूंछ की। लड़ाई।

कोई अपने आपको दूसरे से कम नहीं समझता है। Leg putting अपने से दूसरे समाज की अपेक्षा अधिक होना। उदाहरण स्वरूप बिहार में यादवों का बोलबाला है। अखिल भारतीय स्तर पर इनकी संख्या जायसवालों की अपेक्षा कम है। लेकिन वे संगठित है। हमारे समाज में बड़े-बड़े उद्योगपति, सेठ, कर्णधार, विद्यमान हैं। इन लोगों का भी सामाजिक उत्थान में किसी न किसी प्रकार का सहयोग मिलता रहता है भले ही आंशिक रूप से) और अपेक्षा की जाती है।

विद्वत्ता क्षेत्र में भी हमारा समाज अखिल भारतीय स्तर पर ही नहीं विश्व स्तर पर समाज का नाम रोशन किया है- इनमें प्रमुख हैं- डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल बार एक ला, डॉ. गोरख प्रसाद, रायबहादुर डॉ. हीरा लाल और पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी।

मैं उस दिन कि प्रतिक्षा में हूं जब अखिल भारतीय स्तर पर हमारा समाज हो जाएगा एक झंडा, एक मंच

शुभ कामनाओं के साथ

सत्यदेव

पटना- 800001

9308741023

मणिकर्णिका का क्रांतिपथ

मणिकर्णिका और फिर मनु के नाम से पुकारी जाने वाली रानी लक्ष्मीबाई को 'लक्ष्मी' नाम उनके पति झांसी के राजा लक्ष्मीबाई को 'लक्ष्मी' नाम उनके पति झांसी के राजा गंगाधर राव ने दिया था, जो देवी लक्ष्मी को पूजते थे। गंगाधर राव ने लक्ष्मीबाई से शादी उनके साहस, पराक्रम और युद्ध के हर फन में माहिर होने के कारण की थी और पिता मोरोपंत की हर शर्त मान गए थे। जब मराठे उत्तर प्रदेश में आए थे तो नाना साहब पेशवा बिठूर (कानपुर) आ गए थे और उनके बड़े भाई चिमना जी ने वाराणसी को अपना ठिकाना बनाया था।

कानपुर के नाना की मुंहबोली बहन छबीली थी : 19 नवंबर, 1828 को बनारस में जन्मी लक्ष्मीबाई का नाम मणिकर्णिका था। पिता मोरोपंत, महाराष्ट्र से चिमना जी के साथ बनारस आए थे और उनके यहां पूजन और धार्मिक कार्यक्रमों की जिम्मेदारी निभाते थे। उन्हें घर के सदस्य की तरह सम्मान प्राप्त था। मनु जब छोटी थीं तो उनकी मां चल बसीं। इसके कुछ ही समय बाद चिमना जी भी नहीं रहे और मोरोपंत को पुत्री के साथ बिठूर आना पड़ा। स्वभाव से खेल-शस्त्रों में रुचि लेने वाली नन्हीं मनु को छबीली भी कहा जाता था। उनका अधिक समय सैनिकों और पेशवा के लड़ाकों के साथ बीता, जिसका असर था कि बचपन से ही निर्भीक लक्ष्मी ने बहुत छोटी उम्र से सैनिक की तरह युद्ध के सारे गुण प्राप्त कर लिए थे। नाना से संग वे न केवल पढ़ाई करतीं, बल्कि उनसे युद्धकौशल भी सीखतीं। इस तरह उनका स्वभाव वीरांगना का विकास होता चला गया।

दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी : देश में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ मेरठ से स्वतंत्रता की चिंगारी फूट चुकी थी, लेकिन उन्हें स्वाधीनता की खुली चुनौती रानी झांसी के राजा गंगाधर राव नेवालकर के साथ जब रानी का विवाह हुआ, तो उनके साथ पिता मोरोपंत भी चले गए। रानी की पहली संतान कुछ ही माह जीवित रही और इसके बाद राजा गंगाधर राव का भी निधन हो गया। अब झांसी की कमान लक्ष्मीबाई के हाथों में थी। उन्होंने राजघराने के उत्तराधिकारी के लिए मायके पक्ष के एक बच्चे को गोद लिया और उसका नाम दामोदर राव ही रखा। ब्रिटिश सरकार ने इसे नामंजूर कर दिया और यह धमकी भी दी कि अगर ऐसा हुआ तो झांसी भी ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन होगा, लेकिन रानी लक्ष्मीबाई ने धमकी को दरकिनार कर चुनौती दी कि 'मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।'

फिर भी नहीं मानी हार : कई धमकियों के बाद जब लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों से किसी भी तरह का समझौता करने से इंकार कर दिया तो मार्च 1858 के अंतिम सप्ताह में अंग्रेजों ने किले को घेर लिया पर रानी लक्ष्मीबाई अपने निर्णय पर अडिया थी। एक तरफ झांसी की छोटी सी सेना थी और दूसरी ओर नए अस्त्रों से लेस ह्यू रोज की सेना। लक्ष्मीबाई ने जमकर अंग्रेजी सेना का सामना किया, लेकिन भारी संख्या में मौजूद प्रशिक्षित अंग्रेज सैनिक सैनिकों ने 4 अप्रैल को किले पर कब्जा कर लिया, लेकिन लक्ष्मीबाई अंग्रजों को चकमा देकर अपने बच्चे के साथ घोड़े पर सवार होकर झांसी के किले से छलांग लगा गईं। वे बचने में कामयाब रहीं, लेकिन उनका **वफादार घोड़ा बादल** अपनी जान गवां बैठा। युद्ध की अगली रणनीति के लिए वे रावसाहब के पास कालपी चली गईं।

बूढ़े भारत में आई फिर से नई जवानी थी : लक्ष्मीबाई के झांसी से सुरक्षित बच निकलने से बौखलाए ह्यू रोज से उन्हें गिरफ्तार करने के लिए कालपी के बीच कोंच (वर्तमान में जालौन जिले की तहसील) में ही अपने सैनिकों, तात्या टोपे, रावसाहब और कालपी व झांसी के बीच बसे मराठों का एकजुट कर धावा बोला दिया। 7 मई को अंग्रेजी सेना को भारी नुकसान पहुँचाकर रानी फिर वापस कालपी लौट गईं। इस बार भी अंग्रेजों को मुंह की खानी पड़ी और वे हाथ मलते रह गए। इस युद्ध में वे घायल भी हो गई थीं पर उन्होंने अंग्रेजों से हाथ नहीं मिलाया। यह लड़ाई रानी के लिए कड़ी चुनौती साबित हुई, क्योंकि इसमें उन्हें अपने कई वफादार लड़ाकों को खोना पड़ा।

चकमा देने की हैट्रिक : अंग्रेजी सेना पर एक तरफ झांसी की रानी को पकड़ने का दबाव था, तो दूसरी तरफ रानी लक्ष्मीबाई के पास बेजोड़ सूचना तंत्र और बुलंद हौसले वाले स्वतंत्रता के लिए आतुर सैनिकों का सहयोग था। तीसरी बार रानी लक्ष्मीबाई को गिरफ्तार करने के लिए अंग्रेजों ने कालपी में हमला बोला। रानी लक्ष्मीबाई ने हमेशा की तरह इस बार भी अंग्रेजी सेना का डटकर मुकाबला किया। कई दिन युद्ध लड़ने के बाद जब अंग्रेजी तोपें कालपी किले को ध्वस्त करने की स्थिति में पहुँच गईं तो रानी लक्ष्मीबाई ने घुटने टेकने की बजाय सुरक्षित बच निकलना मुनासिब समझा। कालपी की लड़ाई में रानी लक्ष्मीबाई को तात्या टोपे की कमी भी अखर रही थी,

क्योंकि वे मदद मांगने के लिए ग्वालियर कोच कर चुके थे। हालांकि इस बार उनके सहयोग में बांदा के राजा थे। बांदा की रियासत पर अंग्रेजों का कब्जा होने के बाद नवाब अली बहादुर द्वितीय अपने थोड़े से सैनिको के साथ कालपी आ गए थे। उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया पर जब रानी लक्ष्मीबाई को लगा कि अब आगे की लड़ाई सुरक्षित नहीं है तो अपने बचे सैनिकों व बेटे के साथ 23 मई, 1858 को ग्वालियर के लिए रवाना हो गईं।

चुर्खी रियास का सहयोग: कालपी से ग्वालियर के लिए निकली लक्ष्मीबाई ने चुर्खी (जिला जालौन) में अपनी सौतेली बहन के यहाँ दत्तक पुत्र दामोदर राव को सुरक्षित छोड़ा और आगे की रणनीति तय करके ग्वालियर पहुँचीं। रानी लक्ष्मीबाई की माँ भागीरथी की मृत्यु के बाद उनके पिता मोरोपंत ने दूसरा विवाह किया था। उनकी दूसरी पत्नी की बेटी गोपिका चुर्खी में ब्याही थीं।

टूटा सेना का हौसला : रानी लक्ष्मीबाई को पकड़ने के लिए लगातार हो रहे हमले और कानपुर व इलाहाबाद से बुलाए गए अतिरिक्त ब्रिटिश सैनिकों की हलचल ने ग्वालियर स्टेट के सैनिकों में खलबली मचा दी। राजा ग्वालियर से मिले आश्वासन पर जून के पहले सप्ताह में रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर पहुँची। वे इस बार भी अंग्रेजों से दो-दो हाथ करने को आतुर थीं। 17 जून, 1858 की अलसुबह अंग्रेजों ने ग्वालियर में रानी लक्ष्मीबाई को घेर लिया। अंग्रेजी सेना के संख्या बल ने ग्वालियर के सैनिकों का हौसला तोड़ दिया। और वे पीछे हट गए, लेकिन लक्ष्मीबाई देश के लिए जान हथेली पर लेकर अंग्रेजों से कुछ सैनिकों के साथ मोर्चा लेती रहीं।

खूब लड़ी मर्दानी : एक तरफ लक्ष्मीबाई मर्दाना वेश में अपनी तलवार से दुश्मनों की गर्दन उड़ा रही थीं, तो दूसरी ओर अंग्रेज सैनिकों की बंदूके चल रही थीं। अंग्रेजों को हमेशा चुनौती देने वाली रानी लक्ष्मीबाई की सबसे बड़ी मुश्किल थी, उनके प्रशिक्षित घोड़े बादल का न होना। युद्ध में उतरे अंग्रेज कमांडर पुरुष वेश में लड़ रहीं रानी को पहचानने में नाकाम थे। दिनभर चले इस युद्ध में एक अंग्रेज सिपाही की तलवार के वार से रानी का आधा सिर कलम हो गया और वे युद्ध मैदान में गिर पड़ीं। शाम हो चुकी थी, इसलिए अंग्रेजी सेना ने भी कैंप वापसी की। रानी के बचे सैनिकों ने उसी रात रानी का अंतिम संस्कार कर दिया। प्राणों की आहुति देकर आजादी के रखवालों की प्रेरक बनीं लक्ष्मीबाई 18 जून, 1858 को शहीद हो गईं।

वर्तमान संदर्भ और समाज.....

विगत दीर्घावधि से संपूर्ण विश्व कोरोना संकट से ग्रस्त रहा है। भारी जन-धन हानि इस दौरान हुई और मानसिक संत्रास का वातावरण भी बना। विवशता वश हमें अपनी जीवनशैली में भी बदलाव लाना पड़ा जिससे कि हम व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में देख रहे हैं। कोरोना की जो गाइडलाइन दी गई है उसका परिपालन में हमारे जो मांगलिक कार्य आदि हुआ करते हैं उसमें सम्मिलित होने वालों की संख्या 50 या 100 तक सीमित कर दी गई है, समारोहों का समय भी निर्धारित कर दिया गया है, क्यों ना हम भविष्य में इसे स्थाई रूप से अपने समाज में लागू करें जिससे कि अनावश्यक व्यय व्यवस्था हेतु भागदौड़ समय की बजाय साफ सफाई स्वच्छता में सुविधा आदि का मार्ग प्रशस्त हो सके विशेष रूप जब हम इसके अभ्यस्त हो गए हैं तो यह स्वत: प्रचलन में आ सकता है।

पुन: श्व हमें अपने समाज के उत्थान के लिए शासन द्वारा जारी की गई कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए लोगों को जागरूक करना चाहिए। ताकि जिससे लाभान्वित होकर वे सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक रूप से सम्मानजनक रूप जीवन यापन कर सके। इसके लिए हमें विधायिका, कार्यपालिका एवं न्याय पालिका में अपना प्रतिनिधित्व आबादी के हिसाब से हो यह लक्ष्य तय करना होगा। जो एक मात्र जाति के नाम पर नहीं होगा, ओबीसी के जो राष्ट्र स्तरीय भागीदारी के अभियान चल रहे हैं उनसे जुड़कर स्वमेव हम उसमें भूमिका निभा सकते हैं।

प्रकाश मालवीय

राजनैतिक से भी अधिक नौकरियों (कार्यपालिका) में प्रतिनिधित्व पर जोर.....

आजकल व्हाट्सएप आदि पर यह सूचनाएं देखने को मिल रही है विज्ञापन आदि के माध्यम से भी यह प्रयास रहता है कि विभिन्न राजनीतिक दलों से हम भी आग्रह करते हैं कि हमारे समाज के लोगों को चाय पी रहे हो विधानसभा पंचायती राज विधानसभा संसद नगर निगम विभिन्न मंडलों में प्रतिनिधित्व की बात हम करते हैं और यह भी अनुभव रहा है कि जो हमारे समाज के लोग इस प्रकार के पदों पर पहुंचते हैं तो वे समाज की अपेक्षा के हिसाब से खरे नहीं उतरते हैं क्योंकि इसमें उनकी अपनी मजबूरियां होती है जिस पार्टी की वह नुमाइंदगी करते हैं उसके अनुसार उन्हें काम करना होता है यह बात सही है कि उनकी सिफारिश से कुछ काम होते जरूर है लेकिन जहां पर पूरे कलचुरि समाज के स्थान दिन की

बात है तो हम बहुत ज्यादा उन लोगों से उम्मीद नहीं रख सकते आज समाज के सामने सबसे बड़ी ज्वलंत समस्या है उच्च शिक्षण सस्थाओं में व्यवसायिक पाइयक्रमों में बहुत ही स्पध र्ा बढ़ गई इसके साथ ही पीएसी यूपीएससी राज्य और केंद्र सरकार की नौकरी बहुत कंपटीशन इनमें हमारे समाज के लोग अधिक से अधिक कैसे चयनित हो इसके लिए नेता लोगों की सिफारिश है शायद ही कारगर हो, अकेले कलचुरि कलार समाज के लोग भी यदि आबादी के नाम से आरक्षण की बात करें तो वह भी संभव नहीं हमारे समाज को के युवाओं को आगे बढ़ने के अवसर यदि मिल सकते हैं तो वह केवल ओबीसी के नाम पर मिल सकते हैं।

और यह जो सुविधा हमें मिली है उससे हमारे काफी कुछ लोग चयनित हो रहे हैं लेकिन वह OBC के नियमों अधिनियम ठीक से क्रियान्वयन नहीं होने के कारण यह संख्या सीमित सी हो गई है यदि इनका सही ढंग से पालन हो क्रियान्वयन हो तो यह लगभग निश्चित है कि आज की तुलना में हमारे समाज के दुगने अभ्यार्थी तृतीय श्रेणी से लेकर प्रशासकीय अधिकारियों के पद पर नियुक्ति पा सकते हैं जो कि और किसी माध्यम से संभव नहीं इन नियमों में काट काट कर के संभ्रांत वर्ग के लोग हम लोगों के लिए जो उपलब्ध हो अवसर वह स्वाभाविक रूप से उनके वर्ग के लोगों को दिलवाने में कामयाब हो रहे हैं इस अनियमितता को रोकने के लिए कई संगठन संस्थाएं संघर्षरत है हाई कोर्ट सुप्रीम कोर्ट में पिटीशन दायर की गई, हमें इस प्रकार के जो प्रयास हो रहे हैं उसमें सहभागिता निभाना चाहिए ताकि राजनीतिक क्षेत्र के साथ-साथ प्रशासनिक क्षेत्र में भी हम लोग जो आबादी के अनुपात में बहुत कम है उसमें सम्मानजनक स्थान पा सके और इसका एक मात्र उपाय ओबीसी के कायदे कानून को मजबूती दिलाना है तथा भविष्य में और भी उपयोगी नीतियां बन सके इस पर भी शासन का ध्यान आकृष्ट करना करना है इस दिशा में हम सभी को गंभीरतापूर्वक सूचना सोचना चाहिए।

व्हाट्सएप पर हम आए दिन देखते रहते हैं कि जिस आरक्षण से हमारे स्वजातियों को प्रशासन में प्रतिष्ठापूर्ण पद मिल रहे हैं, सम्मान सुविधा, राजनैतिक क्षेत्र में महत्व, शासकीय सेवाओं में नौकरियां आदि मिल रही है यदि यह ना होता तो वह सब उन्हें मिलती उसी की प्रतिक्रिया में तरह-तरह के एक मैसेज फारवर्ड हो रहे है और हम लोग उसे और फारवर्ड कर अपने आपको अगड़ा महसूस कर रहे है, जिससे कि समाज के जरूरतमंद लोगों का बहुत नुकसान हो रहा है।

प्रकाश मालवीय

पत्र मिला

श्री सहस्रबाहु कलचुरि महासभा (कलार समाज) भोपाल

हर्ष का विषय है कि मीनू जायसवाल जी के संपादन निर्देशन में जायसवाल जागृति के आगामी अंकों के प्रकाशन का दायित्व निर्वाह किया जायेगा। मध्य प्रदेश भोपाल से हम लोग विगत कुछ वर्षों से आपकी इस पत्रिका में समाचार संदेश आलेख इत्यादि प्रेषित करते रहे हैं, जो कि नियमित रूप से प्रकाशित भी किये गए। मैं स्वयं भी दिल्ली में जो **"जायसवाल जागृति"** का रजत जयंती समारोह मालवीय भवन दिल्ली में विगत वर्ष आयोजित किया गया था उसमें उपस्थित था। इस गरिमामय आयोजन में मेरा व्यक्तिगत संपर्क वयोवृद्ध कर्मठ जुझारू वरिष्ठ समाजसेवी श्री पन्नालाल जी जायसवाल, स्वर्गीय श्री राजाराम जी जायसवाल जागृति प्रध ान संपादक, श्री के.एन. गुप्ता कार्यकारी संपादक आदि से हुआ था। जिससे प्रत्यक्षत: विदित हुआ कि यह राष्ट्रीय पत्रिका निश्चित रूप स्वजातीय सामाजिक और साहित्यिक सरोकारों के दर्पण की तरह कार्य कर रही है। इतनी दीर्घ अवधि तक जारी प्रकाशन इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं।

भोपाल में भी समाज के सामुदायिक भवन **"कलचूरि भवन"** में साहित्य सामग्री संग्रहण एवं वितरण केंद्र की स्थापना की गई है। जिसमें कलचुरी वंश का इतिहास, वेद पुराण के संदर्भ ग्रंथ, देश के विभिन्न भागों में हमारे समाज के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्र पत्रिकाएं, विशेषांक, राज राजेश्वर भगवान श्री सहस्त्रबाहु जी की मूर्तियां, फ्रेम की हुई फोटो, कलचुरि ध्वज, प्रतीक चिन्ह आदि के संग्रहण वितरण विक्रय एवं अध्ययन केंद्र की स्थापना की गयी है। जो समाज बंधुओं के अवलोकन एवं अभिरूचि के अनुरूप यदि उन्हें क्रय करना तो उसके लिए भी उपलब्ध है। इसी में से कुछ प्रमुख पुस्तक-पुस्तिकायें:

Resergence of Kachuris
कलचुरि आदि से अब तक
भोपाल शहर की टेलीफोन डायरेक्टरी
श्री सहस्त्रबाहु की जीवनी पर आधारित प्रश्नोत्तरी
महासभा भोपाल द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका कलचुरियन कीर्ति

जायसवाल जागृति के आगामी अंकों के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाओं के साथ।

भवदीय

(प्रकाश मालवीय)
संपादक कलचुरियन कीर्ति
भोपाल (म.प्र.) मो.न. 9303134255

हिंदुओं जानो अपने धर्म और संस्कृति के बारे में

शेष पिछले अंक का

चार वेद-

ऋग्वेद, अथर्वेद, यजुर्वेद, सामवेद!

चार अंतःकरण-

मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार!

पञ्च देव-

गणेश, विष्णु, शिव, देवी, सूर्य,

पंच तत्त्व-

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश!

छह दर्शन-

वैशेषिक, न्याय, सांख्य योग, पूर्व मिसांसा, दक्षिण मिसांसा (वेदान्त)!

सप्त पुरी-

अयोध्या पुरी, मथुरा पुरी, माया पुरी (हरिद्वार), काशी, कांची (शिन कांची-विष्णु कांची), अवंतिका और द्वारिका पुरी!

आठ योग-

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि!

आठ लक्ष्मी-

आग्घ, विद्या, सौभाग्य, अमृत, काम, सत्य, भोग, एवं योग लक्ष्मी!

नव दुर्गा-

शैल पुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी एवं सिद्धिदात्री!

दस दिशाएं-

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, नैऋत्य, वायव्य, अग्नि, आकाश एवं पाताल!

मुख्य 11 अवतार-

मत्स्य, कच्छप, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, श्री राम, कृष्ण, बलराम, बुद्ध, एवं कल्कि!

बारह मास-

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, अषाढ, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फागुन!

बारह राशी-

मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन!

बारह ज्योतिर्लिंग-

सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ओमकारेश्वर, बैजनाथ, त्र्यंबकेश्वर, केदारनाथ, घुष्मेश्वर, भीमाशंकर, नागेश्वर!

पंद्रह तिथियाँ-

प्रतिपदा, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावास्या!

स्मृतियाँ-

मनु, विष्णु, अत्री, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अंगीरा, यम, आपस्तम्ब, सर्वत, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, शांख्य, लिखित, दक्ष, शातातप, वरिष्ठ!

हिन्दू धर्म की 10 महत्वपूर्ण बातें ...

1. 10 ध्वनियाँ: 1. घंटी, 2. शंख, 3. बांसुरी, 4. वीणा, 5. मंजीरा, 6. करतल, 7. बीन (पुंगी), 8. ढोल, 9. नगाड़ा और 10. मृदंग।

2. 10 कर्तव्य: 1. संध्यावंदन, 2. व्रत, 3. तीर्थ, 4. उत्सव, 5. दान, 6. सेवा, 7. संस्कार, 8. यज्ञ, 9. वेदपाठ, 10. धर्म प्रचार। आओ जानते हैं इन सभी को विस्तार से।

3. 10 दिशाएँ: दिशाएं 10 होती हैं जिनके नाम और क्रम इस प्रकार हैं उर्ध्व, ईशान, पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर और अधो। एक मध्य दिशा भी होती है। इस तरह कुल मिलाकर 11 दिशाएं हुई।

4. 10 दिग्पालः 10 दिशाओं के 10 दिग्पाल अर्थात द्वारपाल होते हैं या देवता होते हैं। उर्ध्व के ब्रह्मा, ईशान के शिव व ईश, पूर्व के इंद्र, आग्नेय के अग्नि या वह्नि, दक्षिण के यम, नेऋत्य के नऋति, पश्चिम के वरुण, वायव्य के वायु और मारुत, उत्तर के कुबेर और अधो के अनंत।

5. 10 देवीय आत्माः 1. कामधेनु गाय, 2. गरुढ़, 3. संपाति-जटायु, 4. उच्चैःश्रवा अश्व, 5. ऐरावत हाथी, 6. शेषनाग-वासुकि, 7. रीझ मानव, 8. वानर मानव, 9. येति, 10. मकर।

6. 10 देवीय वस्तुएंः 1. कल्पवृक्ष, 2. अक्षयपात्र, 3. कर्ण के कवच कुंडल, 4. दिव्य धनुष और तरकश, 5. पारस मणि, 6. अश्वत्थामा की मणि, 7. स्यंमतक मणि, 8. पांचजन्य शंख, 9. कौस्तुभ मणि और संजीवनी बूटी।

7. 10 पवित्र पेयः 1. चरणामृत, 2. पंचामृत, 3. पंचगव्य, 4. सोमरस, 5. अमृत, 6. तुलसी रस, 7. खीर, 9. आंवला रस।

8. 10 महाविद्याः 1. काली, 2. तारा, 3. त्रिपुरसुंदरी, 4. भुवनेश्वरी, 5. छिन्नमस्ता, 6. त्रिपुरभैरवी, 7. धूमावती, 8. बगलामुखी, 9. मातंगी और 10. कमला।

9. 10 उत्सवः नवसंवत्सर, मकर संक्रांति, वसंत पंचमी, पोंगल, होली, दीपावली, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, महाशिवरात्री और नवरात्रि।

10. 10 बाल पुस्तकेंः 1. पंचतंत्र, 2. हितोपदेश, 3. जातक कथाएं, 4. उपनिषद कथाएं, 5. वेताल पच्चिसी, 6. कथासरित्सागर, 7. सिंहासन बत्तीसी, 8. तेनालीराम, 9. शुकसप्तति, 10. बाल कहानी संग्रह।

11. 10 पूजाः गंगा दशहरा, आंवला नवमी पूजा, वट सावित्री, तुलसी विवाह पूजा, शीतलाष्टमी, गोवर्धन पूजा, हरतालिका तीज, दुर्गा पूजा, भैरव पूजा और छठ पूजा।

12. 10 धार्मिक स्थलः 12 ज्योतिर्लिंग, 51 शक्तिपीठ, 4 धाम, 7 पुरी, 7 नगरी, 4 मठ, आश्रम, 10 समाधि स्थल, 5 सरोवर, 10 पर्वत और 10 गुफाएं।

13. 10 पूजा के फूलः आंकड़ा, गेंदा, पारिजात, चंपा, कमल, गुलाब, चमेली, गुड़हल, कनेर, और रजनीगंधा।

14. 10 धार्मिक सुगंधः गुग्गुल, चंदन, गुलाब, केसर, कर्पूर, अष्टगंध, गुढ़-घी, समिधा, मेहंदी, चमेली।

15. 10 यम-नियमः 1. अहिंसा, 2. सत्य, 3. अस्तेय, 4. ब्रह्मचर्य और 5. अपरिग्रह। 6. शौच 7. संतोष, 8. तप, 9. स्वाध्याय और 10. ईश्वर-प्राणिधान।

16. 10 सिद्धांतः

1. एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति (एक ही ईश्वर है दूसरा नहीं),
2. आत्मा अमर है,
3. पुनर्जन्म होता है,
4. मोक्ष ही जीवन का लक्ष्य है,
5. कर्म का प्रभाव होता है, जिसमें से कुछ प्रारब्ध रूप में होते हैं इसीलिए कर्म ही भाग्य है,
6. संस्कारबद्ध जीवन ही जीवन है,
7. ब्रह्मांड अनित्य और परिवर्तनशील है,
8. संध्यावंदन-ध्यान ही सत्य है,
9. वेदपाठ और यज्ञकर्म ही धर्म है,
10. दान ही पुण्य है।

।। हरे कृष्णा हरे कृष्ण
कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।
।। हरे राम हरे राम
।। राम राम हरे हरे।।

इस जानकारी को अपने बच्चों को भी बतायें। जिससे उनको हमारी संस्कृति का ज्ञान हो।

।। जय श्री कृष्ण।।
जय हनुमान

जायसवाल जागृति

आजीवन सदस्यता आवेदन पत्र

1. पूरा नाम .....

2. शैक्षिक योग्यता .....

3. आवासीय पता .....

.....

.....

पिन कोड :.....

फोन : .....

4. व्यवसाय / कार्यालय .....

.....

.....

पिन कोड :..... फोन/मो. : .....

5. विशेष सामाजिक कार्य

प्रस्तावक :

आवेदक के हस्ताक्षर

अनुमोदक (महामंत्री)-M. 9810528057

आजीवन सदस्यता शुल्क : रू : 1500/-

भुगतान विधि : चेक, ड्राफ्ट, ऑनलाइन

जायसवाल जागृति खाता विवरण :-

Axis Bank खाता संख्या 015010100247337, IFSC UTIB 0000015

ONLINE भुगतान के तुरंत बाद

जुकाम और खांसी, रोग नहीं रोग का लक्षण

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार सर्दी जुकाम और खांसी कोई बीमारी नहीं अपितु रोग का प्रारंभिक लक्षण है। अक्सर सर्दी-जुकाम 3 दिन रहता है और इस प्रकृति प्रदत्त शुद्धिकरण प्रक्रिया से शरीर में जमे विकार पैदा करने पदार्थ बाहर निकल जाते है। परंतु अधिक दिन तक सर्दी-जुकाम शरीर को हानि पहुंचाता है। लेकिन योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा से इसे ठीक करना चाहिए। एलोपैथिक और एंटीबायोटिक दवाओं से हमें बचना चाहिए, क्योंकि बाद में इनके दुष्परिणाम निकल कर आते है। विकार पैदा करने वाले पदार्थों का बाहर निकालना निकलना ही उचित है। इन्हे शरीर में दबाना ठीक नहीं है। ऋतु परिवर्तन के समय प्राय: सर्दी, जुकाम, खांसी की शिकायतें बढ़ जाती है। ठंड में इसका प्रकोप अधिक होता है। यदि आप नित्य योगाभ्यास करते हैं, अपने खान-पान और जीवनशैली का ध्यान रखते हैं तो आप हमेशा इन परेशानियों से बचे रहेंगे। सर्दी-जुकाम तो कभी और किसी को भी हो सकता है, पर यदि यह आपको बार-बार सता रहा है तो आपका शरीर यह बताने का प्रयास कर रहा है कि आपकी रोगप्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो रही है और अपने ऊपर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

लापरवाही के कारण जो लोग साधारण सर्दी-जुकाम को लंबे समय तक नजर अंदाज करते रहते हैं, बाद में यही जुकाम बिगड़ने पर निमोनिया, ब्रोंकाइटिस, दमा तथा टीवी का रूप ले लेता है।

कारण: सर्दी- जुकाम, खांसी के वैसे तो कई कारण हो सकते हैं। उनमें से एक है प्रदूषण। साथ ही गरिष्ठ आहार, अम्ल प्रधान पेय पदार्थ, अधिक चाय, काफी एवं धूम्रपान, कब्ज बने रहना या पेट साफ नहीं होना एक प्रमुख कारण है। ठंढ के समय में अधिक गर्म पानी से नहाना, हमेशा बहुत सारे गर्म कपड़े पहने रहना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। इससे त्वचा कमजोर पड़ जाती है, सर्दी सहन नहीं हो पाती जिससे जुकाम हो जाता है।

सर्दी-जुकाम, खांसी में दूध, और चावल का सेवन बंद कर देना चाहिए। वायु प्रदूषण से बचने के हर उपाय करने चाहिए।

गाजर का रस, मौसमी फल, अंकुरित अनाज व सलाद का अधिक से अधिक सेवन करना चाहिए।

योग उपचार: भस्त्रिका प्राणायाम सूर्यभेदी प्राणायम 2 से 5 मिनट, जलनेति क्रिया, कुंजल, नाड़ी शोधक प्रणायाम 5 से 10 मिनट, सूर्य नमस्कार 6 से 12 बार, कपालभाति क्रिया 2 से 5 मिनट, अग्निशार क्रिया 2 से 5 मिनट, शशांक आसन 5 से 10 बार, प्रश्चिमोत्तानासन 6 से 12 बार, कोणासन 6 से 10 बार, उश्ट्रासन 6 से 12 बार, शलभासन 6 से 12 बार, धनुरासन 5 से 10 बार, मत्स्यासन 5 से 10 बार। हरेक प्राणायम, आसन व क्रिया में समय, संख्या व ठहराव का चुनाव अपनी क्षमतानुसार ही करें। जो यागाभ्यास आपने पहले नहीं किया है उसे केवल उचित मार्गदर्शन में ही करें।

घरेलू उपचार: आधा चम्मच शहद, आधा चम्मच नींबू का रस मिलाकर सुबह, दोपहर, शाम ले सकते है अथवा आधा चम्मच अदरक का रस और आधा चम्मच नींबू का रस दिन में तीन बार ले सकते है। बिना किसी दुश्परिणाम के शीघ्र लाभ होगा। योग के साथ-साथ प्राकृतिक चिकित्सा एवं तीन दिन का सात्विक उपवास काफी लाभप्रद है। सात्विक उपवास अर्थात् केवल जलाहार, रसाहार, फलाहार का ही सेवन बिना नमक व बिना अग्नि पर पकाया हुआ।

आचार्य कृष्ण देव
योग विशेषज्ञ

ज़िन्दगी की क्या परिभाषा?

बड़ी विचित्र है ज़िन्दगी
लहरों सी मचलती ज़िन्दगी
निश्छल चंचल सी ज़िन्दगी
हर नये कदम पर
ख्वाहिशें बदलती ज़िन्दगी
कभी इम्तिहान लेकर
मुस्कराती ज़िन्दगी
कभी सवाल करती खुद
कभी जवाब बनती ज़िन्दगी
कभी बारिश की रिमझिम
कभी मरुस्थली रेत सी
फिसलती ज़िन्दगी
कभी शिकायत करती ज़िन्दगी
कभी रूठ जाती ज़िन्दगी
भागती दौड़ती सी ज़िन्दगी
कोई खेल नहीं है ज़िन्दगी
जियो ज़िंदादिली से
*इसी का नाम है ज़िन्दगी

चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा

वर्षा ऋतु के आगमन का संदेश लेकर उपस्थित होता है आषाढ़ का महीना। आषाढ़ के बादल जड़-चेतन-अचेतन संपूर्ण प्राणियों के जीवन में अपना प्रभाव डालते हुए आकाश में छा जाते हैं। जेठ की गर्मी से तपती वसुंधरा का नन्ही-नन्ही बूंदों से अभिषेक करते हुए आषाढ़ के आगमन के साथ ही प्रकृति का रंग बदल जाता है। प्रकृति हरी हो उठती है। पेड़-पौधे आंखों को ठंडक देने लगते है। बदलाव के इस मोहक सौंदर्य ने कवि और कलाकार सभी को सदा से आकर्षित किया है। कालिदास ने कभी आषाढ़ के मेघ से यक्ष की विरहिणी को प्रेम संदेश भिजवाया था- 'आषाढ़स्य प्रथमदिवसे मेघाश्लिष्टसानुं वप्रक्रीडापरिणगजप्रेक्षणीयं ददर्श।'

ऐसे में रीतिकाल के प्रेम मार्गी सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी का प्रसिद्ध बारहमासा सहज ही स्मरण हो आता है-

'चढ़ा असाढ़, गगन घन गाजा, साजा बिरह दुंद दल बाजा। सावन बरस मेह अति पानी, मरन परीं हौं विरह झुरानी। भरि भादौं दुपहर अति भारि, कैसे भरों रयनि अंधियारी। मंदिर सून पिय अंतही बसा, सेज नाग भई दहि डसा।।'

थम जाती थी दुनिया सारी

आषाढ़ माह से ही चतुमांस प्रारंभ हो जाता है। यह चार महीने की अवधि है जो आश्विन शुक्ल एकादशी तक चलती है। वर्षा ऋतु के चार महीने है- आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और अश्विन। ग्राम समाज में और आम बोलचाल में इसे चौमासा कहते हैं। वर्षा आरंभ होते ही नदी, ताल-तलैया, पोखर, खेत-खलिहान, मार्ग सब जलमग्न हो जाते हैं। पुराने समय में सड़कों की ऐसी सुविधा न थी और न ही पक्के घर थे। ऐसे में कृषि-व्यापार आदि सभी कार्यों की गति मंद पड़ जाती थी। इसलिए इस अवधि में यात्राएं बंद हो जाती थीं। आषाढ़ में ही देवता शयन करने चलने जाते हैं और उठते हैं चार मास बाद देवोत्थानी एकादशी को। चूंकि यात्राएं बंद हो जाती थीं तो संभवतः इन्हीं कारणों से चौमासा गायन की परंपरा उपजी होगी। एक मार्मिक चौमासा में चार महीनों के वर्णन के माध्यम से स्त्री ने अपने सामाजिक परिदृश्य का ऐसा सहज सजीव वर्णन किया है कि पढ़कर आंखें छलक आती हैं-

'पहला मास आसाढ़, बरखा भई है अपार गोदी नाही मोरे बाल केकर करूं इंतिजार दूजे सावन झड़ी लागे पिया पाती न पठावे झूला हम्मे के झुलाई पार के करी उमरिया तीजे भादौ की अंधियारी नइहर बाप न महतारी भइया बसे ससुरारि घूमिल हुई गई रे पियंरिया चौथा मास कंवार पिया मोरे बनिजार जी में आवे न करार पार के करी उपरिया।'

अन्नदाता का उत्सव

आषाढ़ का महीना मानव जीवन से लेकर कृषि जगत तक के जीवन में बदलाव की एक नई शुरूआत का प्रतीक है। फिलहाल की परिस्थितियों को नजरअंदाज कर दें तो विद्यालय से लेकर खेत तक आषाढ़ में खुलते हैं। यदि मैं इस प्रकार कहूं तो गलत न होगा कि आषाढ़ का महीना हमारे अन्नदाताओं के लिए एक उत्सव है। आषाढ़ की बूंदों का असली स्वागत तो किसान करता है। इसी समय धान की बुआई होती है, अतः किसान समाज बड़ी आतुरता के साथ आसमान में काले बादलों की प्रतीक्षा करता है। रिमझिम बरसते मेघों में भीगते हुए किसान का पूरा परिवार धान की

रोपाई में समर्पित होता है। रोपाई के एक सुंदर गीत में इस उमंग को अनुभूत किया जा सकता है-

'रिमझिम बरसत पनिया आवा चली धान रोपे ध निया,

लहरत बा तलवा म पनिया, आवा चली रोप ध निया,

झंझरे गेंडुवा गंगाजल पनिया पिया का घुटावैं आई धनिया।

धान रोपि कै जब घर अयों, नाच्यों गायों खुसी मनायों,

भरि जइहें कोठिला ए धनिया आवा चलि धान रोपे धनिया।'

अर्थात रिमझिम पानी बरस रहा है प्रिये, आओ चलें धान रोप आएं। तालाब में पानी लहरा रहा है, सोने की थाली में प्रिया भोजन परोसकर प्रिय को भोजन कराने खेत में पहुंची है, झंझर गेडुवे में जल लेकर पानी पिलाने पहुंची। धान रोपकर जब दंपती घर आए तो नाच-गाकर प्रसन्नता व्यक्त की, इस आशा से कि सभी कोठिले धान से भर जाएंगे। इस मौसम में पानी भरे खेतों में कमर तक झुककर ध ान की रोपाई करती परिश्रमी महिला किसानों का दृश्य अत्यंत मनोहारी दिखता है। एक अनुशासन में बंधी हुई, रोपाई के गीत गाती हुई प्रसन्न स्त्रियां, देवी स्वरूपा ही लगती हैं। इन गीतों में दैनिक जीवन के सुख-दुख तथा गृहस्थी के जीवन का यथार्थ चित्रण रहता है। खलिहानों एवं कठिन श्रमसाध्य कार्यों का भी वर्णन रहता है। एक गीत देखिए-

'छत्तीस कोसे खेत बसेला ना
दइया छत्तीसों लगले हरवहवा रे ना।
दइया छत्तीसों लगले चरवहवा रे ना
कंगला के धीयवा कवन देई ना
दइया सुप लेले जाली खरिहनवा रे ना।'

आज भी सटीक वे कहावतें

आषाढ़ में खान-पान के भी अनेक नियम बताए गए हैं। बादी वाला भोजन निषेध कहा गया है। ठंडी चीजों और दिन में सोने की भी मनाही है। इनसे कफ बनता है और इसीलिए बरसात के मौसम में आयुर्वेद कड़े नियम पालन की अपेक्षा करता है। इन दिनों बिना चिकनाई वाला भोजन उत्तम बताया गया है। सदियों पहले न टीवी, रेडियो थे और न सरकारी मौसम विभाग। ऐसे समय में पीढ़ियों के अनुभव की कसौटी पर टिका कृषि विज्ञान अत्यंत सटीक ज्ञान है जिनमें सबसे अधिक योगदान कृषि संबंधी कहावतों, मुहावरों और दोहों का है, जिन्हें स्मरण कर आज भी किसान खेती करते हैं। इसमें विशेष योगदान महान किसान कवि घाघ व भड्डरी की कहावतों का है जो लंबे समय से खेतिहर समाज का पथप्रदर्शन करती चली आ रही है। कृषि विद्वान मानते है कि एक बार को मौसम वैज्ञानिक गलत साबित हो सकते हैं, लेकिन घाघ की कहावतें कभी नहीं। आषाढ़ में बुआई का भी शुभारंभ होता है। गेहूं की पैदावर के बारे में घाघ कहते हैं-

'गेहूं भवा काहें।
असाढ़ के दुइ बाहें।।
गेहूं भवा काहे।
सोलह बाहें नौ हेंगाहें।।
गेहूं भवा काहे।
कातिक के चौबाहें।।'

यानि गेहूं की पैदावार अच्छी कैसे होती है। आषाढ़ महीने में दो बांह जोतने से, कुल 16 बार करने से और नौ बार हेंगाने अर्थात खेत की मिट्टी को बराबर करने से कातिक में बोआई करने से पहले चार बार जोतने से गेंहू की पैदावार अच्छी होती है। एक अन्य उदाहरण है-

'अषाढ़ मास आठें अंधियारी,
जो निकले बादर जलधारी।
चंदा निकले बादर फोड़
साढ़े तीन मास बरखा का जोग।'

अर्थात असाढ़ बदी अष्टमी को अंधकार छाया हुआ हो और चंद्रमा बादलों को चीरकर निकले, तो बड़ी आनंददायिनी वर्षा होगी, साढ़े तीन मास वर्षा होती रहेगी।

एक जगह वे कहते हैं-

'दसै असाढ़ी कृष्ण की, मंगल रोहिनी होय,
सस्ता धान बिकाइ हैं, हाथ न छुइहे कोय।।'

यदि आषाढ़ माह कृष्ण पक्ष दशमी को मंगलवार और राहिणी नक्षत्र पड़े, तो धान इतना सस्ता बिकेगा कि कोई हाथ से भी न छुएगा।

प्रेम में भीग जाता मन

रिमझिम फुहारों के स्वागत के साथ ही कजरी गायन आरंभ हो जाता है। मस्त मगन किसान कजरी गाकर प्रकृति को मनाते हैं। हरी-भरी निखरी प्रकृति का आनंद स्त्री-पुरुष सभी को अंदर तक भिगो देता है। धान लगे खेत ऐसे लगने लगते हैं जैसे ध रती ने धानी चुनरिया ओढ़ ली हो। झूला हिडोला कजरी की तानें घर-घर गूंजने लगती हैं-

'हरी हरी भीगे चूनर मोरी धानी,
बरस रहे पानी रे हारी।
बादर गरजे चमके बिजुरिया रामा,
नहीं आए सैयां मोर तरसे उमरिया रामा।
हरी हरी काहे करत मनमानी
बरस रहे पानी रे हरी।'

कहीं किसी घर में परदेसी पति घर से निकलने से पहले अपनी प्रिया से अनुमति मांगता है, पति-पत्नी के रोचक संवाद की झलक इस कजरी में देख कौन न प्रेम में भीग जाएगा-

'रूनझुन खोल ना केबड़िया,
हम बिदेसिया जइबो ना।
जो मोरे सैयां तुहू जइबा बिदेसवा,
तू बिदेसवा जइबा ना।
हमरा भइया के बोला द,
हम नइहरवा जाइबो ना।'

देवताओं को समर्मित मास

यह मास धार्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इसके प्रथम दिन खड़ाऊं छाता, नमक तथा आंवले का दान दिया जाता है। आषाढ़ शुक्ल पक्ष की सप्तमी को वैवस्वत सूर्य की पूजा होती है जो पूर्वाषाढ़ को प्रकट हुए थे। आषाढ़ी पूर्णिमा का चंद्रमा बेहद पवित्र माना गया है। यदि पूर्णिमा के दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्र हो तो अतिउत्तम माना जाता है। आषाढ़ मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी को योगिनी एकादशी कहते हैं। विष्णु एकादशी के दिन से देवी-देवता शयन करने चले जाते हैं। देवी-देवताओं के चार माह तक विश्राम में जाने की अवधि तक मांगलिक कार्य वजिंत रहते है। चार माह बाद कार्तिक शुक्ल एकादशी के देवता शयन से उठेंगे। इसे देवउठान एकादशी कहा जाता है। देवउठान एकादशी के बाद फिर विवाह लग्न प्रारंभ हो जाते हैं। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन लोग अपने गुरु के पास जाते है तथा उन्हें पुष्प, फल, वस्त्र आदि अर्पित करते हैं।

आषाढ़ में आकुल कौशल्या के आतुर नयनों का यह वर्णन हृदयगम करने वाला है-

'असाढ़ मास घन गरजत घोर
रटत पपीहा कुहुकत मोर
खड़ी कौसल्या अवधपुर धाम
लखन सिया राम खड़े तरुवर तर
सावन में बरसे घन नीर
कैसे धरें कौसिल्या धीर।'

कुर्यात् सदा मंगलम्

नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य हैं। बेहतर होगा यदि आप या तो दो मोबाइल नं. दें अथवा एक मोबाइल और एक लैंडलाइन टेलीफोन नम्बर भी अवश्य दें।

वैवाहिकी

नोटः सदस्यों/पाठकों की सुविधा हेतु 'वैवाहिकी' को अंग्रेजी अल्फाबेट्स के क्रम में अर्थात अभिभावकों के नामों के अनुसार (वर्णक्रमानुसार) संकलित/वर्गीकृत किया गया है। मांगलिक एवं सामान्य वर्ग को अलग-अलग शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया गया है।

'वैवाहिकी' शुल्क

प्रत्येक अभिभावक / विज्ञापनदाता से अंतिम पृष्ठ पर ग्राहक / सदस्यता के लिए दर्शाए गए 1500/ रु. के शुल्क में वैवाहिक विज्ञापन के प्रकाशन का शुल्क शामिल है। पत्रिका की एक प्रति उन्हें भेजी जाएगी। सुधी एवं सम्मानित विज्ञापनदाताओं से यह भी आग्रह है कि वे पत्रिका में विज्ञापन के जरिए विवाह तय होने पर मंगल-निधि के रूप में अपनी सामर्थ्य के अनुसार यथेष्ट सहयोग राशि भेजने की कृपा अवश्य करें, क्योंकि इस स्तर की पत्रिका के प्रकाशन पर संस्था को आर्थिक व्यय का भार भी वहन करना पड़ता है।

विवाह सम्बन्ध तय हो जाने पर प्रधान/कार्यकारी संपादक महोदय को सम्बन्धित क्रम संख्या का हवाला देते हुए टेलीफोन अथवा कोरियर द्वारा पत्र भेजकर तुरंत सूचित करें। सदस्यता शुल्क अथवा विज्ञापन की राशि नीचे दिए गए पते पर भेजें। हमारे **AXIS Bank** के **A/C No.** 0150101-00247337 **IFSC-UTIB-0000015** में सीधे जमा कराके हमें तदनुसार सूचित करें। स्मरण रहे, **Net-Banking** द्वारा जमा की गई राशि की रसीद या उसकी प्रतिलिपि सलंग्न करना नितान्त अनिवार्य है।

'विशेष सूचना'

''वैवाहिकी स्तम्भ'' के अंतर्गत 'मांगलिक वर्ग' एवं 'सामान्य वर्ग' के अतिरिक्त एक तीसरा वर्ग *''तलाकशुदा (Divorcee) विधुर, विधवा आदि अन्य वर्ग''* भी आरम्भ किया गया है। हालांकि हमारी दृढ़ मान्यता है कि परिवारों में यह नौबत किसी भी स्थिति में आनी ही नहीं चाहिए। हर स्थिति में विवाह की पवित्र संस्था का प्रत्येक पक्ष को सम्मान देते हुए उसे बरकरार रखना चाहिए। किंतु देखा गया है कि कहीं मिथ्या दंभ व **Ego** के कारण तो कहीं अन्य अपरिहार्य कारणों से अलगाव प्रत्येक पक्ष के लिए अवश्यम्भावी हो जाता है। अतः जीवन के बिखरे सूत्रों को नए सिरे से पिरोना भी अनिवार्य हो जाता है। इसलिए इस विशेष वर्ग की आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह वर्ग आरंभ किया गया है। यदि कोई सज्जन अपना या लड़के-लड़की का नाम गोपनीय रखना चाहते हैं तो इसकी भी व्यवस्था की जा सकती है। ऐसे बंधुगण या तो हमसे या फिर संबंधित क्रमांक विशेष के टेलीफोन नम्बर से सम्पर्क कर सकते हैं। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः''। अस्तु।

आजकल समाज का एक बड़ा वर्ग प्रोफेशनल कारणों से विदेशों में स्थायी या अस्थायी रूप से बस गया है। इनकी ओर से भी अपने संतानों के वैवाहिक सम्बन्ध के लिए हमारे पास पूछताछ हो रही है। अतः इस वर्ग विशेष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनिवासी भारतीय **(NRI)** वर्ग स्तंम्भ आरंभ किया गया है।

विशेष सूचनाः जिन वैवाहिक विज्ञापनदाताओं का विज्ञापन पिछले तीन वर्षों से लगातार प्रकाशित किया जा रहा था, उनके वैवाहिक विज्ञापन अब प्रकाशित नहीं किए जा रहे हैं। अतः ऐसे जो भी विज्ञापन-दाता पुनः आगे भी अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित कराने के इच्छुक हैं, वे कृपया हमारे कोषाध्यक्ष श्री माखन चौधरी से तुरंत सम्पर्क करके **M-9911213033/9650998902** *एवं 1500/-रु. का शुल्क अदा करके विज्ञापन पुनः प्रकाशित करवाने का कष्ट करें।*

राशि रेखांकित चेक, रेखांकित बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा ''जायसवाल जागृति'' के नाम से देय होना चाहिए। शुल्क भेजते समय अपना पूरा पता, पिन कोड आदि स्पष्ट लिखें ताकि पत्रिका आपको नियमित रूप से मिलती रहे। विशेषः- जिन सज्जनों को डाक से पत्रिका प्राप्त करने में असुविधा हो रही हो, वे कृपया 200 रु. (दो सौ रुपये) वार्षिक शुल्क अलग से प्रेषित कर कोरियर अथवा ***Regd. Post*** *द्वारा पत्रिका मंगवा सकते हैः-*

-संपादक

(कृपया वैवाहिकी सहयोग के लिए अन्तिम पृष्ठ देखें)

अनिवासी भारतीय (NRI) वर्ग

1. अभिभावक-Anil Kumar Jaiswal (Engineer), Prop. Shubham Builders, H.No. 2708, DLF City, Phase-IV, Gurugram, (Near Galaria Market Shopping Complex), M.9811663284, (0124) 2386815

   पुत्र-Abhimanyu Jaiswal, DOB, 27 January 1994, 5'9", MBA Finance (New York USA) Noridian Healthcare Solution, LIC Compensation Consultant, House: West FARGO, North Dakoota, U.S. Phone: (940) 3909979
2. अभिभावक-डा. देवेन्द्र कुमार जायसवाल (बहरीन के अस्पताल में डॉक्टर) माताजीः प्रीति जायसवाल (बहरीन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की लेक्चरर) फोन न.-91. 9871971380, (+973) 5393228 बहरीन) कोठी **C-**

565 NRI City, Sector Omega-II, Greater Noida, U.P. प्रतिष्ठित परिवार, अधिकांश दिल्ली में

पुत्री–नेहा जायसवाल, जन्मतिथि–23-8-1994, 5'2", साफ रंग गेहुँआ, Doing Master in Computer System in Australia (Final Semester).

3. **अभिभावक :** श्री मनोज कुमार गुप्ता, (Sr. Sec. Officer Afcs) 1240/C-5 प्रीत विहार, चाणक्य अपार्टमेंन्ट के सामने आदर्श नगर, नमोदा रोड, जबलपुर-482001 (मध्यप्रदेश), Ph: 09752418123, 8349231125 **पत्र व्यवहार का पता:** श्री श्रीराम जायसवाल Retd SP/CBI, 10 शांति निकेतन, 89, नर्मदा रोड, जबलपुर (म.प्र.)-482001

पुत्र : सोमेश कुमार, 22-4-1991, (5:10 AM, जबलपुर) 5'6", सुन्दर स्मार्ट, B.Tech. MS(CS), मोर्गन स्टेनली में Technical Associate, न्यूयार्क (अमेरिका) पैकेज 1 लाख डॉलर +बोनस।

मांगलिक वर्ग

A1. **अभिभावक :** श्री अनिल कुमार जायसवाल (Retd Judge) गोरखपुर, 215-एन-19, विकास नगर आवासीय कालोनी, खेतान अस्पताल के पीछे तथा झूलेलाल मंदिर के निकट पो. एवं जिला गोरखपुर-273007 (उ.प्र.)M: 8009243232, 08174987887

पुत्र : आदित्य, 9-1-1986, (गौरखपुर-उ.प्र.) मांगलिक 5'11" गोरा, LLB (दिल्ली), उ.प्र. सिविल जज (न्यायधीश) हेतु सुंदर सुशील गोरी शालीन बधू अपेक्षित।

पुत्री : संजना जायसवाल, 10-5-1988, (गोरखपुर-11.16 दिन में) 5'3" गोरी, MBA (HR) बैंक ऑफ बड़ोदा में आफिसर हेतु सरकारी बैंक प्रतिष्ठित मल्टीनेशनल कं. में अधिकारी पद पर कार्यरत सुयोग्य वर अपेक्षित।

2. **अभिभावक :** श्री बलजीत कुमार जायसवाल 5/सी, एवन कालोनी, नवीन नगर, सहारनपुर (उ.प्र.)-247001 M: 9412453810

पुत्र : डॉ. कमल जायसवाल (आंशिक मांगलिक), 5'8", 15-9-87, गेहुंआ, B.P.T, MPT (Neuro physiothe rapist नोएडा स्थित Health Care Comp. Pvt में कार्यरत, पैकेज 5 लाख रुपये वार्षिक।

3. **अभिभावक :** मदन लाल जायसवाल, पीठ बाजार, ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तराखण्ड)-249407, (M) 9012654987

पुत्री : ज्योति जायसवाल (मंगली), 14-8-1989 5'4", एम कॉम, बेसिक कम्प्यूटर, दिल्ली।

4 **अभिभावक: राजकिशोर जायसवाल**, A-106/1, Fourth Floor, Joshi Colony, I.P. Extension, Delhi-110092, Mob-9717546924, 9810950426

पुत्री (1)- रीतू जायसवाल (मांगलिक) 11-8-1990, 4'9", colour Normal, B.com (Hons) CA (Inter)

पुत्री (2)- अल्का जायसवाल (आंशिक मांगलिक) 2-10-1992, 4'9", colour wheatish, B.Com (Hons), CA (Foundation)

5. **अभिभावक- श्रीमती अन्नपूर्णा गुप्ता पत्नी स्व. श्री संतोष कुमार गुप्ता**, म. नं. 1306, गली नं. 23, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, वैस्ट करावल नगर, दिल्ली-110094, M.-9818289471, 011-22933951

पुत्री- सृष्टि (मांगलिक), जन्म 30-9-1989, जन्म समय शाम 6:00 बजे दिल्ली में, 4'10" गोरी, बी.ए., मास्टर डिग्री माँश कमनिकेशन, रेडियो, टी.वी. जनर्लिज्म डिप्लौमा, सर्विस Asst. Managar Marketing, Salary 20,000 P.M.

6. **अभिभावक: विजयकुमार जायसवाल**-टिम्बर मर्चेन्ट, सी-94/1, चन्द्रपुरी, चांदबाग, भजनपुरा रेडलाइट के पास, दिल्ली-110094 फोन नं. 09999285302

पुत्री-मेघा, (मांगलिक) जन्मतिथि-04 अगस्त 1989, 7 बजे सायं (दिल्ली), साफ रंग, 5 फिट 2 इंच, शिक्षा-**सी.ए., एम. बी.ए.** प्राइवेट कम्पनी ओखला, दिल्ली में कार्यरत, पैकेज 10-12 लाख वार्षिक। स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

7. **अभिभावक :** अनिल कुमार जायसवाल, 41/1-A/1 गली.14, ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली-110054, M: 9210705572

पुत्र (1) : हिमांशु जायसवाल **(मांगलिक)**, B.A. 5'8" जन्म 17-2-1993 (9.30 AM, Delhi) गोरा, प्रो. मयंक एंटरप्राइस (Ladies garments & Accessories) तथा Lace के होलसेल व्यवसायी। **आय-2 लाख रुपये मासिक।**

पुत्री (2) : आकांक्षा **(मांगलिक)**, 5'3" जन्म 17-2-1993 (9.05 AM Delhi) गोरी, MBA (final) from DU.

8. **अभिभावक :** श्री जुगल किशोर जायसवाल (व्यवसायी) मण्डी चौक, विकासनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड)

पुत्री : स्वप्निल जायसवाल, (आंशिक मांगलिक) M.Tech (Comp. Sc), 5'4", 26-10-1989, (8.35AM, देहरादून) MNC नोएडा में कार्यरत, पैकेज 2.50 लाख रुपये।

9. **अभिभावक–**श्री मेधाव्रत जायसवाल (Gift shop business) जायसवाल होम अप्लायेसेस, 171, ठठेरी बाजार, सुल्तानपुर **फोन न.–**8090242532, 8765770123 (whtsapp) 8896404464, 9208747409

पुत्र–अनुदीप जायसवाल **(मांगलिक)**

जन्मतिथि–12-9-1980, (खंडवा, म.प्र.) 5'8', M.C.A. Sr. Software Engr. in Nokia solutions and Network Noida, He wishes to settle in Delhi, पैकेज 18 लाख

10. **अभिभावक–**श्री शिव प्रसाद जायसवाल (दिल्ली सरकार में Class-I अधिकारी) पता–391 F, पॉकेट-2, फेज-I, मयूर विहार, दिल्ली-110091(011)-22753484, **फोन न.–** 9599959013

पुत्र–अप्रतिम जायसवाल (मांगलिक) जन्मतिथि–4-8-1992, (8.03 PM इलाहाबाद) 6'1', गेहुआ B.Tech, fidelity International, नोएडा में कार्यरत, पैकेज 10 लाख।

11. **अभिभावक**-श्री तेज नारायण जायसवाल (प्रतिष्ठित व्यवसायी) 104A/360, रामबाग, कानपुर-208012(उ.प्र.) M.-9839027212, 9657129022 Email : aalekhjaiwswal@yahoo.com
पुत्र-आलेख (आंशिक मागलिक) एकलौता पुत्र, 23-06-1990, 5'8" गेहुआ आकर्षक एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व प्रशिक्षित B.Tech, Business हेतु प्रोफेशनली क्वालिफाइड या टीचर कन्या को वरीयता।

12. **अभिभावक**–श्री विनोद गुप्ता, F-111-A, Sector-11 प्रताप विहार, विजय नगर, गाजियाबाद-201009, 9910922437, 8744817069
पुत्री–सुजाता (**आंशिक मांगलिक** की छाया 28 वर्ष की आयु में समाप्त हो गई) जन्म–15-7-1990, (12.02 AM नूरपुर बलिया) 5'3', गेहुआ BBA, Pursuing MBA, नोएडा एक्सपोर्ट कं. में Accountant (पैकेज 2.50 लाख), साफ रंग।

13. **Father-** Prabhat Govt. Servant, Address 35A, Pocket B, DDA Flats MIG, Dilshad Garden, Delhi Phone 9213494606
Daughter : Dr. Pooja Jaiswal, DOB 01/08/1994, Time 12.05 PM (Place Vivek Vihar, Delhi) Hight-167 cm 5'5" Qualification MBBS Selected as Assistant Commandant Medical Officer in Paramilitary Forces. Currently Junior Resident in Rajeev Gandhi Super Speciality Hospital, New Delhi, Salary 1 Lakh (Approx), **Manglik Very Less**

14. **अभिभावक**–श्री राजेन्द्र जायसवाल, 3098 व्यंकटेश विहार, एयरपोर्ट रोड, इंदौर फोन न.–9617010844, 8982899771
पुत्री–साक्षी जायसवाल (मांगलिक) जन्म–4-2-1993, (4.25 PM, इंदौर) 5'2', B.E (Mechanical), L and T, बडोदरा (गुजरात) में कार्यरत पैकेज 7.5 लाख, स्मार्ट आकर्षक व्यक्तित्व।

15. **अभिभावक** : श्रीमती तनु जायसवाल (व्यवसाय), 276 ग्राउंड फ्लोर-HIG Flat No. 3, Plot No. 276, ज्ञानदर्शन सोसायटी ज्ञानखंड-I, इंदिरापुरम गाजियाबाद-201014, (M) 9971445325, 9989109200, Email : rhljaiswal 26@gmail.com.
पुत्र : राहुल जायसवाल (मांगलिक), 26-12-1993, (Delhi, 9AM), 6', बी.कॉम, Manager, Just Dial, पैकेज 5 लाख रुपये।

सामान्य वर्ग

1. **अभिभावकः श्री अरुण कुमार गुप्ता**, H.No. 893 वृंदावन कालोनी वार्ड नं. 12, चंधासी P.O. Chandhasi, मुगल सराय, जि. चंदौली (उ.प्र.)-232101 M : 9450181498
पुत्री- मीनाक्षी, 5'1" सुन्दर, आकर्षक डिप्लोमा (CS), B.Tech. (CS from Meerut), 20-04-1993, (09.12(AM) Patna, colour fair

2. **अभिभावक** : अशोक कुमार जायसवाल (PCS Retd.), वर्तमान में सदस्य किशोर न्याय बोर्ड, बरेली। 35/U/6 सिविल लाइन्स, रामपुर गार्डन, बरेली (उ.प्र.)-243001, M : 91-9837177302, 91-8218757163, 91-9411699419
पुत्र : शुभांग जायसवाल, 5'8" जन्म 1-2-1987, बी.टेक (आई.टी.), वर्तमान, Post Graduation program in Business analytics for Executives from Indian Institute of Management Lucknow (I.I.M. LKO), Accolit India Software Pvt. Ltd., Delhi, में कार्यरत, **आय-16.5 लाख रु0।**

3. **अभिभावक** : श्री अरुण कुमार चौधरी, कोशी एक्सरे क्लिनिक, एम.जी.मार्ग., खगड़िया विहार-851204 M : 9431417963
पुत्री : श्वेता कुमारी, 5'5" जन्म 9-9-1988, (समस्तीपुर) B.C.A, गोरी स्लिम, PNB रायपुर में Probationary Officer.

4. **अभिभावक**- अशोक कुमार साई, **पताः** साईसवाल (बैंक कर्मचारी) RZ-6 मानसकुंज, उत्तम नगर नई दिल्ली, M.-8860281021, 9268075028
पुत्री- अभिलाषा, 5'7" 4-12-1986 (गुरगाँव) रंग साफ, B.Com. from Delhi, MBA from Rohtak, service in Banking.
पुत्री- नुपूर (मांगलिक), 5'4" 11-10-1991 (5:00 PM Delhi) compexion very fiar, M.A. in Art and craft accupation : Teacher

6. **अभिभावक**- डॉ. अनंत प्रसाद चौधरी, राजीव नगर, पटना M.-7543055511, 9430059993 Email, drkumkudtu@gmail.com
पुत्र- डॉ. कौस्तुव, 32 वर्ष MBBS, (General surgery) FMAS (with), FMIS (AIIMS) पैकेज 6 अंकों में 172 cm स्मार्ट, सुन्दर आकर्षक, स्वस्थ युवक।

7. **अभिभावक**- अरविन्द कुमार चौधरी (General Manager) M.-9953096808
पुत्र- ईशान कुमार चौधरी, 5'8" जन्म 9-10-1987, साफ रंग स्मार्ट, पैकेज 10 लाख, Chartered Accountant (FCAI), B.Com. (Hons.), Asstt. Manager (Tax & Audit)

8. **अभिभावक** : श्री अनिल कुमार जायसवाल, नन्दगंज मार्कट, नंदगंज, जिला-गाजीपुर (उ.प्र.) पिन-233302 M : 9453484040, 8303517704
पुत्र : शरद कुमार जायसवाल, B.A, MA (Economics), M.Ed, Net, UPTET, CTET, CCC, 6'2" जन्म 27-11-1988 (8:40 PM), Revenue sub inspector (उ. प्र. सरकार)
पुत्री : जया जायसवाल, 28 वर्ष, 5'2" साफ रंग. सुंदर, MA, MEd, Net, TET, CTET, बस्ती (उ.प्र.) में Village Development Officer.

9. **अभिभावक** : श्री अनिल कु. जायसवाल 160, अनूप नगर रोठा रोड, मेरठ-250001 (उ.प्र.) M : 9219613863
पुत्र : अंकित जायसवाल, 4-11-1993 (9.25 PM मेरठ, 5'6", गेहुँआ, B. Com., ट्रांसपोर्ट व्यवसाय, वार्षिक आय 4 लाख स्मार्ट व्यक्तित्व।

10. **अभिभावक :** श्री ओमप्रकाश जायसवाल (चावल के थोक व्यवसायी) D-II, 397-398, पहली मंजिल, Sector-7 रोहिणी, दिल्ली-110085 M : 9899424368, 8178845541
पुत्र : सुधीर कुमार जायसवाल, 22-2-1988 (7.42 AM सिलीगुड़ी, प. बंगाल), 5'7", IDI MIA, नोएडा में Sr. Software Enginner, B.Tech, साफ, स्मार्ट व्यक्तित्व, Email : Sudhirjustme@gmail.com.

11. **अभिभावक–**श्री अनिल कुमार जायसवाल, (Retd. Supdt. Archeological Survey of India)–74/22, Shipra Path, Mansarovar, Jaipur फोन न.–0759792110, 09929660874
पुत्र–आकाश जायसवाल, जन्मतिथि–5-11-1988, (4.35 AM देहरादून) 5'10', M.Com, MBA (IBS) Credit manager, Barclays Bank) पैकेज 17.5 लाख, शिक्षित परिवार, स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

12. **अभिभावक–**अखिलेश जायसवाल, जायसवाल फार्मा 171ए, ठेठरी बाजार चौक, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश, फोन न.–9532252230, 9911515253
पुत्री–सुष्मिता जायसवाल, जन्मतिथि–11-11-1992, (सुल्तानपुर) 5'3', fair, M.Tech (E.C.) Gold Medalist, Ph.D Ist Year M.N.N.IT. Allahabad U.P.

13. **अभिभावक–**अनिल कुमार जायसवाल, E-108, VDA कालोनी, वाराणसी (उप्र.), फोन न.–9450536625, 8318298828
पुत्री–मोनिका जायसवाल, जन्मतिथि–27-8-1992, 5'4', गेहुआ, B.Tech, नोएडा में Account कार्यरत।

B13. **अभिभावकः श्री बिंदु चौधरी,** म.न. 276, सोनिया गांधी कैंप, समलका रंगपुरी नई दिल्ली-110037, M : 7838462147
पुत्री- पूजा, 5'3" 7-12-1996 (सीतामढ़ी) 12वीं पास, खजान इंस्ट्रीट्यूट से BC उत्तीर्ण की साफ गेहुआ रंग, स्मार्ट आकर्षक।

14. **अभिभावक :** स्व. श्री बिहारी लाल जायसवाल दिल्ली दरवाजे बाहर,दारू गोदाम के पास, कोठिया पावी मोहल्ला, अलवर (राजस्थान) M : 7014453944, 9667152823, 9309232213 **पुत्र (1) :** टिंकू, 10-12-1994, 12th, ITI, self Business. **पुत्र (2) :** पिंकू 6-6-1996, Diploma in mechanical, self business.

15. **अभिभावकः** भोलानाथ जायसवाल-सरकारी नौकरी, गोत्र- कश्यप, पताः एफ-83,कुंवर सिंह नगर, नागलोई, दिल्ली-110041, फोन नं. 09968936545
पुत्री- सुमन, जन्मतिथि-01-06-1993, साफ रंग, 5 फिट 4 इंच, शिक्षा-बी.काम., जे.बी.टी.(टीचर ट्रेनिंग कोर्स), कार्यरत कम्प्युटर आपरेटर, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, प्रतिमाह वेतन-15000/ रू0

16. **अभिभावक-** बबन प्रसाद, हनुमान नगर, पटना (बिहार)-20 M.-9835871038, 9334827500
पुत्र- विकास कुमार, 5'8" 32 वर्ष Compaxion, prefrance Govt. Officer deployed in UP

18. **अभिभावक-** भगवान सिंह जायसवाल (बिजनेस मेन) M.-9810103658, 8826371371
पुत्र- निशान्त जायसवाल, 5'7" 28-1-1990 (00:4am Delhi) wheatish brown, Qualification B.Tech E and C from BBDIT Ghaziabad, Sr. Accountant (Ministry of Agriculture, Govt of India)

17. **अभिभावक : श्री बाल रवि प्रकाश गुप्ता** (वायु सेना से Jr. Warrant Officer के पद से सेवानिवृत), फ्लैट नं. 313 Sanvi Sankalpam NAGONDANHALLI, White field, बंगलौर-560066 (कर्नाटक) M. 9482593364 (Whatsapp No. 9453621296)
पुत्री- विभा गुप्ता, D.O.B- 20-05-1993 (21.43 Hrs देहरादून) 5'4", सुंदर, B.E., बंगलौर स्थित HARMAN INTERNATIONAL प्रा.लि. में Sr. Software Engr. स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

18. **अभिभावक :** श्री सी.पी. गुप्ता (Sr. Advocate), 193, कल्पना नगर, सिविल लाइन्स, इटावा-20600। प्रतिष्ठित परिवार (M) 9410485758, 7417715565
पुत्री : डॉ. निधि गुप्ता, जन्म-24-01-1980, (16.20 P.M. इटावा उ.प्र.), MBBS, DOMS, (GRMC ग्वालियर), Pursing MD in Microbiology (BHU), 5 फुट 1 इंच, स्लिम, सुन्दर, गौरवर्ण, आकर्षक, स्मार्ट व्यक्तित्व। पेंटिंग पठन-पाठन, पाक-कला एवं गृह-सज्जा का शौक। चार वर्ष तक Rural PGI, सैफई इटावा के नेत्र विभाग में Sr. Resident, परिवार में अन्य सदस्य सिविल जज अथवा मेडिकल व्यवसाय में संलग्न।

19. **अभिभावकः श्रीमती चंद्रकांता,** 5 जॉली कॉम्प्लेक्स अभियन्ता नगर, नाशिक (महाराष्ट्र)-422008 M. 9871262622, 8983574660
पुत्र- गौरव, 29-04-1982 (04: 16P.M. दिल्ली), 5'8", B.C.A. Deals in Finance and Share Market, Rs 30,000/-P.M. शिक्षक, बड़ी बहिन कनाडा निवासी।

20. **अभिभावक–**श्री देवेन्द्र जायसवाल, पता–D-219 आनंद विहार, दिल्ली-110092, फोन न.–9212725140, 9555541050
भतीजी–मेघा जायसवाल, जन्मतिथि–16-12-1984, 5'2", MA (ECO), B.Ed, Pursuing Ph.D. स्मार्ट fair, Hobbies : Reading, teaching.

21. **अभिभावक**-श्री फुलेन्द्र चौधरी, सम्पर्क डॉ. सत्यदेव गुप्ता जायसवाल L-1/56, श्री कृष्ण पुरी, बोरिंग रोड, पटना-800001 (बिहार) M-9308741023
पुत्री-प्रियंका चौधरी, B.A., 5'6" 4-9-1988 अति सुन्दर गोरी, स्लिम, दिल्ली पब्लिक स्कूल में टीचर, पति की अल्प बीमारी के कारण मृत्यु दो पुत्र क्रमशः 9-10 वर्ष बच्चों को नाना-नानी रखने को तैयार, योग्य संस्कारी वर अपेक्षित विधुर भी मान्य।

22. **Father's-** Shri G.L. Chouksey, Retd. From Forest dept., M.P. Govt., Bhopal, 43 Prakash Nagar, Ayodhya Bypass road, Piplani, Bhopal-462022 Ph. 7987142364, 9981770414.
Daughter : MEENAL CHOUKSEY, 09-06-1985 (Time 00.10), Prakash Nagar, Bhopal, M.P., Height-

5'.3", Fair, B.Sc., MBA (Finance), PGDCA, Manager, F.C.I. (Govt. of India), West Zone, M.P. Region, 10 Lakhs P.A.

23. **अभिभावक-** गंगा राम जायसवाल, **पता:** Station Road, Purani Basti, Near purani Thana Basti, District Basti (UP)-272002 M.-9044015597, 8604262492
पुत्र- विशाल जायसवाल, 5'7" 15-1-1987 Qualification B.A. profession; SBI Life Insurance Advisior + SBI ATM Guard, Income 2.5 Lac.

24. Father- Late Gopal ji Jaiswal, Mother Kamla Jaiswal, 334, Salikganj Ki Mandi, Muthiganj, M. 8957292339, 8851658998
Daughter : Ritika Jaiswal, DOB 18/11/1991, Hight-5'3" Post Graduation (M.A.)

25. Fathers: Girvar Singh Rai- (Railway Contractor) In front of Jamuna bai Temple, 70 Colonypura, Ghasmandi, Gwalior (M.P.) 474003; Mob. 9329092587
Daughter: Neha Rai, DOB: 27.01.1995 (5:00 AM) Place of Birth: Ashok Nagar, Madhya Pradesh, Complexion: Fair Height: 5'7"
Qualification: LL.B, B.A. Programme 12 th Standard (M.P. Board) Faculty of Law (University of Delhi) Lady Shri Ram College for Women (University of Delhi)

25A. **अभिभावक :** श्री हरि प्रकाश जायसवाल म.न. 1292/28 फ्रेन्डस कॉलोनी, सिद्धेश्वर मंदिर के पास, झांसी (उ.प्र.) -282001 M : 07460000268, 09839419372
पुत्र : विकास जायसवाल, 29 वर्ष, कद 5'8" . B.Arch. Master in Architecture (N.I.T. Bhopal) राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत **आय 1 लाख- रु. प्रतिमाह।**

26. **अभिभावक-** श्री हरीलाल गुप्ता (व्यवसायी) A-416, शास्त्री नगर, दिल्ली-110052 M.-9810129465, Email : spacocable@yahoo.co.in
पुत्री- ज्योति, 5'3" 3-08-1990 (06.35 PM Delhi) सुन्दर C.A., B.Com (Hons.) D.U. Asstt. Manager (A/CS), Jubliant Consumer

I27. **अभिभावक :** श्री इंदकुमार जायसवाल (B.Tech, MBA)] Asian Paints Ltd, Mumbai में वरिष्ठ पद पर कार्यरत 402 धनशिला अहिंसा मार्ग, खार (पश्चिम) मुंबई-400-052 M. 09820215011/09820194569 (मूल निवास-इलाहाबाद)
पुत्री : स्मृति, 8-9-1985 B.M.S. (Bachelor of Management Science), M.Com, CFA (Leve l I & II), MBA (from Mumbai), 5'2", स्लिम सुंदर आकर्षक मुंबई स्थित बैंक ऑफ अमेरिका में कार्यरत, अच्छा वेतन।

J28. **अभिभावक :** श्री जवाहर लाल जायसवाल IP/B, Ist floor, हुमायूंपुर, S.J. Enclave, New Delhi-110029, M : 09650508397
पुत्र : राहुल कुमार, MBA, Advertising & Travel Co. में कार्यरत 26 वर्ष, स्वस्थ, गोरा, आकर्षक, स्वयं का फ्लैट, अच्छी आय।

K29. **अभिभावक-** श्री कृष्णा प्रसाद एवं सविता चौधरी, F124, पॉडव नगर गली न० 6, दिल्ली- 110092, मो० 919560444808 (सुलतानगंज (बिहार) के रहने वाले हैं।)
पुत्री (1) निक्की, उम्र 31 वर्ष, उजली गोरी 5'10" कम्प्यूटर ग्राफिक्स में कैरियर, बी.ए (अर्थशास्त्र) प्राइवेट कंपनी दिल्ली में नौकरी, पाक कला में प्रवीण।
(2) सोनी, उम्र 28 वर्ष, सुन्दर, गोरी 5'5" कम्प्यूटर ग्राफिक्स की जानकारी। बी.ए. (अर्थशास्त्र) दिल्ली में प्राइवेट नौकरी।

30. **अभिभावक-** काशी प्रसाद जायसवाल, **पता:** D35/334, जगाम्बरी, वाराणसी-221001 M.-9415369550, 0542-2451627
पुत्री- शिखा जायसवाल, 5'2" 12-2-1988, fair, PHD (Pursing) Textile Design B.H.U. Varanasi.

31. **अभिभावक :** लक्ष्मण सिंह बेनीवाल, शिक्षा विभाग में कार्यरत, 6/231, NEB Exension, Preet Vihar Transport nagar, Alwar (Rajasthan)-301001, M : 8766022928, 9351653004. 8890593175
पुत्री : निशा रानी, MA (Political science and English and B.Ed) 5'3" जन्म 5-7-1990 (11:15 AM) अलवर, गोरा, प्राइवेट स्कूल में कार्यरत।

34. **अभिभावक :** श्री मनोज कुमार जायसवाल, B-33, विमला टावर, न्यू पुनाई चाक (नजदीक राजवंशी नगर SBI, बेली रोड, पटना-800023 Ph : 09472021184, 9570365020, 9868721763
भांजी : Simpee Jaiswal, DOB 4th September, 1991 (11:55 A.M. Forbesganj, Bihar) Height : 5'.4'' Complexion : Wheatish, ICMAI (CMA), Profession Banker (Credit Officer in Bank of Baroda)

35. **अभिभावक :** श्रीमती माला जायसवाल 214/184-A, नई बस्ती, बाराखम्बा, कीडगंज, इलाहाबाद (उ.प्र.), (M) 8174867157
पुत्री : सौम्या जायसवाल, M.Sc. (Biochemistry) M.Ed, 12-7-1990 इलाहाबाद (3.20A.M.), 5'3", प्रतापगढ़ (उ.प्र. सरकार), अपर प्राइमरी स्कूल में शिक्षिका, पैकेज 5 लाख रुपये सुंदर, आकर्षक, स्मार्ट।

36. **अभिभावक-** मुकेश कुमार जायसवाल, स्टेट बैंक वाली गली, मकान नं. 1597, कच्ची मंडी कोसी कलामथुरा-281403 M.-8533800619, 7906018745
पुत्र- रोहित जायसवाल, 6'1" 27-5-1988 (8:25 PM Kosikalan) B.A. Rajasthan University Exam by D.G.C.A. (all cleared) CPL and PPL, Licence Business Lazy Mozo Back Peeker Foreigners Guest House at Civil Line Jaipur (Rajasthan)

37. **अभिभावक : श्रीमती मीना देवी जायसवाल,** D. 14/88, टेढ़ी नीम, दशाश्वमेघ, वाराणसी (उ.प्र.) M 9935470506
पुत्र- सूरज कुमार जायसवाल 15-07-1989 (6.20 P.M. वाराणसी) 5' 5", स्मार्ट, आकर्षक ग्रेज्युएट, B.H.U में Music Teacher तथा सितार और तबला आदि वाद्य उपकरणों के व्यापारी, स्वयं का मकान।

38. **अभिभावक**–श्री मोहनीश जायसवाल, (व्यवसायी), फोन न. –9654778803
भाई–श्री प्रशान्त जायसवाल, 26-6-1990, (10.33 AM) 5'7', B.Com, spectacle frames wholeseller, स्मार्ट, पैकेज 1 लाख प्रति माह।

N39. **अभिभावक** : श्री नारायण सोमवंशी, सरकारी विभाग में कार्यरत, जयपुर रोड, उमरैण, जिला अलवर राजस्थान-301001, M : 9887607300, 9694178713, 7734936915
पुत्र : राहुल सोमवंशी, BBA and MBA 5'6" 27 वर्ष Samsung में samsung express consuitant के पद पर कार्यरत है। पैकेज 3.5 LPA.

40. **अभिभावक**–नीरव जायसवाल (एडवोकेट) गुडगांव हरियाणा फोन न.–9810891524
पुत्री–तृप्ति जायसवाल, जन्मतिथि–22-10-1991, 8:10 रात्रि दिल्ली 5', fair, PHD (psychology) from punjab university Chandigarh, UGC NET qualified.

41. **अभिभावक** : डॉ. ओंकार नाथ जायसवाल, दिलदार नगर बाजार, गाजीपुर, उ.प्र.-232326, M- 9506793062
पुत्री : प्रिया जायसवाल, 25-6-1988, (M.A. & ITI computer application), 5', गोरी

42. **अभिभावक** : श्री ओम प्रकाश चौकसे (किसान) एवं श्रीमती आभा चौकसे, करेली, नरसिंहपुर (म.प्र.) M : 9826611582
पुत्री : वसुन्धरा चौकसे, 17.8.1988ए (करेली म.प्र. 6.03 AM) 5'7", B.E. (IT) from LNCT Bhopal. Rank Asstt. इंडियन कोस्ट गार्ड में Commandant, Air station चेन्नई में Logistics office के पद पर तैनात 3-5 वर्ष की service seriority.

43. **अभिभावक** : श्री ओम प्रकाश जायसवाल Prop. Navjoyti Enterprises, ब्लॉक UP, प्लाट नं. 55 प्रथम मंजिल पीतमपुरा, दिल्ली-110034, M : 9810562034 Email : rahul.regard@gmail.com.
पुत्र (1) : राहुल, 02-01-1989, (5.35,pm कोलकाता), 5'7" गौरवर्ण, स्मार्ट, MBA, स्वयं का व्यवसाय (Electrical Accessories)
पुत्र (2) : विनय, 26-05-1990, (4.17,pm दिल्ली) MCA, 5'8", MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज, गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।
पुत्री (1) : नमिता, 24-08-1992, (8.15,am कोलकात), 5'2", B.Tech (MDU University), MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।

44. **अभिभावक** : श्री प्रदीप कुमार जायसवाल (AAO, U.P. Govt), 4 निर्माण निगम कालोनी, तिकोना पार्क, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025, M : 9971143601
पुत्र : सिद्धार्थ जायसवाल, 5'10", जन्म 8-4-89, B.Tech (Electronics & Communication), नेटवर्क इंजीनियर HCL, ग्रेटर नोएडा, पैकेज 6 लाख रु., शुद्ध शाकाहारी, साफ, आकर्षक, स्मार्ट व्यक्तित्व।

45. **अभिभावक** : प्रदीप कुमार जायसवाल (Business man), मकान नं. 1076, Ward No. 3 कैनाल रोड, हर्वटपुर (देहरादून)-248142, M : 91-7017792611, 91-9412150835
पुत्री : कनिका जायसवाल, 5'2" जन्म 16-7-1990, M.Com, वर्तमान में Del. Ed. कर रही है तथा विद्यालय में पढ़ा भी रही है। तथा बैंक की तैयारी भी कर रही है। गोरी, इकहरा वदन, सुन्दर।

46. **अभिभावकः** प्रमोद कुमार (सुपुत्र डॉ. सत्यदेव गुप्ता) C/o L-1/56 श्री कृष्णपुरी बोरिंग रोड, पटना-800001 (बिहार) फोन 9430060645, 9308741023, 0612-2541587
पुत्री-मुदिता 15-3-89, 5'4" B.A. (Hons. Eng.) PGDM, सुंदर, गोरी, आत्मनिर्भर संस्कारी वर अपेक्षित।

47. **अभिभावक** : श्री प्यारे लाल जायसवाल, (व्यवसायी), 176, मूनगली, गार्डन, साहुकार लाइन, हलद्वानी (नैनीताल) उत्तर प्रदेश
पौत्र : आकाश कुमार, पारिवारिक कारोबार में सलग्न सुंदर, स्वस्थ, स्मार्ट, आकर्षक, 25 वर्ष, B.Tech, जन्म 15-8-1991, (02:42 pm हलद्वानी)।

48. **अभिभावक** : श्री पी.सी. जायसवाल, 23/47/111 महादेवी भवन, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश-211006 Mob. : 0532-2500624, 09415702805, Email: abhishekjaiswal128@gamil.com
पुत्र : अन्शुल जायसवाल 10-04-1987, 5'10" Fair, Slim, Handsome, कॉनवेन्ट एजुकेटेड, B.Tech (Electronics Communication) राष्ट्रीयकृत बैंक में असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत, Civil Services के लिए प्रयासरत।

49. **अभिभावकः प्रदीप कुमार जायसवाल**, नियर सागर आर्ट, P.O. Kharmanchak, Bhagalpur (Bihar) Pin-812001 फोन-8709162766, 8252924240
Email=rimajaiswal64@gmail.com
पुत्री- रीमा जायसवाल : 30-3-1991, 5'1", रंग- साफ, M.Com, (ACCT) Diploma in Computer Application. Banking. संगीत व पाकशास्त्र की रूचि।

R50. **अभिभावक** : श्री रामलखन जायसवाल (Redt. HAL) क्वा. नं. -13/8 एच.ए.एल. कॉलोनी, रामादेवी, कानपुर-208007 फोन : 09452525520
पुत्री : ऊषा, जन्म 31.5.1982, कद 5'2" गोरी, आकर्षक, स्मार्ट, गृह कार्य में निपुण, शिक्षा-बी.एस.सी., एम.सी.ए., सॉफ्टवेयर इंजीनियर (नोएडा में) पैकेज 5.89 लाख वार्षिक।

51. **अभिभावक** : श्री रमेश बाबू जायसवाल (Ex-Air India), गौत्र-सौगारा, सी-7/207, यमुना विहार, दिल्ली-110053 (M) 9818970975
पुत्री : शिल्पा जायसवाल 26-11-1995, (7.00 A.M. Delhi) 5'3", B.A. (History Hon.), Doing D.I.E.T. from Gwalior in 2nd year, सुंदर, आकर्षक, स्मार्ट।

52. **अभिभावक** : श्री राकेश जायसवाल (Own two renowned Hotels at Moga, Real Estate Business, and Rental Income), M : 9316273798, 9888043798
पुत्र : शुभम जायसवाल, B.A, LL.B, Preparing for Judicial, 5'8", 26-1-1991, (3.11PM, मोगा) गोरा, आकर्षक।

53. **अभि० –** श्री रजित राम गुप्ता, (Serving in National Institute of Immunology), 760, DDA FLATS, LADO SARAI New Delhi-110030 M 9899188680 (मूल निवासी: श्रावस्ती, उ. प्र.)

पुत्र– नरेन्द्र गुप्ता 10-10-1989 (4:30 A.M. दिल्ली) B. Tech (Instrumentation & control), Fujitsu Consulting India (नोएडा) में Technical Assit. के रूप में कार्यरत, पैकेज- 8 लाख रुपए 5'7", स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व। M- 9654172929.

54. **अभिभावकः श्री राजकुमार जायसवाल (व्यवसायी)** 230 Scheme No.-4 राजेन्द्र नगर अवलर-301001 फोन-9950006152, 7240705562

पुत्री- नेहा जायसवाल M.com and pursing B.Ed, 5'4", 14.2.1996, गोरवर्ण, DPS school, Alwar में शिक्षिका

55. **अभिभावक :** श्री रजनीश जायसवाल 124, शिवालिक कॉलोनी, अम्बाला सिटी, हरियाणा-134003, M : 9355702194

पुत्र : अंकुर जायसवाल, 12-02-1992, 5'7", (8.40 PM, अम्बाला) B.E. (Mech.), Scientific Asstt at Govt institute for plasma research, Gandhi Nagar (Gujrat), package 10 लाख वार्षिक।

56. **अभिभावक :** श्री राजेश कुमार, 56/L-I, कृष्णपुरी, साउथ बोरिंग रोड, पटना-800001, M-9234757531, 8521342371.

पुत्रीः मुदिता जायसवाल 15-3-89 5'4", Fair, B.A, PDGM, Comp. Sc., सम्पन्न परिवार अपेक्षित वर, बिहार पटना के समीप और सर्विस या व्यवसाय हो।

57. **अभिभावक :** श्री राजेन्द्र भरसकले PSU में कार्यरत 29/III ENG Enclave, GMS रोड, देहरादून-248001 Email : tvarita91@yahoo.co.in M-9410391647, 06000675049, 9410397116.

पुत्री (1) : Tvarita Bharsakle, Dob. 14-9-91 Time 12.15 pm, (Dehradun) 5'3", Fair M.S. (ENT) from Govt. Medical College, Kota MBBS (Bhubaneswar); MS/MD/Medico/IAS/IPS/IFS/IRS लड़के को वरीयता।

S58. **अभिभावक :** श्री सुरेन्द्र कुमार जायसवाल (Engineer), D-3, Rachna Vihar, Borkute Layout, Narendra Nagar, Nagpur-440015 (M) 09595483195, 09372718546,
Email : skjaiswal5@rediffmail.com

पुत्र : अनुराग जायसवाल, जन्म 28.2.1980, (5'9')] रंग-गेहुँआ, B.Com (Computer Application), Nagpur University, Working as Accountant with M/s GAMON India Ltd., Posted at Mumbai.

59. **अभिभावक :** श्री संतोष कुमार जायसवाल (प्रसिद्ध व्यवसायी) जायसवाल निवास, सोना बाबू का गैरेज, हाजींगंज, पटना सिटी पटना (बिहार) M : 8252518584, (0612)-2616236, Whatsapp : 9835298796

पुत्र : हितेष जायसवाल, 5'8", जन्म 19-9-1989 (पटना), LL.B., B.Com., NSSL लिमिटेड, नागपुर में Asstt. G.M. पैकेज 12 लाख रुपये; वर्तमान पता : 101F, Block 5, रिंग रोड त्रिमूर्ति नगर, नागपुर (महाराष्ट्र), सुंदर, अत्यंत स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

60. **अभिभावकः सुनील जायसवाल,** 221 नूनिया मोहल्ला (चाणक्यपुरी) सदर, मेरठ छावनी-250001(यू.पी.) फोन-7830988678

पुत्र- सौरभ जायसवाल 20-4-1983, (स्थान मेरठ) 5'1", रंग- गेहुंआ, शिक्षा-10वीं पास, व्यवसाय-पान मसाला, आय लगभग 20 हजार मासिक। अपना मकान।

61. **अभिभावकः श्री सुरेशचंद जायसवाल,** प्रो. रामचंद्र शिव रेवडभ अलवर, मकान नं. 710, आबकारी गोदाम के सामने, ईव्ज चौराहा, मेरठ शहर M. 9837426871, 9808114635

पुत्र- अनुज कुमार जा., (ऐडवोकेट) आयु 32 वर्ष, 5'8", B.Com., LL.B. मेरठ कोर्ट में वकालत कर रहे हैं।

62. **अभिभावक :** श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल (Iron & Steel Traders), 121/4V/1-B, MM Road. Kolkata-700 054. Mob. : 8013838215, 9903391132, Email : prashantjaiswal@107gmail.com

पुत्री : प्रियंका, 20-8-1991 (कोलकत्ता 8.45 AM) 5'4", गोरी, B.Com., CS।

पुत्र : विवेक, 5-12-1987 (कोलकत्ता 12.50 PM) 5'8", गोरा, B.Com., CA।

63. **अभिभावक-** राजकुमार वालिया, (Rd. JE) H.No. 473 Dalima Vihar, Rajpura, Dist. Patiala (Pb.)-140401 M.-9888027110

पुत्र- अमित कुमार वालिया, 5'7", 12-8-1975 (05:45am S Nabha Pb) Australia Citizen, Fiar Taxi operator, 40 lac package

64. **अभिभावक-** राज सिंह, Dilidar wazar Bahar Meenapadi, Tasigh house ke pass, Alwar (Raj.)-301001, M.-9667770001

पुत्र- हर्षराज, 5'7", 5-11-1993 (12:50pm Alwar), Income Rs. 18,000 per month.

65. **अभिभावक :** Late Sh. Rajeev Jaiswal, Businessman 257, K.k. Street, Chandani Chowk, Delhi–110006, (011)-23928089, 9990315956, 901519997

पुत्रीः Ankita Jaiswal, DOB 16th July, 1993 (Delhi At 5:20 A.m.) Height : 5'.4'' Complexion : Fair Personality : Smart With Pleasing Aim : Lecturer In DU
1. Pursuing B.Ed. (Final Year). 2. M.phil In Sanskrit 3. B.A. (Hons.) And M.A. Sanskrit (Hons.) From Daulat Ram College (DU).

67. **अभि० –** डा. एस.डी. घनेटवाल (जायसवाल), B-1/8 गांधी पथ चित्रकूट योजना वैशाली नगर जयपुर (राज.) -302021, M 09413900991, 0141-4020789

पुत्र – सिद्धार्थ घनेटवाल (जायसवाल) (15-2-1992 जयपुर, राजस्थान), B.Tech. com. Science Software Engineer in HPE Bangalore 6', अच्छा पैकेज बी.टेक. तथा कार्यरत कन्या अपेक्षित।

68. **अभिभावक–**श्री सुरेश कुमार जायसवाल (सरकारी सेवा) वार्ड नं. 4, लक्ष्मीबाई मार्ग, खाटी कुंडी चौक, खिलचीपुर जिला-रायगढ़ (म.प्र.) फोन न.–7879161099, 9669401914

पुत्री–आस्था जायसवाल, जन्म–6-12-1992, 26 वर्ष (19.55 खिलचीपुर) 5'6', M.Tech (IT), T.C.S. इंदौर में सेवारत पैकेज 5.6 लाख

69. **अभिभावक**–श्रीमती शोभा जायसवाल (धर्मपत्नी स्व. हरधन चन्द्र, काकोरोड बस स्टैंड के सामने, जहानाबाद (बिहार)-804408 फोन न.–8083241132, 7050318497
पुत्र–विकास राज, जन्मतिथि–4-4-1996, 5'2", ग्रेज्युएट।

70. Fathers: Sanjeet Kumar Jaiswal C/o Narain Traders, (Wholesale Business, ACC Cement Dealership) 461- Malviya Nagar, Near LBS Degree College chowraha, Gonda (U.P.)- 271001; Mob. 80528 75000
Son: Shashank Jaiswal, DOB 11 December, 1991, Birth Time: 11:05 A.M., Birth Place: Gonda, U.P., Height: 6 Ft., Education: Bachelor's in Engineering (ECE) from VIET, Ghaziabad: Master's in Engineering (ECE) from NIT, Jaipur.

71. **अभिभावक**– प्रोफेसर डा० टी० एन० चौधरी (रिटायर्ड प्रोफेसर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट) जवाहर लाल रोड (चैम्बर ऑफ कामर्स के पास) सरैयांगंज, मुजफ्फरपुर (बिहार) 842001 मोबाइल नं०. 9835229883, (0621)-2246105
पुत्र– यशस्वी आलोक 38 वर्ष गोरा 5'7", MBA, MCA एवं M.Tech निदेशक कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड टेकनोलाजी। आय 15 लाख प्रतिवर्ष गोरी टेक ग्रेजुएट कन्या अपेक्षित।
पुत्री– डा० रजनी जायसवाल BHMS, MBA गोरी 5'2" HR Manager in MNC नई दिल्ली, 36 वर्ष, पैकेज 10 लाख।
नातिन– मुदिता जायसवाल (पटना निवासी) अत्यंत गोरी सुन्दर 5'5" बी.ए. (इंगलिश) एम.बी.ए. की छात्रा पिता रि० शिक्षक श्री प्रमोद कुमार निवासी L1/56 श्रीकृष्णापुरी, पटना-8001

73. **अभिभावक:** श्री उमेश जायसवाल 1872 हाउसिंग बोर्ड कालोनी सेक्टर-7 बहादुरगढ़, जिला झज्झर (हरियाणा)-1245707 Ph: 9034826911 मूल निवास गोरखपुर
पुत्री : रुचि जायसवाल, 12-7-1992, (07.17 AM) नांगलोई, दिल्ली 5'2", B.Tech (C.S), MNC में कार्यरत, गेहुंआ, स्मार्ट।

V74. **अभिभावक:** डा. विजय कुमार जायसवाल, D-16/272, रोहिणी, सेक्टर-7, दिल्ली 110086 (**स्थानीय सम्पर्क:** श्री जीतेन्द्र चौधरी (व्यवसाय) 1711-C, मुल्तानी मोहल्ला रानीबाग, दिल्ली-110034. M- 9811231162, 7428970007)
पुत्री: प्रियंका जायसवाल, जन्म 20-9-1989, (रात्रि 10 बजे) 5'2½", XII वीं पास, कम्पयूटर कोर्स, गृह कार्य दक्ष।

75. **अभिभावक-** श्री वीरेन्द्र प्रसाद, कृष्णा नगर, वार्ड-22, जिला-सहरसा, (बिहार), M.- 094306875493, 9871788770, Email : Smritkumari111@gmail.com
पुत्र- आशीष कुमार, 29 वर्ष, 5'11", MCA from Ignou, MNC में Sotware Engineer के पद पर कार्यरत, स्मार्ट, आकर्षक, प्रतिभाशाली व्यक्तित्व। A-20, शकरपुर, दिल्ली 110092, M : 09971516377 Email: ashish@gmail.com

76. **अभिभावक: वीरेन्द्र कुमार जायसवाल (बिजनेसमैन),** Sumrit Mandal Campus, Jail Road, Tikamanhji, Bhagalpur M.: 943121533, 8969255995
पुत्र- आदित्य जायसवाल, 27-5-1988, (5.15 pm) 5'2", milky white, MBA, Asst. Manager, Canara Bank.

77. **अभिभावक**–श्रीमती विभा देवी (पत्नी स्व. ध्रुव नारायण प्रसाद गुप्ता) फोन न.–7488196750, 9560290732, 9911515253 (श्री सुनील, मामाजी)
पुत्री–राधा, जन्मतिथि–17-2-1989, (वेतिया पश्चिम चम्पारण) 5'4', fair, B.Sc. (Hons) in Zology.

78. **अभिभावक**–श्री किशन लाल राय, फोन न.–925056773, 9990252526 Redt. from DDA, Sultan puri, Delhi
पुत्र–संदीप राय, जन्मतिथि–12-7-1990, (दिल्ली) 5'8", B.A. दिल्ली सिविल डिफेंस में जाब, 25,000/- मासिक स्मार्ट, साफ रंग।

79. **अभिभावक :** Om Praksah Jaiswal, A cropolis flat no. 206, J-block Gothapatna, Odisha. Pincode-751003; Mob : 7750982025; E-mail : ajoytce@gmail.com, ssuniti1286@gmail.com
पुत्री: Omrita Jaiswal : DOB : 26/10/1990, Time : 7:30 pm, place : Pallahara (Odisha) Height : 5'5", complexion : fair, Education : MSc agriculture (Agronomy) BSc agriculture, Professional details : Working in Odisha govt. in Horticulture department as a Gazetted rank officer posted near Bhubaneshwar.

81. **अभिभावक :** Chanderkanta 5, Jooly Complex Abhiyanta Nagar, Nashik (Maharastra)-422008, Mob : 9871262622, 8983574660
पुत्र: Gaurav, DOB : 29/4/1982, Time 4:16 PM Delhi, Height : 5'8", Qualification : BCA, professtion ; Deals in finance and share market, Income : Rs 30,000/-pm, Mother Teacher, Elder sister settled in Canada.

82. **अभिभावक :** Rakesh Prasad Jaiswal () (Retired from Air Force, Maternal Grand Parent - Rajendra Nagar, Patna, Bihar, Mobile No. 9818780624, 9910174532; Email ID - rakesh@basawatech.com
पुत्री: Sakshi Jaiswal: DOB - 18th Sep 1993, Qualification - MA in English, B. Ed, CTET (Part I & II) Cleared. Advanced Diploma in Italian Language. schooling from Air Force Bal Bharati School, Lodhi Road, New Delhi. BA English (Hons) from Delhi University, B. Ed from IP University, Advanced Diploma in Italian Language from Daulat Ram College, DU, MA in English.

83. **Father:** Santosh Jaiswal (Dy. Director, ECS), (Home Town Gorakhpur, U.P.) D-2/10, Phase-I DRDO Township, CV Raman Nagar, Banglore, Karnataka Mob- 9958014369, 9873341668
Son: Rishabh Jaiswal, DOB 16-10-1997, B. Tech. from (BHU) Varanasi, Software Development Salary Package - 12 Lacs /p.a

84. Father: Ramesh Chandra Jaiswal,Ganiyari Road, Waidhan, Distc-Singrauli (Mp) - 486886 Phone:- 9425389974 Mob- 9990372173, 7000086095

Daughter: Mansi Jaiswal, DOB 1-1-1994, 5ft 4-Inch, Complexion Fair, B. Tech. from IIT Allahabad, Working as Software Engineer in Microsoft. Salary Package - 18 Lacs /p.a

दिल्ली स्थित प्रसिद्ध NIFT (National Institute of Fashion Technology) से 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के माध्यम से Leather Fashion Technology में दक्षता प्राप्त 24 वर्षीय (13-2-1997) ग्रेज्युएट सुन्दर गौरववर्ण, सुशील सुयोग्य स्मार्ट कन्या के लिये प्रतिष्ठित परिवार के सुशिक्षित, सुस्थापित योग्य वर की आवश्यकता है। कृपया सम्पर्क करें: दिल्ली M-9013262811

Looking for a bride from reputed family for my son MBBS Doctor, DOB 25-09-94, Fair complexion, Height 5'11", attractive personality Employed with Delhi Govt., Jail Hospital in Delhi Contact No. 8527470610, 8447959639 Dr. Nikank Jaiswal (Brother) Rohini, Delhi

तलाक शुदा (Divorces'sr), विधवा (Widow)

1. **अभिभावक-** श्री आनन्द स्वरूप जायसवाल, 10/26, सेक्टर-3, राजेन्द्र नगर साहिबाबाद 201005 (गाजियाबाद) उ.प्र., M.-9871262622
   पुत्र- उत्तम कुमार, 35 वर्ष, **तलाकशुदा,** कोई संतान नहीं है, जन्म 23-07-1977 (मथुरा, 10.10 P.M)
2. **अभिभावक :** श्री श्यामसुंदर जायसवाल, ठाकुर विलेज, कांदिवली (East) Ph 400101
   पुत्र : Divorcee 38 वर्ष, 5'8" सुन्दर, स्लिम, स्मार्ट, आकर्षक, प्रतिभाशाली, कांवेंट प्रशिक्षित, B.Com, LL.B. व्यवसाय में सुस्थापित, **विवाह के बहुत थोड़े समय पश्चात ठोस कारणों से अलगाव हो गया।** सुन्दर, शिक्षित अच्छे परिवार की कन्या अपेक्षित। विवरण प्रेषित करें E-mail : vivah6@hotmail.com
3. **अभिभावक :** श्री राजकुमार वालिया (Retd. Enger), C/o अनुज कर्णवाल, लेन नं. 3, म. न. 45(3/45), सहस्रधारा रोड, एकांत विहार, देहरादून (उत्तराखंड)-248001 M-9888027110, 7055866901
   पुत्र : अमित कुमार, (NRI Divorce), 12-8-1975, (40 वर्ष), (नाभा- पंजाब 04:45AM) 5'7", आस्टेलियाई नागरिक, Fair टैक्सी आपरेटर का स्वयं का व्यवसाय। 40 लाख रुपये पकेज।
4. **अभिभावक-** सुरेश चन्द्र जायसवसाल, Jaiswal Insitutute of Classes RK गार्डन, रामपुर रोड, जहांरमल पेट्रोल पम्प के पीछे, हलद्वानी (नैनीताल) उतराखण्ड।
   पुत्र- नीरज कुमार (तलाकशुदा) 39 वर्ष, सुंदर, स्मार्ट, आकर्षक, शाकाहारी, व धार्मिक स्वभाव, निजी आवास, B.Com, M.Com, CA, CS, ICWA की कोचिंग क्लासेस, लगभग 10 वर्ष का पुत्र साथ में रहता है, M.- 9719738295
5. **अभिभावक :** स्व0 रमेश सिंह वर्मा, H.No. 12, आनंद गार्डन, राजेन्द्र पार्क पुलिस स्टेशन के पास, रेलवे स्टेशन के पास गुड़गांव-122001, M : 9136760393
   पुत्र : राकेश सिंह **(तलाकशुदा)**, 34 वर्ष, मैट्रिक पास, 5'5", स्वस्थ, गेहुआ रंग, अपना मकान, अपनी किराने की दुकान।
6. **अभिभावक-**श्री शिव चरण कुमार c/o जयभारत पाइप्स स्टोर, हनुमान रोड, शामली-247776 (उ.प्र.) मो. 09412867590
   पुत्री (तलाकशुदा)-गरिमा कर्णवाल, 12-9-82, (शामली, 4:10 pm) 5'5", B.SC, MCA, MNC, गुडगांव में कार्यरत।
8. **अभिभावक :** श्री अजय कुमार जायसवाल H.No. 485 मेसर्स आयुष फ्लोर मिल्स पोस्ट घोड़ासहन जिला पूर्वी चम्पारण (बिहार)-845303
   पुत्री : अर्पिता जायसवाल (तलाकशुदा), 32, वर्ष 5'5", रंग गोरा सुंदर सुशील ग्रेजुएट मानसिक तनाव के कारण संबंध विच्छेद सुंदर शिक्षित परिवार, संतान रहित वर अपेक्षित। Email: Subu4u87@gmail.com Whatsapp/Mob No. 9560356897
9. **अभिभावक :** श्री रामचन्द्र चौधरी, (Acctt, Hotel Midway), A-1/231, सेक्टर-4, रोहिणी, दिल्ली-110085, M-9211098672, Email : dchoudhary90@gmail.com
   पुत्री : ज्योति चौधरी **(तलाकशुदा)**, PGDFT, M.Com (Du), Adriel High School, Delhi में शिक्षिका, जन्म 12-1-1988, 5'4" वेतन 15000/- प्रतिमाह, अन्य शिक्षेतर गतिविधियों में सक्रिय भाग।
10. **अभिभावक: श्रीमती मीना जायसवाल,** (W/o स्व. राजेन्द्र जायसवाल) संस्कृति अपारर्टमेंट Upper Ground Floor, 4, Plot No. 225, Niti Khand-I, Indirapuram संस्कृति रेंजीडेंसी गाजियाबाद-201010 (यू.पी.) फोन-8448219160, 9415132661
    पुत्री- सुमन (तलाकशुदा) 27-08-1988 (वाराणसी, 3 AM), 29 वर्ष, 5'3", साफ रंग, एम.ए. (इग्लिश)।
11. **अभिभावक:** Sh. Y.P. Ahluwalia, 109 Nimri Colony Ashok Vihar Phase-IV Delhi-110052, M : 9868704809
    पुत्र- Aman Walia, (7th Ocober 1974,) Govt Service in M.C.D. as Astt Sanitary Inspector (Pure Vegitarian) **तलाकशुदा,** Height 5'8", fair, salary 50,000 + स्मार्ट।
12. **अभिभावक: श्रीमती सम्पूरन जायसवाल,** (W/o स्व. सुरेश कुमार जायसवाल) G-194-195, जहांगीर पुरी, दिल्ली-33 फोन-9873809288, 9684750486
    पुत्री- अंजू जा. (तलाकशुदा कोई बच्चा नहीं) 28-07-1979 (दिल्ली, 7 AM), 5'3", M.B.A., गेहूंआ रंग, प्राइवेट सर्विस 15,000/- मासिक।
13. **अभिभावक: रिटायर्ड इंजीनियर वेस्टर्न रेलवे, Pelican-15, Aakriti Eco city, Bhopal-462039 7666933311; sjaiswal69@yahoo.co.in**
    सुनील जायसवाल (तलाकशुदा), 23-7-1969, 6'1", complexion very fair, MBA (Finance) from Institute for Technology and Management, Mumbai, BE(CS) from Nagpur University. Annual Income 25 lacs to Rs. 30 lacks per annum.
14. एक तलाकशुदा, 45 वर्षीय दिल्ली में कार्यरत उच्चपदासीन प्रतिष्ठित परिवार के युवक (पैकेज 40 लाख) के लिए कम से कम ग्रेज्युएट, संतानहीन युवती की अपेक्षा है। फोटो व विवरण सहित सम्पर्क करें। M-9013262811, 7503237955

जायसवाल जागृति के पदाधिकारी (2019-2021)

श्री अशोक कुमार जायसवाल (अध्यक्ष): 9818581776, 8700343878
एडवोकेट श्री ब्रजेश कुमार (महासचिव) : (M) 9810528057
श्री माखन चौधरी (कोषाध्यक्ष) : (M) 9911213033, 9650998902
श्री शंकर चौधरी (सह-महासचिव 2019-2022): (M) 9868039033
श्री अवधेश कुमार साह (संगठन मंत्री) : (M) 9868338671

नीति-निर्धारण/प्रबंध-समिति

श्री पन्नालाल जायसवाल : 8882828808
श्री कृष्णदास चौधरी : 9868801751
श्री कैलाशनाथ गुप्त : (M) 8882019312
श्री नर्वदेश्वर प्रसाद जायसवाल : (M) 9582793033

उपाध्यक्ष

श्री शिव किशोर जायसवाल : 9818890990
श्री सुधीर कुमार मनहर : 9810007360
श्री छोटेलाल गुप्त : 9818334111

राहत-कोष

श्री मनोज शाह (अध्यक्ष) : 9891237738
श्री अनिल कुमार (सदस्य) : 9868105658
श्री कृष्ण कुमार भगत
श्री नरेन्द्र जायसवाल (कम्प्यूटरीकृत प्रेषण) : 9868819992

व्यवस्था एवं सहयोग

श्री बृजमोहन जायसवाल (प्रत्रिका सर्क्यूलेशन प्रभारी) 9868241044
श्री अजय कुमार जायसवाल (वेबसाइट) : (M) 9990372173
(M) 8700652590
श्री हरिशंकर जायसवाल (छायाकार) : (M) 9811131914
श्री शीतल प्रसाद जायसवाल (आम व्यवस्था) : (M) 7827621475
श्री आदित्यवर्धनम् (Facebook + संयोजक युवा मंच) : (M) 9818389050

वैवाहिकी-सम्पर्क व सहयोग

श्री नवीन प्रकाश जायसवाल : 8802372297

महत्त्वपूर्ण सूचना (1)
'जायसवाल जागृति' सदस्यता-शुल्क

सदस्यता शुल्क की संशोधित दरें इस प्रकार हैं:

संरक्षक सदस्य	: 11,000/- रु.	(परिचय रंगीन फोटो सहित)
अधिष्ठाता सदस्य	: 5,100/- रु.	(विस्तृत परिचय फोटो सहित)
सम्मानित सदस्य	: 2,500/-रु.	(संक्षिप्त परिचय फोटो सहित)
आजीवन सदस्य	: 1500/- रु.	(7 वर्ष के लिए)

विज्ञापन-दरें

आवरण (कवर) चौथा पृष्ठ	: 5,100/- रु.
आवरण (कवर) द्वितीय पृष्ठ (संरक्षक)	: 11,000/- रु.
आवरण (कवर) तृतीय पृष्ठ	: 3,000/- रु.
विशेष रंगीन पृष्ठ	: 2,500/- रु.
साधारण पृष्ठ	: 1,500/- रु.
साधारण आधा पृष्ठ	: 750/- रु.
साधारण चौथाई पृष्ठ	: 400/- रु.

ध्यानाकर्षण : वार्षिक सदस्यता पूर्णतः समाप्त हो गई है। सदस्यगण कृपया 1500/- रु. का शुल्क पत्र प्रेषित करके आजीवन सदस्य बन जाएं, अन्यथा उनकी सदस्यता स्वयमेव समाप्त हो गई है। नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य कर दिया गया हैं। ध्यान रखें। जिन सदस्यों को हमारे प्रामाणिक प्रयासों के बावजूद डाक से पत्रिका नहीं मिल पाती है, वे कृपया एक वर्ष का 200 रुपये का अग्रिम कोरियर-शुल्क प्रेषित करके कोरियर से पत्रिका मंगा सकते है। राशि हमारे कोषाध्यक्ष के निम्नलिखित पते पर प्रेषित की जा सकती है।

महत्वपूर्ण सूचना (2)
जायसवाल जागृति वेबसाइट

Jaiswal Jagriti Has Launched It's Own Website

कम्प्यूटर क्रान्ति एवं सूचना-विस्फोट Computer Revolution & Information Explosion के इस युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना किसी भी जीवन्त संस्था के लिए अवश्यम्भावी हो गया है। फलतः स्वजाति बंधुओं के लाभार्थ www.jaiswaljagriti.com नामक वेबसाइट का शुभारंभ किया गया है। हमारा Email; jaiswaljagrity@gmail.com है। आप इससे सम्बन्धित किसी भी जानकारी के लिए हमारे युवा मंच के सचिव, तथा वेबसाइट प्रबंधक श्री अजय कुमार जायसवाल *(Sr. Software Engineer)* से उनके Email:ajayjaiswal.india@gmail.com तथा मो. न. 9990372173 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं।

बन्धुवर, समाज के हर तबके के लोगों को अपने लड़के-लड़कियों के लिए योग्य सम्बन्धों के चयन में कुछ न कुछ कठिनाइयाँ तो अवश्य पेश आती हैं, चाहे उसका सामाजिक अथवा आर्थिक स्तर कुछ भी हो। अतः अब आपकी सुविधा के लिए आप हमारे वेबसाइट में आपके विवाह योग्य लड़के-लड़कियों का फोटो सहित विवरण प्रकाशित करा सकते हैं। इसके लिए फिलहाल मात्र 500 रु (पांच सौ रुपये) का शुल्क रखा गया है। आप शुल्क की यह राशि निम्नलिखित दो में से किसी भी एक पते पर डिमांड ड्राफ्ट / चेक या मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते है।

आप अपनी राशि हमारे **AXIS Bank** के **A/C no. 015010100247337, IFSC-UTIB-0000015** में भी सीधे जमा करा सकते हैं। किंतु इसकी रसीद अथवा इसकी फोटोप्रति हमारे पास निम्नलिखित में से किसी एक पते पर अवश्य भेंजें, अन्यथा यह पता लगाना मुश्किल होगा कि यह राशि किसने प्रेषित की है।

सम्पादकीय पत्र व्यवहार
कैलाश नाथ गुप्त
DIA/115-जनक पुरी, डी. (ब्लाक) नई दिल्ली-110058
फोन : M-8882019312, 36601664

माखन चौधरी
कोषाध्यक्ष, जायसवाल जागृति
C-54-B, रजत विहार, सेक्टर-62 नोएडा-201309
Email : makhanchaudhary@gmail.com
M-9650998902/9911213033

(5 रु. प्रति)